Sep. 2018

माहनामा पैग़ामे रसूल, इन्दौर की जानिब से
हुज़ूर ताजुश्शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह
की बारगाह में नज़रानए अक़ीदत

माहनामा

पैग़ामे रसूल

ताजुश्शरीआ नम्बर

इन्दौर

Rs. 50/-

चीफ़ एडीटर
मुहम्मद नूरुल हक़ नूरी

एडीटर
मुहम्मद अब्दुल अलीम रज़वी

मेनेजिंग एडीटर
शौकत हुसैन क़ादरी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
الصلوٰۃ والسلام علیک وعلیٰ اٰلک واصحابک یارسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

मज़हबे अहले सुन्नत मस्लके आला हज़रत का
दीनी, इल्मी व इस्लाही तर्जमान

माहनामा
पैग़ामे रसूल پیغامِ رسول
इन्दौर

ताजुश्शरीआ नम्बर

★ ब ज़िल्ले रूहानी : ताज्दारे अहले सुन्नत सैयिदी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमह ★

★ ब फ़ैज़े रूहानी : अहसनुल उलमा हज़रत सैयद मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ क़िब्ला अलैहिर्रहमह ★

★ ब यादगार : ताजुल फ़ुक़हा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रिज़वानुर्रहमान फ़ारूक़ी अलैहिर्रहमह ★

★ निगराँ : हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद हबी यार ख़ान साहेब क़िब्ला क़ादरी, मुफ़्तिये मालवा, इन्दौर ★

★ सरपरस्त : ख़लीफ़ए हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलहाज हाफ़िज़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहेब नूरी बा ।, इन्दौर ★

चीफ़ एडीटर
मौलाना मुहम्मद नूरुल हक़ नूरी

एडीटर
मौलाना डॉ. मुहम्मद अ. अलीम रज़वी

मेनेजिंग एडीटर
हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी

कम्पोज़िंग
रज़वी कम्प्यूटर एंड ग्राफ़िक्स

ऑप्रेटर
नज़ाफ़त हुसैन उर्फ़ सुहैल

मुसलसल इशाअत का 24 वाँ साल (पहला पैग़ाम)

सितम्बर 2018 मुताबिक़ ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ محرم الحرام
ज़िल हिज्ज /मुहर्रम 1439 हि.

फ़ी शुमारा	सालाना	ग़ैर म ।लिक से	लाइफ़ मेम्बर
20/-	200/-	1200/-	6000/-

इस शुमारे की क़ीमत 50/-

ख़तो किताबत व रक़म इस पते पर

माहनामा **पैग़ामे रसूल**
14/1, बज़रिया, बड़वाली चौकी मेनरोड, इन्दौर
फ़ोन : 0731-2453528, मोबा : 930 9219 4

बरकाती कुतुबख़ाना
14/1, बज़रिया, बड़वाली चौकी मेनरोड, इन्दौर
फ़ोन : 0731-2453528, मो.: 9827083720

786/92

अस्माए गिरामी रुफ़क़ाए इदारा (लाइफ़ मेम्बर हज़रात)

लाइफ़ मेम्बर फ़ीस 6000/- रूपये

- ❖ जनाब अलहाज मुहम्मद सिद्दीक़ ठेकेदार सा. क़ादरी रज़वी, बज़रिया, इन्दौर
- ❖ जनाब डॉ. ज़ाहिद नूरानी साहब क़ादरी रज़वी, मेजेस्टिक नगर, खजराना, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी सलीम सेठ नूर शुमार मेमन, 73, हारून कालोनी, खजराना, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी मक़सूद हुसैन साहब ग़ौरी, नन्दनवन कॉलोनी, इन्दौर
- ❖ जनाब मम्मू पटेल साहब (डायरेक्टर इस्हाक़ पटेल पब्लिक स्कूल), इन्दौर
- ❖ डॉ. (मिसेस) फ़ातिमा पटेल, डायरेक्टर सनशाईन हास्पीटल, पीपल चौक, खजराना, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी अहमद नूर साहब मुल्तानी, होटल नूर, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी मुहम्मद साबिर साहब (टेंकर वाले), श्याम नगर, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी अब्दुर्रशीद सा.(माँगीलाल पटेल), हाजी फ़ख़रु पटेल सा., खजराना, इन्दौर
- ❖ जनाब हाजी शरीफ़ पटेल, साहेबज़ादगान, हाजी इब्राहीम पटेल मरहूम
- ❖ बिस्मिल्लाह बाई मरहूमा, खजराना, इन्दौर
- ❖ जनाब डॉक्टर हाजी अबरार मुहम्मद ताई वल्द मरहूम हाजी नज़र मुहम्मद ताई, गाँधी नगर, इन्दौर
- ❖ जनाब हाफ़िज़ सलाहुद्दीन साहब क़ादरी, दारुल उलूम रज़ाए मुस्तफ़ा, सागौर ज़ि. धार (म.प्र.)
- ❖ जनाब डॉ. नारायण तिवारी, उज्जैन (म.प्र.)
- ❖ जनाब मुहम्मद सलीम लाइक (ख़्वाजा उस्मान हारूनी कमेटी), उदापुरा, इन्दौर व तमाम मददगार
- ❖ जनाब मो. सलीम पटेल बरकाती वल्द हाजी याक़ूब पटेल सा. (प्रदेश अध्यक्ष (म.प्र.) ईमान तंज़ीम)

सुन्नियों के दिल की धड़कन बन गया नामे रसूल
दिल मुअत्तर कर गया गुल्ज़ारे पैग़ामे रसूल

तजल्लियाते पैग़ामे रसूल

प्रिन्टर, पब्लिशर, प्रोप्राइटर और एडीटर हाफ़िज़ **शौकत हुसैन क़ादरी** ने
नबवी प्रिंटर्स, 108, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से प्रिन्ट कराके
ऑफ़िस माहनामा **पैग़ामे रसूल**, 14/1, बज़रिया, बड़वाली चौकी मेनरोड, इन्दौर से प्रकाशित किया

इदारिया

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और इन्दौर का आख़री सफ़र

मोहम्मद नूरुल हक़ नूरी

मरकज़े अहले सुन्नत बरैली शरीफ़ से इन्दौर का बड़ा गेहरा तअल्लुक़ रहा है सरकार हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द इन्दौर को अपना वतने सानी समझते थे, बड़ी महब्बत फ़रमाते थे । हरमैन शरीफ़ैन से वापसी पर बरैली शरीफ़ से पहले सरकार का इन्दौर तशरीफ़ लाना और अपने शरबते दी ार से लोगों को मुशर्रफ़ करना इसका खुला सुबूत है । जब कि मुम्बई में सैकड़ों अक़ीदत मन्द अपने अपने घर ले जाने के लिये कोशां थे। हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द ने अहले इन्दौर को ख़ूब नवाज़ा इन्दौर में दारुल उलूम नूरी के क़याम का हुक्म दिया, संगे बरकत रखा और बुख़ारी शरीफ़ का पहला दर्स देकर इसका इफ़्ति ाह फ़रमाया।

दारुल उलूम नूरी से सरकार मुफ़्तिये आज़मे हिन्द को इतना लगाव था इसका अन्दाज़ा इस ` लगाया जा सकता है कि अपने चहीते मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत नूरी बा ा व दीगर अहले सुन्नत की ख़्वाहिश का अपने नवासे और जा नशीन ताजुश्शरीआ हुज़ूर अज़हरी मियाँ को दारुल उलूम नूरी भेजने के लिये आमादा हो गए लेकिन मख़दूमए अहले सुन्नत हज़रत पीरानी अम्मा साहिबा ने बाहर भेजने की इजा. त न दी जिस ` यह ख़्वाब शर्मिन्दए ताबीर न हो सका

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द क़द्दसा सिर्रहू जब भी इन्दौर तशरीफ़ लाते हुज़ूर ताजुश्शरीआ अकसर सरकार के साथ होते। सरकार मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के विसाल के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा । हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने अहले इन्दौर को फ़रामोश नहीं किया अहले इन्दौर ने जब भी बारगाहे आली में अरीज़ा पेश किया तो सरकार ने करम फ़रमा कर अपने क़दमे य मनते लुज़ूम से अहले इन्दौर को नवाज़ा। आँखों में जब तकलीफ़ हुई और डाक्टरों ने ऑप्रेशन का मशवरा दिया तो ताजुश्शरीआ ने इन्दौर का इन्तिख़ाब फ़रमाया। इस मौक़े पर काफ़ी दिनों तक इन्दौर में क़याम रहा और अहले इन्दौर को फ़ैज़ियाब होने का शरफ़ हासिल हुआ।

डाक्टर हार्डिया इन्दौर का मशहूरो मारूफ़ डाक्टर है कई स्टे से लोग इनसे इलाज के लिये आते हैं हज़ारों रुपये सर्फ़ करके आप्रेशन कराते हैं इनकी फ़ीस भी ज़्यादा है। रोज़ाना आप्रेशन कराने वालों की भीड़ रहती है कई महीने पहले बुक कराने के बाद नम्बर आता है मगर हुज़ूर ताजुश्शरीआ का मुआमला यह ँ कि जब ऑप्रेशन के लिये आपको अन्दर ले जाया गया और डॉक्टर क़रीब आया तो आपके पुर नूर चेहरे की ज़ियारत करता रहा। वह डॉक्टर जो हज़ारों ऑप्रेशन कर चुका है उसके हाथ कांप गए।

ऑप्रेशन के बाद ख़लीफ़ए हुज़ूर मुफ़्तिये

आज़मे हिन्द हज़रत नूरी बाबा साहेब ने जब डाक्टर से पूछा कि ऑफ़िस वालों ने यह रसीद दी है आपको क्या दिया जाए। तो उसका जवाब था कि उनसे मैं फ़ीस लूँगा मेरी ख़ुश क़िस्मती है कि उन्होंने मुझे ख़िदमत का मौक़ा दिया बस उनकी दुआ चाहिये।

आख़री अय्याम में अलालत की वजह से हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने सफ़र करना कम कर दिया था मगर गुलामाने ताजुश्शरीआ, हुज़ूर ताजुश्शरीआ को इन्दौर बुलाने की बराबर कोशिश में लगे रहे मगर कोई सूरत नज़र नहीं आती। हज़रत मुफ़्तिये मालवा क़िब्ला ने जब शरई कोंसिल ऑफ़ इन्डिया के ग्यारहवें सीमिनार के लिये दावत दी और उसके लिये मुफ़्ती रफ़ीक़ आलम साहेब को मुक़र्रर किया तो बड़ी कोशिशों के बाद सरकार ने क़बूल फ़रमा लिया तो अहले इन्दौर की ख़ुशियों की इन्तिहा न रही, वह अपनी क़िस्मत पर नाज़ कर रहे थे कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने सीमिनार की इजाज़त मरहमत फ़रमा कर मरकज़े अहले सुन्नत दारुल उलूम नूरी का बरैली शरीफ़ से जो गेहरा रिश्ता है उसे मज़ीद उस्तवार फ़रमाकर हमें सुर्ख़रुई का मौक़ा अता फ़रमाया है और मदारिसे अहले सुन्नत में दारुल उलूम नूरी को एक इम्तियाज़ी शान बख़्शी है उन्हें इस बात की भी ख़ुशी थी कि दीदारे ताजुश्शरीआ का एक और ज़र्रीं मौक़ा हाथ आया अब की बार तन्हा नहीं उलमा, फ़ुक़हा, मशाइख़ की बारात लेकर आएंगे, एक दिन के लिये नहीं तीन दिन के लिये तशरीफ़ लाएंगे, पूरे मालवा में ख़ुशियों की लहर दौड़ गई हर तरफ़ उन्हीं का चर्चा था, जूं जूं वक़्त क़रीब आ रहा था लोगों में हलचल बढ़ रही थी, तीन दिन से पूरे शहर में लाउड स्पीकर और अख़बारात के ज़रीए आपकी आमद का ऐलान हो रहा था। जब वह मुबारक साअत आई एयरपोर्ट के पूरे इलाक़े में दीवानों की भीड़ नज़र आ रही थी, पल पल की ख़बर अवामे अहले सुन्नत को पहुँचाई जा रही थी, फ़ख़रे अज़हर एयरपोर्ट के लिये रवाना हो गए, अब प्लेन में बैठ गए, फ़ख़रे अज़हर परवाज़ फ़रमा रहे हैं, फ़ख़रे अज़हर इन्दौर एयरपोर्ट पर अब उतरने वाले हैं। वह देखो रज़वी दुल्हा नज़र आ रहे हैं हर तरफ़ शौर है रज़वी दुल्हा आ गए रज़वी दुल्हा आ गए। नारों की झंकार है, दुल्हे की सवारी आगे बढ़ती है पीछे पीछे कारों का जुलूस, आगे आगे बाइक सवार नज़र आ रहे हैं।

बरसों पहले हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द का जो शाहाना इस्तिक़बाल किया गया था वही ख़ुश्नुमा मन्ज़र लोगों के सामने है। आज शहज़ादए आला हज़रत नहीं हैं लेकिन नबीरए आला हज़रत से लोग अपनी प्यास बुझा रहे हैं।

शरई कोंसिल बरैली शरीफ़ का यह ग्यारहवां सीमिनार था जो अपनी रिवायत से हट कर पहली बार बरैली शरीफ़ से बाहर होने जा रहा था, यह अहले इन्दौर पर हुज़ूर ताजुश्शरीआ की करम फ़रमाई और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म का ख़ुसूसी फ़ैज़ान है यह सीमिनार भी दारुल उलूम नूरी इन्दौर के उसी रज़ा हॉल में होने जा रहा था जिसका संगे बरकत 6 जून सन् 1997 में हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने अपने मुबारक हाथों से रखा था और जिसकी अज़ीमुश्शान इमारत को देखकर हज़रत सरबराहे आला अल जामिअतुल अशरफ़िया, मुबारकपूर ने पहले मजलिसे शरई मुबारकपूर के सीमिनार में कहा था :

अशरफ़िया की अज़ीम इमारतें अपनी जगह मुसल्लम हैं लेकिन इस जदीद इमारत ने हमें सोचने पर मजबूर कर दिया है।

बहर हाल 21 मार्च सन् 2014 को यह ग्यारहवां फ़िक़ही सीमिनार शहंशाहे मालवा सय्यदना ग़ाज़ी नूरुद्दीन नाहरशाह वली रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ज़ेरे साया मरकज़े अहले सुन्नत दारुल उलूम नूरी इन्दौर में हुज़ूर ताजुश्शरीआ की सरपरस्ती, हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर की सदारत, शहज़ादए ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा असजद रज़ा ख़ाँ साहेब की क़ियादत, हज़रत मुफ़्तिये मालवा मद्दज़िल्लहु और हज़रत नूरी बाबा मद्दज़िल्लहु की निगरानी में बड़े तुज़्को एहतिशाम के साथ मुनअक़िद हुआ। जिसमें 150 से ज़ाइद उलमा, मशाइख़ और मुफ़्तियाने किराम शरीक हुए। तीन रोज़ तक मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर गुफ़्तुगू का सिलसिला जारी रहा, सीमिनार की हर नशिस्त में हुज़ूर ताजुश्शरीआ ब नफ़्से नफ़ीस शरीक रहे। अपने ख़ुतबए सदारत में हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने फ़रमाया :

इन्दौर में पहली मरतबा इनइक़ाद पज़ीर शरई कोंसिल ऑफ इन्डिया के ग्यारहवें फ़िक़ही सीमिनार में आप हज़रात की शिरकत पर बहुत ही ममनून व मसरूर हूँ। साथ ही साथ मुस्तहिक़्क़े दुआए ख़ैर हैं दारुल उलूम नूरी के अराकीन व मुआविनीन कि जिन्होंने ग्यारहवें फ़िक़ही सीमिनार की ज़िम्मेदारी अपने सर ली और इस कारे ख़ैर में शरई कोंसिल को अपने बेश बहा तआवुन से नवाज़ा। उलमाए किराम की राहत व ज़ियाफ़त का एहतिमाम किया। अल्लाह तआला इन्हें दारैन की बरकतों और उलमाए किराम के फ़्यूज़ो बरकात से मालामाल फ़रमाए। आमीन बिजाहि सय्यिदुल मुरसलीन

आख़री दिन बाद नमाज़े इशा जश्ने दस्तार बन्दी का प्रोग्राम था वादिये नूर की आज क़िस्मत जाग उठी है अख़तरे बुरजे विलायत के चेहरे की ताबिशों से पूरी वादी में जगमगाहट है लोग आपके चेहरे की ज़ियारत कर रहे हैं। उसी मौक़े पर हुज़ूर ताजुश्शरीआ क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात फ़िल हिन्द ने मध्य प्रदेश के लिये हज़रत अल्लामा मुफ़्ती हबीब यार ख़ान साहेब क़ादरी को क़ाज़िये शरीअत मुक़र्रर फ़रमाया। फिर बेअत का सिलसिला शुरू हुआ हज़ारों की तादाद में लोग दामन से वाबस्ता हुए, यह सिलसिला सिर्फ़ वादिये नूर ही में नहीं बल्कि सीमिनार के दौरान मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में हुज़ूर ताजुश्शरीआ तशरीफ़ ले गए और लोगों ने हाथ में हाथ देकर या दूसरों की पीठ पर हाथ रखकर अपने आपको सिलसिलए क़ादरिया रज़विया से मुनसलिक किया। हुज़ूर ताजुश्शरीआ तशरीफ़ ले गए और नवासए हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द हुज़ूर मन्नानी मियाँ की दुआओं पर जश्न इख़्तिताम पज़ीर हुआ।

अलहम्दु लिल्लाह ! सीमिनार, जश्ने ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़, व जश्ने दस्तारे फ़ज़ीलत को तारीख़ी कामयाबी मिली। मुल्क के मुख़्तलिफ़ अतराफ़ से उलमा के अलावा दीदारे ताजुश्शरीआ के लिये अवाम ने शिरकत की मुख़्तलिफ़ कमेटियों ने तशहीर का काम अन्जाम दिया, इश्तिहारात के अलावा शहर के मुख़्तलिफ़ अख़बारात में सीमिनार और जश्न की रिपोर्ट शाए हुई।

***

तजल्लियाते कुरआन

अज़ : अबुल इत्र मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुस्सलाम सा. अमजदी बरकाती, नेपाल

सद्क़े की फ़ज़ीलत व फ़ायदे

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

یَمۡحَقُ اللّٰہُ الرِّبٰوا وَیُرۡبِی الصَّدَقٰتِ ○

तर्जमा : अल्लाह तआला सूद को घटाता है और सदक़ा को बढ़ाता है।
(अल बक़रह, आयत 276)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने सूद की बे बरकती उसके नुक़सानात और सदक़ा की फ़ज़ीलत व बरकत और इसके उख़रवी फ़ायदे बयान फ़रमाए हैं। अगरचेह ब ज़ाहिर सूद से माल में इज़ाफ़ा होता है, सूदी कारोबार में फ़ायदा नज़र आता है मगर यह सिर्फ़ एक धोका है। सूदी माल और कारोबार में न बरकत होती है और न उसमें कोई ख़ैर व भलाई होती है। सूदी कारोबार और सूदी लेन देन से तबाही व बरबादी होती है, ऐसे माल से बरकत उठा ली जाती है, जज़्बए उख़ुव्वत व भाईचारा ख़त्म हो जाता है, इन्सानियत कराहने लगती है। मगर सदक़ा का माल अगरचेह ऐसा लगता है कि माल में कमी हो गई लेकिन ब ख़ुदा जिस माल का सदक़ा निकाला जाता है उसमें बेपनाह बरकतें आ जाती हैं, दुनिया व आख़िरत की कामयाबी मिलती है, उसकी नेकियाँ, आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बन जाती हैं। क़ब्र की वेहशतों से नजात मिलती है, बलाएं दूर होती हैं और सदक़ा करने वाले के माल में बरकतों का नुज़ूल होने लगता है। अगर सूद में नुक़सान व तबाही और सदक़ा में बरकतें और दारैन की सआदतें, भलाइयाँ न होतीं तो अल्लाह तआला सूद की मज़म्मत (बुराई) और सदक़ा की फ़ज़ीलत में इस आयत के अलावा मुतअद्दिद आयतें नाज़िल नहीं फ़रमाता।

इस आयते करीमा की तफ़सीर हज़रत ज़हाक रहमतुल्लाहि तआला

अलैह फ़रमाते हैं कि :

सूद दुनिया में बढ़ता है और ज़्यादा होता है, अल्लाह तआला उसे आख़िरत में मिटा देगा और सूद खाने वालों के लिये उसमें कुछ भी बाक़ी न होगा और अल्लाह तआला सदक़ा को सदक़ा करने वाले से लेता है क़ब्ल इसके कि वह उसके हाथ में पहुँचे जिस पर सदक़ा किया जा रहा है। पस अल्लाह तआला हमेशा सदक़ा को बढ़ाता रहता है यहाँ तक कि सदक़ा करने वाला अपने रब से मिलता है फिर वह उसे अता फ़रमा देता है। सदक़ा खजूर हो या कोई और चीज़ हो अल्लाह तआला उसको बढ़ाता रहता है यहाँ तक कि वह बड़े पहाड़ की तरह होगा। (दुर्रे मन्सूर, जि. 1)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : सूद अगरचेह ज़्यादा भी हो उसका अन्जाम कमी ही होगा। (इब्ने माजह, जि. 3)

अब आयते करीमा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़रमान का मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला सदक़ा करने वाले के माल में बहुत कुछ इज़ाफ़ा और बरकतें पैदा फ़रमाता और सदक़ा करने वाले को अज्रे अज़ीम और बे हद्दो हिसाब सवाब और नेकियाँ अता फ़रमाता है।

सदक़ा की फ़ज़ीलत क़ुरआन की रौशनी में

(1) **तर्जमा :** और जो कुछ हमने तुम्हें दिया उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी को मौत आ जाए। और फिर वह कहने लगे ऐ मेरे रब ! तूने मुझे कुछ दिनों की मोहलत क्यूँ न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में से होता।

(सूरह मुनाफ़िक़ून आयत 10)

इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि जो लोग दुनिया में सदक़ा नहीं करते उन्हें सदक़ा की अहमियत का अन्दाज़ा उस दिन हो जाएगा जब मौत का जाम पीकर दुनिया से चल बसेगा और आरज़ू करेगा कि काश दुनिया में सदक़ा करता मगर चिड़िया चुक गई खेत तो बारिश किस काम की।

(2) **तर्जमा :** जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस दाने की तरह है जिसने सात ख़ूशे उगाए, हर ख़ूशे में सौ दाने हैं और अल्लाह तआला जिसके लिये चाहे दुगुना कर देता है और अल्लाह बड़ी वुसअत वाला, बहुत इल्म वाला है।

(अल बक़रह, आयत 261)

इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि जो शख़्स अल्लाह की राह में एक रुपया सदक़ा करता है तो अल्लाह तआला उसे सात सो गुना बल्कि उससे भी ज़्यादा

अता फ़रमाता है जिसका कोई शुमार नहीं और यह बात याद रहे कि अल्लाह तआला उसी माल का सदक़ा क़बूल फ़रमाता है और उसी माल के सदक़े से ख़ुश होता है जो हलाल माल से सदक़ा किया गया हो और हराम माल न कमाता हो और न उससे सदक़ा किया गया हो। इरशादे इलाही है:

(3) **तर्जमा**: ऐ ईमान वालो! अपनी कमाई हुई पसन्दीदा चीज़ों में से ख़र्च करो और उन चीज़ों में से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से पैदा की हैं और रद्दी चीज़ों के ख़र्च करने का इरादा न करो जिनको तुम ख़ुद नहीं लेते, मगर यह कि तुमने आँखें बन्द कर ली हों और जान लो कि अल्लाह बहुत बे नियाज़ है बेहद तारीफ़ किया हुआ **(अल बक़रह, आयत 267)**

अल्लाह तआला का हुक्म तो यह है कि पाकीज़ा माल से सदक़ा किया जाए जो अपने लिये पसन्द करते हो, हलाल माल ही अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाए मगर कुछ लोगों का हाल यह है कि सूद का माल, धोके से हासिल किया हुआ माल, दूसरे का हड़पा हुआ माल और ख़राब चीज़ें राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं, फ़क़ीर फ़ुक़रा को दे देते हैं जो अपने लिये भी पसन्द नहीं करते और सवाब की उम्मीद रखते हैं। कान खोल कर सुन लो आला हज़रत सरकार अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: मुहीत व आलमगीरी व जामेउल फ़ुसूलैन वग़ैरहा में है:

यानी उलमा ने यहाँ तक फ़रमाया कि माले हराम फ़क़ीर को देकर सवाब की उम्मीद रखना कुफ़्र है और अगर फ़क़ीर को मालूम है कि इसे माले हराम दिया है और उसके लिये दुआ करे और वह आमीन कहे तो दोनों नए सिरे से कलमए इस्लाम पढ़ें और तजदीदे निकाह करें।

(फ़तावा रज़विया, जि. 7, स. 106)

आज कुछ लोगों का हाल तो यह है कि जो रुपये फट गए हों उन्हें मस्जिदों में दे देते हैं, चन्दा देने वाले को दे देते हैं, फ़क़ीरों के हाथ में थमा देते हैं, जिन्हें दुकान वाले लेने से इनकार कर देते हैं उन रुपयों और नोटों को सदक़ा कर देते हैं। इसी तरह जब कोई खाने का सामान ख़राब होने लगता है, बदबू दार हो जाता है या घर में कोई खाने वाला नहीं होता तो उसे फेंकने की बजाए फ़क़ीरों, ग़रीबों और मदरसों के तलबा को दे देते हैं। अल्लाह तआला हमें नेक तौफ़ीक़ और सही समझ अता फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन बिजाहिन नबिय्यिल करीम अलैहिस सलातो वत्तस्लीम ०

***

तजल्लियाते हदीस

अज़ – हज़रत अल्लामा मौलाना डॉक्टर मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल अलीम साहेब रज़वी, इन्दौर

शैतान के हाथ में होती हैं

सैयिदुना हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उनका बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स (नमाज़ में) इमाम से पहले झुकता और उठता है, उसकी पेशानी तो शैतान के हाथ में होती है, इस हदीस को इमामे बज़्ज़ार और इमामे तबरानी ने सनदे हसन के साथ रिवायत किया है। **(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, स. 334/1)**

इससे मालूम हुआ कि जब कोई नमाज़ी किसी इमाम की इक़्तिदा करे तो उसे इमाम के रुकू में जाने, रुकू से उठने, सज्दे में जाने और सज्दे से उठने से पहले हरगिज़ रुकू और सज्दों में नहीं जाना और नहीं उठा चाहिये, क्योंकि जो ऐसा करता है तो वह अपने इमाम की इक़्तिदा नहीं बल्कि शैतान की पैरवी करता है, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इमाम की इक़्तिदा करने का हुक्म दिया है और शैतान की पैरवी करने से मना किया है, अब वह लोग जो नमाज़ में जल्द बाज़ी से काम लेते और इमाम के रुकू में जाने से पहले ही रुकू में चले जाते, अभी इमाम रुकू से सर नहीं उठा पाता कि यह उठकर सीधा खड़े हो जाते हैं, यूँ ही इमाम के सज्दे में जाने से पहले यह सज्दे में पहुँच जाते और इमाम के सज्दे से पहले ख़ुद सज्दे से उठ जाते हैं, ग़ौर करें कि वह लोग किसकी इक़्तिदा कर रहे हैं ? लिहाज़ा उन्हें चाहिये अपनी इन हरकतों से बाज़ आएं ताकि उनकी इक़्तिदा सही और नमाज़ मुकम्मल हो।

ख़याल रहे कि मुक़्तदी का इमाम से पहले रुकू और सज्दों में जाना या इमाम से पहले उठना अगर इस तरह हो कि इमाम और मुक़्तदी रुकू या सज्दों में मिल ही न पाएं यानी इमाम के रुकू में जाने से पहले मुक़्तदी रुकू में चला गया और जब इमाम रुकू में गए तो मुक़्तदी ने रुकू से सर उठा लिया, इसी तरह सज्दे में भी किया तो ऐसी सूरत में मुक़्तदी की नमाज़ होगी ही नहीं और अगर इस तरह किया कि इमाम से पहले रुकू या सज्दे में चला तो गया मगर इमाम के रुकू या सज्दों में जाने से पहले उसने अपना सर नहीं उठाया तो ऐसी सूरत में नमाज़ का फ़र्ज़ तो अदा हो जाएगा, मगर ऐसा करने वाला सख़्त गुनहगार होगा ऐसा करने वाले के बारे में

सैयिदुना हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जिसने ऐसा किया उसकी नमाज़ ही नहीं हुई, लिहाज़ा उसे दोबारा नमाज़ पढ़ना चाहिये।

हज़रात ! यह बहस तो अलग है कि उसकी नमाज़ हुई या नहीं हुई, अगर नहीं हुई तो दोबारा पढ़ ली जाएगी और ख़ुदा की बारगाहे करम में तौबह कर लेगा तो इन्शाअल्लाह उसकी तौबह भी क़बूल हो जाएगी, लेकिन इमाम से पहले रुकू या सज्दों में जाना और इमाम से पहले रुकू या सज्दों से सर उठा लेना कितना बड़ा गुनाह और ऐसा करने में मुक़्तदी का कितना बड़ा नुक़सान है, उसे अपने आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की ज़बाने अक़दस से मुलाहज़ा फ़रमाएं।

सैयिदुना हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उनका बयान है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने फ़रमाया, तुम में से जो कोई इमाम से पहले रुकू या सज्दों से सर उठाता है क्या वह इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह तआला उसका सर गधे का सर बना दे या उसकी सूरत गधे की सूरत बना दे। **(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, स. 333/1)**

इस हदीसे पाक को पढ़ें, बार बार पढ़ें, समझें और ग़ौर करें कि हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हम पर कैसा करम फ़रमाया है, अल्लाह के ग़ज़ब से बचने का कैसा तरीक़ा बयान फ़रमाया है ? क्या इसके बावुजूद इन्सान को इन बातों से नहीं बचना चाहिये, क्या इसके बाद भी उसे ना फ़रमानी करना चाहिये ? अक़्ल मन्दी तो यही है कि इन्सान उन तमाम बातों से परहेज़ करे, जिनसे हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है ताकि मुसीबतों और परेशानियों से महफ़ूज़ रहे, कभी उसके पास परेशानियाँ न आएं अल्लाह तौफ़ीक़े ख़ैर अता फ़रमाए।

यहाँ हम यह भी मालूम करें कि हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस इरशादे पाक को सुनकर सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन पर क्या असर हुआ और उन्हों ने इस वईद से बचने के लिये कौन सा तरीक़ा इख़्तियार किया और जब हमें वह तरीक़ा मालूम हो जाए तो हम भी उसी पाको पाकीज़ा तरीक़े पर अमल करें ताकि हमारी इस दुनिया और उस दुनिया की ज़िन्दगी संवर जाए और हमें अपने रब जल्ल व अला और महबूबे रब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल हो जाए, सहाबा का अमल हदीसे पाक की रौशनी में मुलाहज़ा फ़रमाएं।

सैयिदुना हज़रत बरा रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हम सरकारे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते, फिर आप रुकू से सर उठा लेते, तो हम में से कोई भी उस वक़्त तक अपनी पीठ भी नहीं झुकाता, जब तक कि आप सज्दा न कर लेते, फिर (आपके सज्दे में पहुँचने के बाद) हम सज्दा करते।

इस हदीसे पाक की वज़ाहत करते हुए हज़रत इमामे तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं, अहले इल्म फ़रमाते हैं कि जो किसी इमाम के पीछे नमाज़ अदा करे उसे इमाम की पैरवी करना चाहिये, इमाम के रुकू कर लेने के बाद वह रुकू करे, इमाम के रुकू से सर उठाने के बाद ही अपना सर उठाए और इस मुआमले में किसी के इख़्तिलाफ़ का हमें इल्म नहीं। (तिर्मिज़ी शरीफ़, स. 37/1)

जो लोग इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते, मगर इमाम के रुकू में जाने से पहले ख़ुद रुकू में चले जाते, इमाम के रुकू से उठने से पहले ख़ुद उठ जाते हैं, इसी तरह इमाम के सज्दे में जाने से पहले सज्दे में पहुँच जाते और इमाम के सज्दे से सर उठाने से पहले ख़ुद सज्दे से उठ जाते हैं, वह सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का यह अमल देखें, इस पर ग़ौर करें और अल्ला तौफ़ीक़े ख़ैर दे तो इस पर अमल करने की कोशिश करें, क्योंकि इसी में हमारा भला है, इसी में हमारी कामयाबी और इसी में हमारी नजात है।

यहाँ शायद किसी के ज़हन में यह सवाल पैदा हो कि जब मुक़्तदी इमाम के रुकू में पहुँच जाने के बाद रुकू और इमाम के सज्दे में पहुँच जाने के बाद सज्दा करेगा तो मुक़्तदी रुकू और सज्दों की तस्बीह कैसे पूरी करेगा, क्योंकि इमाम तो तीन बार तस्बीह (सुब्हा न रब्बियल अज़ीम या सुब्हा न रब्बियल अअ्ला) पढ़कर रुकू या सज्दे से सर उठा लेगा तो मुक़्तदी तो तीन बार तस्बीह नहीं पढ़ सकेगा। मगर ऐसे सभी लोगों से अर्ज़ है कि हम दीने इस्लाम के मानने वाले हैं और इस्लामी शरीअत में इन्सान के हर सवाल का जवाब मौजूद है, यह और बात है कि उस वक़्त कोई शख़्स जवाब न दे सके, लेकिन हमारे बुज़ुर्गों ने हर बात का हल बयान फ़रमाया है।

इस सिलसिले में भी सैयिदुना इमामे अअ्ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्दे रशीद और सैयिदुना इमामे बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उस्ताज़े गिरामी सैयिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जिसे इमामे तिर्मिज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तिर्मिज़ी शरीफ़ में इस तरह बयान किया है आप फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक फ़रमाते हैं, इमाम के लिये मुस्तहब यह है कि वह (रुकू व सुजूद में) पांच तस्बीह कहें ताकि मुक़्तदी तीन तस्बीह पढ़ लें, फिर इमामे तिर्मिज़ी

कहते हैं कि यही मौक़िफ़ हज़रत इस्हाक़ बिन इब्राहीम का है। (तिर्मिज़ी, स. 35/1)

ख़वातीनो हज़रात ! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशादात, सहाबए किराम के मामूलात, अइम्मए हदीस के नज़रियात और हमारी गुज़ारिशात को देखें, समझें और मर्द हज़रात इस पर अमल करें और ख़वातीनो इस्ला अपने बच्चों को समझाएं और अमल करने की तरग़ीब दिलाएं, यक़ीन मानिये जो इस पर अमल करेंगे उनकी दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी संवर जाएगी । अल्लाह करीम अपने महबूब रऊफ़ो रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े हम सबका अमले ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

इन दोनों में गठान लगाओ

सैयिदुना हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं आपने फ़रमाया जिसने ऐसा ख़्वाब बयान किया जो उसने देखा नहीं था (यानी झूटा ख़्वाब बयान किया) उसे क़ियामत के दिन जौ के दो दाने दिये जाएंगे कि इन दोनों में गठान लगाओ और वह हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकेंगे और जिसने ऐसे लोगों की बात सुनना चाही जो वह उसे सुनाना पसन्द नहीं रते हैं तो क़ियामत के दिन उसके कानों में पिघलाया हुआ सीसा डाला जाएगा और जिसने कोई तस्वीर बनाई (फ़ोटो खींचा) उसे अज़ाब दिया जाएगा और उससे कहा जाएगा कि इसमें रूह डाल हालांकि वह उसमें रूह नहीं डाल सकेगा । (बुख़ारी शरीफ़, स. 1042/2)

इस हदीसे पाक में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने गुलामों को तीन बातों से मना किया है और जो लोग इन कामों को करें उनकी सख़्त सज़ा और उन पर होने वाला सख़्त अज़ाब बयान किया है। (1) झूटा ख़्वाब बयान करना (2) छुपकर लोगों की बातें सुनना और (3) तस्वीर साज़ी करना । मुसलमानो ! जो लोग अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बताई हुई बातों को मानेंगे नहीं वह अपना ही तो फ़ायदा करेंगे और जो मानेंगे वह अपना ही नुक़सान करेंगे, अब हम उनकी कुछ तफ़सील बयान करते हैं व बिल्ला हित्तौफ़ीक़।

(1) झूटे ख़्वाब बयान करना, झूटा ख़्वाब बयान करना यह कि ख़्वाब देखा नहीं लेकिन कह रहा है कि मैंने ख़्वाब में ऐसा देखा है । झूटा ख़्वाब बयान करना कितना बड़ा गुनाह है सरकार के फ़रमाने अक़दस के मुताबिक़ जो ऐसा करेगा उसे क़ियामत के दिन सज़ा के तौर पर दो जौ दिये जाएंगे और उससे कहा जाएगा कि इन दोनों में गठान लगा, जिसे वह लगा नहीं सकेगा, आप ख़ुद ग़ौर करें क्या कोई शख़्स

दो जौ में गठान लगा सकता है ? तो फिर आप सोचें कि यह कितना बड़ा अज़ाब है, यह कितनी बड़ी सज़ा है, क्या इस अज़ाब को बरदाश्त करने और इस सज़ा को काटने की किसी में ताक़त है हरगिज़ नहीं, लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि झूटे ख़्वाब बयान न करें, कुछ लोगों की आदत होती है कि झूटे ख़्वाब बयान करने में अपनी शान समझते हैं लेकिन ऐसे लोगों को याद रखना चाहिये कि यह दुनिया की ज़िन्दगी कितने दिन की है, झूटी बातें करके लोगों को कितनी दिन तक धोका दे सकेंगे , आख़िर दुनिया से चले जाऐंगे, फिर सज़ा कितने लम्बी भुगतना होगी, यहाँ कुछ दिन झूटी शान दिखा देंगे, लेकिन वहाँ कैसी बे इज़्ज़ती होगी ? इसलिये मुसलमानों को झूटे ख़्वाब बयान करने से परहेज़ करना चाहिये, ताकि दायमी अज़ाब से महफ़ूज़ रहें।

(2) छुपकर लोगों की बातें सुनना, जो लोग अपनी बातें आपको बताना नहीं चाहते इसी लिये वह आपसे दूर जाकर या अलाहिदा होकर बातें कर रहे हैं, तो आपको उनकी बातें नहीं सुनना चाहिये और न उन्हें सुनने की कोशिस रना चाहिये, फिर यह भी ख़याल करना चाहिये कि अगर वह अपनी बातें हमसे छुपाना नहीं चाहते तो फिर हमसे दूर ही क्यों जाते या हम से अलग बैठकर बातें क्यों करते, इसी तरह कुछ लोग मियां बीवी के आपसी बातें चोरी छुपे सुनते या सुनने की कोशिश करते हैं , यह आदत औरतों में ज़्यादा होती है कि वह दूसरी औरतों और उनके शोहरों के बीच होने वाली बातें सुनने की कोशिश करती हैं, हालांकि उन्हें इन बातों से कोई फ़ायदा नहीं होता तो फिर सोचें कि यह काम आख़िर क्यों कर रही है ? मुसलमानों को इस बुरी आदत से बचना चाहिये और ऐसा करते वक़्त यह ख़याल रखना चाहिये कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस बारे में कितनी सख़्त सज़ा बयान फ़रमाई है, अपने आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम का बयान फिर पढ़ लें।

आप फ़रमाते हैं कि "जिसने ऐसे लोगों की बात सुनना चाही जो उसे सुनाना पसन्द नहीं करते तो क़ियामत के दिन उसके कानो में पिघलाया हुआ सीसी डाला जोगा" ज़रा ग़ौर कीजिये और सोचिये कि अगर आज दुनिया में किसी के कान में गर्म खोलता हुआ पानी डाला जाए तो उसे कितनी तकलीफ़ होगी तो फिर पिघले सीसी के बारे में गुमान कर सकते हैं कि उससे कितनी तकलीफ़ होगी ? लिहाज़ा तय कर लें कि हम छुपकर किसी की कोई बात नहीं सुनेंगे और ऐसों की बात सुनने की कोशिश भी नहीं करेंगे, जो हमें सुनाना नहीं चाहते हों या जो अपनी बात हमसे छुपाना चाहते हों।

मुसलमानो ! ज़रा आप सोचिये कि इस

क़िस्म की बातें सुनकर आपको क्या मिलेगा ? आपका इसमें कौनसा फ़ायदा है, लेकिन नुक़सान देखिये एक तो इनकी बातें सुनने में, अल्लाहो रसूल की ना फ़रमानी, और फिर उन बातों को सुनकर आप ख़ामोश बैठेंगे ? सुनने वालों के पैट में दर्द होगा और वह सोचेंगे कि इसे दूसरों को सुनाया जाए और इस तरह यह बातें दूसरों को बताएंगे और फिर किसी का राज़ ज़ाहिर कर के एक दूसरा गुनाह करेंगे, इस लिये भलाई और बेहतरी इसी में है कि हर बात में अल्लाहो रसूल की इताअत की जाए और उनके अहकाम की फ़रमांबरदारी की जाए, ताकि अल्लाह की रज़ा मिले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रज़ा मिले और इस तरह यह दुनिया और वह दुनिया संवर जाए।

(3) हमारे आक़ाए हमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तीसरी बात जिससे अपने गुलामों को मना फ़रमाया वह है तस्वीर साज़ी यानी फ़ोटो बाज़ी, और इसकी सज़ा यह बयान फ़रमाई कि तस्वीर बनाने वाले (फ़ोटो ग्राफ़र) से कहा जाएगा कि इसमें रूह डाल, हालांकि वह उसमें रूह नहीं डाल सकेगा , तो ज़रा सोचें कि तस्वीर साज़ी करने वाले अल्लाहो रसूल को राज़ी करने का काम कर रहे हैं, या नाराज़ करने का ? अगर आप ईमान से कहें तो यक़ीनन आपका जवाब यही होगा कि इनका यह काम अल्लाहो रसूल को नाराज़ करने का है।

हमारे आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम एक मक़ाम पर तस्वीर साज़ी यानी फ़ोटो बाज़ी की सज़ा बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन सबसे सख़्त अज़ाब तस्वीर बनाने वालों को दिया जाएगा **(मुस्लिम शरीफ़, स. 201/2)** और सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाने अक़दस भी पढ़ें, आप फ़रमाते हैं, जिस घर में कुत्ता या जानदार की तस्वीर हो उसमें रहमत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते **(बुख़ारी शरीफ़, स. 880/2)**

ख़वातीनो हज़रात ! तस्वीर साज़ी के बारे में हम कुछ और बात नहीं कर रहे हैं, बस आपसे गुज़ारिश है कि, इन अहादीसे तैयिबा को पढ़ें, इन पर ग़ौर करें और ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो इन पर अमल करने की कोशिश करें। ख़ुदारा अपने आप पर तरस खाएं, तस्वीर साज़ी और दूसरी तमाम बुराइयों और हराम कारियों से बचने की पूरी पूरी कोशिश करें ताकि क़ियामत के दिन होने वाले क़िस्म क़िस्म के अज़ाबों से महफ़ूज़ रह सकें। अल्लाह मुझे और आप सबको नेकियों की तौफ़ीक़ दे बुराइयों से बचाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

***

हज़रत ताजुश्शरीआ

इमाम अहमद रज़ा के वारिसे इल्मो फ़न

अज़ : अल्लामा मुफ़्ती क़ाज़ी अब्दुर्रहीम रज़वी बस्तवी, साबिक़ सदर मुफ़्ती मरकज़ी दारूल इफ़्ता, बरैली शरीफ़

हिन्दूस्तान में जब तरह तरह के अक़ाइद इस्लाम से मुतसादिम, इस्लाम की तरफ़ से मन्सूब होने लगे तो यहाँ के उलमा ने उस पर सख़्त गिरफ़्त फ़रमाई और किताबें लिखकर हक़ को हक़ और बातिल को बातिल साबित कर दिखाया। इस फ़न की एक अहम किताब अल मोअ़तक़द अल मुन्तक़द है जिसे सैफ़ुल्लाह अल मस्लूल हज़रत अल्लामा फ़ज़्ले रसूल बदायूनी अलैहिर्रहमा ने तस्नीफ़ फ़रमाया है, इस पर इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान का हाशिया ब नाम अल मुस्तनद अल मोअ़तमद बिनाए नजातुल अबद जिसने इसकी अहमियत व इफ़ादियत में चार चाँद लगा दिये

चूँकि यह दोनों किताब अरबी ज़बान में है और सख़्त है इससे सिर्फ़ बा सलाहियत (क़ाबिल) उलमा ही फ़ायदा हासिल करते थे और ज़रूरत थी कि इससे अवामो ख़वास सभी मुस्तफ़ीद हो सकें । लिहाज़ा वारिसे उलूमे इमाम अहमद रज़ा, ताजुश्शरीआ, हज़रत अल्लामा मौलाना मोहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने इस तरफ़ ध्यान फ़रमाया और इसे साफ़ शुस्ता और शाइस्ता उर्दू ज़बान में तर्जमा इमला करवा दिया है तर्जमा ख़ूब है इसमें कहीं कहीं अल्लामा मौसूफ़ का हाशिया भी है जिसने किताब के मुश्किलात की निक़ाब कुशाई की है, अल्लाह तआला इसे मक़बूले अनाम फ़रमाए।

इसी तरह हज़रत ताजुश्शरीआ अल्लामा अज़हरी साहेब क़िब्ला ने टाई के मस्अला पर तहक़ीक़ी रिसाला पेश करके उम्मते मुस्लिमा पर करम फ़रमाया। और यह फ़तवा हुज़ूर सय्यिदिल करीम मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान का था और तहक़ीक़ यही है कि टाई नसारा (ईसाइयों) का शिआरे मज़हबी और शिआरे मज़हबी का इस्तिमाल कुफ्र है । लिहाज़ा टाई के इस्तिमाल से ख़ुद भी बचें और अपने बच्चों को भी बचाएं । मौला तआला तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

नुमूज़ज हाशिया अल अज़हरी अला सहीहुल बुख़ारी को भी देखने का मौक़ा मिला दिल बाग़ बाग़ हो गया। हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने बड़ी अर्क़ रेज़ी से बुख़ारी शरीफ़ पर हाशिया लगाया इससे आपके मुब्लग़ इल्म का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है । आपकी तस्नीफ़ात में दिफ़ा कन्ज़ुल ईमान, अल हक़्क़ुल मुबीन, आसारे क़ियामत, शरह

हदीसे नियत, हिजरते रसूल, तसवीरों का हुक्म क़ाबिले ज़िक्र हैं और हुज़ूर आला हज़रत अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की कई उर्दू और अरबी किताबों का तर्जमा फ़रमाया। हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा को अरबी ज़बानो अदब पर किस क़दर दस्तरस है ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। मरकज़ी दारुल इफ़्ता बरैली शरीफ़ की सरपरस्ती और फ़िक़्ही मसाइल के जुज़इय्यात पर उबूर, यही कहा जा सकता है कि सय्यदना आला हज़रत और सय्यदी हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, के फ़्यूज़ो बरकात हैं। मौला तआला फ़ैज़ान को आम व ताम फ़रमाए। आमीन।

ताज़ियत नामा

अमीने मिल्लत, प्रोफ़ेसर सय्यद **मुहम्मद अमीन मियाँ** साहेब क़िब्ला बरकाती, मारेहरा शरीफ़

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम 0

वारिसे उलूमे आला हज़रत, क़ाइम मुक़ाम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, हज़रत अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान साहब अज़हरी मियाँ कल विसाल फ़रमा गए

अर्श पर धूमें मचीं वह मोमिने सालेह मिला
फ़र्श पे मातम उठे वह तय्यबो ताहिर गया

अज़हरी मियाँ का विसाल दुनियाए सुन्नियत का अज़ीम नुक़सान है जिसकी तलाफ़ी मुमकिन नहीं, हज़रते वाला का ख़ानक़ाहे बरकातिया मारेहरा मुतहहरा से पाँच पुश्त का तअल्लुक़ था। वालिदे माजिद हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमह ने अज़हरी मियाँ को जुम्ला सलासिले तरीक़त की ख़िलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा था।

मैं दिल की गहराइयों से मौलवी अस्जद रज़ा ख़ान साहेब, उनके अहले बैत, अहले ख़ानदान और जुम्ला अहबाबे अहले सुन्नत को ताज़ियत पैश करता हूँ। रब्बे ज़ुल जलाल उनका बदल अता फ़रमाए और उनके दरजात बुलंदतर फ़रमाए आमीन बिजाहिल हबीबिल अमीन 0

प्रोफ़ेसर सय्यद मुहम्मद अमीन

ख़ादिमे सज्जादा दरगाहे क़ादरिया बरकातिया, मारेहरा शरीफ़, ज़िला एटा (यू.पी.),

7 ज़ीक़अ्दह 1439 हि. मुताबिक़ 21 जुलाई 2018 ई.

हुज़ूर ताजुश्शरीआ

अपने किरदारो अमल के आईने में

मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी

इस फ़र्शे गीती (ज़मीन) पर हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से लेकर अब तक बेशुमार इन्सानों ने जनम लिया और यह सिलसिला सुब्हे क़ियामत तक जारी व सारी रहेगा लेकिन उन पैदा शुदा बन्दों में चन्द ऐसी शख़्सियात भी इस फ़ानी दुनिया में जलवागर हुई हैं जिन पर इस्लाम और दीनो सुन्नियत को फ़ख़्र हासिल है। उन्हीं शख़्सियात में एक इल्मी क़द आवर शख़्यित मुर्शिदे सादिक़ व बहरक़, हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान साहेब क़ादरी अज़हरी बरैलवी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की भी है। अलहम्दु लिल्लाह आपकी ज़ात मोहताजे तआरुफ़ नहीं। आप एक ही वक़्त में कई ख़ूबियों और पसन्दीदा ख़सलतों के मालिक हैं।आप मौजूदा सदी के माया नाज़ आलिमे रब्बानी, फ़क़ीहे इस्लाम और अज़ीम मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़ हैं। इन ख़ूबियों के मालिक होने के साथ साथ आप शरीअते मुतहहरा के पाबन्द, तक़्वा व तहारत, हुस्नो जमाल और बहतरीन अख़लाक़ के पैकर, आरिफ़ बिल्लाह और फ़ना फ़िर्रसूल भी हैं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ ब हैसियते मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़

चूँकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा को ज़मानए तालिबे इल्मी ही से मुतालआ (पढ़ने पढ़ाने) का बड़ा ज़ोक़ व शौक़ रहा है सफ़र हो या हज़र, ख़लवत हो या जलवत (तन्हाई हो या मेहफ़िल) आपका अकसर हिस्सा किताबें देखने और पढ़ने में गुज़रता है। इस लिये आपका मुतालआ बहुत वसीअ है। अल्लाह तआला ने आपको इल्मो अमल के साथ साथ क़ल्मी सलाहियत का मालिक भी बनाया है। आपने अपनी कसीर मसरूफ़ियात और तब्लीग़ी दोरों की ज़ियादती के बावुजूद कई किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई और बहुत सी अरबी किताबों का उर्दू में तर्जुमा भी किया। इसी तरह अरबी ममालिक के लिये उर्दू ज़बान की किताबों को अरबी ज़बान में मुन्तक़िल फ़रमाया। इस तरह आपकी छपी हुई और कुछ छप न सकी उनकी तादाद 35 या 36 है।

तक़्वा और इत्तिबाए शरीअत

बुज़ुर्गी के लिये सबसे बड़ा मेअयार तक़्वा और इत्तिबाए शरीअत है, एक मोमिन बन्दे के अन्दर तक़्वा की हक़ीक़ी सिफ़तों का पाया जाना उसके मुक़र्रब बारगाहे ख़ुदावन्दी होने की रौशन दलील है क्यूँकि हक़ीक़ी तक़्वा के ज़रीए बन्दए मोमिन को रूहानी ग़िज़ा हासिल होती है, क़ल्बी सुकून मयस्सर होता है और बेचैनी का ख़ातिमा होता है और रूहानी उरूज व तरक़्क़ी को सरफ़राज़ी व सरबलन्दी नसीब होती है। फिर बन्दए मोमिन उस मरतबए कमाल पर फ़ाइज़ हो जाता है जिसे अहले मरतबा विलायत से ताबीर करते हैं यानी वह अल्लाह का वली हो जाता है। बि हम्दिही तआला हुज़ूर ताजुल इस्लाम अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी की ज़ाते गिरामी में भी तक़्वा व परहेज़गारी की जो हक़ीक़ी सिफ़तें हैं वह बदरजए अतम मौजूद हैं। आपने तक़्वा और इत्तिबाए शरीअत को अपने लिये लाज़िम कर लिया तो परवरदिगारे आलम का आप पर वह ख़ास फ़ज़्लो करम हुआ कि आज आपकी ज़ात आलमे इस्लाम के मुसलमानों के लिये मीनारए रुश्दो हिदायत बन गई और आज पूरी दुनिया की सुन्नियत आपके इल्म के फ़ैज़ान से सैराब हो रही है आपकी तक़्वा शिआरी परहेज़गारी और शरीअत की पैरवी के तअल्लुक़ से मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन साहब रज़वी अपना आँखों देखा बयान तहरीर करते हैं।

सन् 1407 हि. की बात है कि ज़नान ख़ाना में औरतें ज़ियारत और बेअत के लिये हाज़िर हैं, जब आप ज़नान ख़ाना में तशरीफ़ ले गए तो चन्द औरतों के निक़ाब उल्टे और मुंह खुले हुए थे, आपने फ़ौरन अपनी आँखें दूसरी जानिब फेर ली और फ़रमाया पर्दा करो बे हिजाबाना घूमना फिरना सख़्त मना है। निक़ाब डालो। सब औरतों ने निक़ाबें डाल लीं फिर मुरीद फ़रमाया। सुब्हानल्लाह तक़्वा हो तो ऐसा हो।

आपको नमाज़ से बेहद महब्बत है सफ़र में हों या हजर में, नमाज़ के वक़्त में पहले नमाज़ पढ़ते हैं फिर दूसरे काम काज में मसरूफ़े अमल होते हैं। सफ़र चाहे जैसा भी हो, हवाई जहाज़ से हो या ट्रेन से या फ़ोर व्हीलर से, नमाज़ का वक़्त होते ही नमाज़ की अदाएगी के लिये बेचेन हो जाते हैं। जैसा कि मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी का बयान है कि अकसर हज़रत मुझे हुक्म फ़रमाते कि मुसल्ला बिछाओ नमाज़ पढ़ूँगा। चाहे एयरपोर्ट हो या स्टेशन, नमाज़ तो कभी क़ज़ा नहीं होती नमाज़ पढ़ने की सभी को ताकीद फ़रमाते मौलाना ही का बयान है कि अकसर मुझसे पूछते कि नमाज़ पढ़ी या नहीं। अगर

मालूम हो जाता कि नमाज़ नहीं पढ़ी तो सख़्त नाराज़गी का इज़हार करते। मुझे ख़ूब याद है कि 1991 ई. से 2006 ई. तक तक़रीबन पन्द्रह साल तक मैंने हज़रत के साथ पूरे मुल्क का सफ़र किया मगर आपकी नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई। (हयाते ताजुश्शरीआ मतबुआ रज़ा अकेडमी)

हुज़ूर ताजुश्शरीआ का हुस्ने अख़्लाक़

अल्लाह तआला ने जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी अलैहिर्रहमा को जहाँ इल्मो अमल से नवाज़ा वहीं आपको हुस्ने सीरत और अख़्लाक़े हसना की दौलत भी अता फ़रमाई है। आप ऐसे ख़लीक़ हैं कि अपने तो अपने ग़ैर भी आपसे मुलाक़ात के बाद मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहते और बार बार आपसे मुलाक़ात करने के ख़्वाहिश मन्द रहते हैं। उम्दा अख़्लाक़ वाला शख़्स अज़ीम मरतबे पर फ़ाइज़ होता है बि हम्दिही तआला यह दोनों सिफ़तें आपकी ज़ात में पूरी की पूरी मौजूद हैं, आप सबके साथ हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आते हैं, आपके नज़दीक हर ख़ास व आम, अमीर व ग़रीब, छोटा और बड़ा सब यकसां है। आप ग़रीबों और मिस्कीनों से महब्बत फ़रमाते हैं और सादगी को पसन्द करते हैं बच्चों से बहुत महब्बत करते हैं, मदरसों के तलबा पर ख़ुसूसी शफ़क़त फ़रमाते हैं जब भी जामिअतुर्रज़ा में तशरीफ़ ले जाते हैं तलबा को मुलाक़ात का मौक़ा फ़राहम करते हैं और उन्हें दुआओं से नवाज़ते हैं। नमाज़, रोज़ा और शरीअत की पाबन्दी की ताकीद फ़रमाते हैं। आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते मगर जब किसी को ख़िलाफ़े शरअ़ काम करते देखते हैं तो अल्लाह के लिये ग़ज़बनाक हो जाते हैं लेकिन फिर प्यार व महब्बत, नर्मी और बेहतरीन अख़्लाक़ से समझाकर उसकी इस्लाह फ़रमा देते हैं। यही वजह है कि आज आपकी शख़्सियत पूरे आलमे इस्लाम के लिये मीनारए रुश्दो हिदायत बनी हुई है और लोग आपके गिरवीदा होते चले गए गोया आपने अख़्लाक़े रसूले गिरामी वक़ार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अपने लिये नमूनए अमल बना लिया है।

आपकी तर्जमा निगारी

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा को रब्बे कायनात ने बेहद इल्मी लियाक़त (क़ाबलियत) अता फ़रमाई है। आपको उर्दू, अरबी और फ़ारसी ज़बान व अदब के साथ साथ अंग्रेज़ी ज़बान पर महारत हासिल है। जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ का सफ़र पाकिस्तान हुआ तो हज़रत प्रोफ़ेसर मस्ऊद अहमद अज़हरी

अलैहिर्रहमा ने अपने यहाँ मदऊ किया तो दौराने गुफ़्तुगू हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने फ़िल बदीह अरबी अशआर कहे । आपकी तस्नीफ़ात और दीवान सफ़ीनए बख़्शिश से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि बयक वक़्त उर्दू और अरबी ज़बान के एक फ़न्नी अदीब की हैसियत के मालिक हैं।

आपने सय्यदना आला हज़रत अलैहिर्रहमा की कई किताबों का उर्दू से अरबी और अरबी से उर्दू में तर्जमा किया है तर्जमा करते वक़्त ज़बान व अदब के जुमला उसूल व ज़वाबित नज़र के सामने होते हैं अरबी से उर्दू या उर्दू से अरबी में तर्जमा के वक़्त ज़बान की चाश्नी और शगुफ़्तगी बरक़रार रहती है, यही सबब है कि जब एक पढ़ने वाला तर्जुमा शुदा किताब का मुतालआ करता है तो उसे एहसास नहीं होता कि मैं तर्जमा की हुई किताब का मुतालआ कर रहा हूँ।

क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात फ़िल हिन्द

मज़हबे इस्लाम में मुसलमानों के मुआमलात के फ़ैसले और शरई हल के लिये क़ाज़ी ज़ी इख़्तियारे शरई का होना बेहद ज़रूरी है। वह सुन्नी सहीहुल अक़ीदा फ़क़ीह जो अपने इलाक़े के फ़ुक़हा (मुफ़्तियों) में सबसे ज़्यादा अहकामे शरइय्या फ़रइय्या और जिससे सब फ़तवा हासिल करते हों शहर का सबसे बड़ा आलिम हो वह क़ाज़ी होता है और उसका दायरा उसका अपना शहर और क़ुर्बो जवार के गांव क़स्बे होते हैं। ज़िले का क़ाज़ी पूरे ज़िले के आलिमों में बड़ा आलिम होता है और उसका दायरा पूरा ज़िला होता है और रियासत (प्रदेश) का क़ाज़ी रियासत के बड़े आलिमों में जो सबसे बड़ा आलिम हो वह होता है और उसके दायरे में पूरी रियासत दाख़िल होती है । इसी तरह पूरे मुल्क का क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात पूरे मुल्क में जो सबसे बड़ा आलिम होता है वह क़ाज़ी होता है और उसका दायरा पूरा मुल्क होता है।

जामिअतुर्रज़ा में शरई कोंसिल ऑफ़ इन्डिया के तीसरे फ़िक़ही सीमिनार के मौक़े पर जिसमें मुख़्तलिफ़ शहरों ज़िलों और सूबों के बड़े बड़े उलमाए किराम व मुफ़्तियाने इज़ाम शरीक थे, हज़रत मुमताज़ुल फ़ुक़हा मुहद्दिसे कबीर हज़रत अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा साहेब क़िब्ला ने क़ज़ा की अहमियत व इफ़ादियत और उसकी ज़रूरत पर रौशनी डालते हुए क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात के मन्सब के लिये हुज़ूर ताजुश्शरीआ का नाम पेश किया, उस वक़्त कान्फ़्रेंस हॉल में मौजूद सभी उलमाए किराम व मुफ़्तियाने इज़ाम ने अपनी रज़ा व ख़ुशी का इज़हार किया और बयक ज़बान सुल्तानुल फ़ुक़हा हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा शाह

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अपने फ़ज़्लो कमाल के आईने में

मुफ़्ती मोहम्मद आबिद हुसैन क़ादरी, जमशेदपूर

गोरा मुखड़ा जलवे जिस पर आ आ कर फिर जाते हैं
आओ तुम को भी सूरत ऐसी एक दिखाते हैं

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब अल्लाह तबारक व तआला किसी बन्दे को अपना महबूब बना लेता है तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को हुक्म देता है कि मैं फ़लां बन्दे से महब्बत करता हूँ तुम आसमान वालों में ऐलान कर दो कि सब उससे महब्बत करें।

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आसमान वालों में ऐलान फ़रमा देते हैं, ऐलान के बाद आसमान वाले उस बन्दे से महब्बत करने लगते हैं फिर अल्लाह तबारक व तआला फ़रमाता है ज़मीन वालों में ऐलान कर दो कि मैं फ़लां बन्दे से महब्बत करता हूँ तुम भी उससे महब्बत करो, तो ज़मीन वाले भी उस बन्दे से महब्बत करने लगते हैं।

फिर तो वह बन्दा जिन्न व इन्स (इन्सानों व जिन्नों) के दिलों की धड़कन बन जाता है, सबका महबूब हो जाता है, सारे इन्सान के दिल उसकी तरफ़ माइल हो जाते हैं और उसे लोगों के नज़दीक भी मक़बूलियते आम्मा हासिल हो जाती है।

हक़ीक़त यह है कि ऊपर ज़िक्र की गई हदीस इस आयते करीमा की तफ़सीर है, अल्लाह तबारक व तआला ने इरशाद फ़रमाया है :

तर्जमा : यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किये अन क़रीब रहमान लोगों के दिलों में उनकी महब्बत डाल देगा **(कुरआन)**

इस आयत व हदीस की रोशनी में जब हम ग़ौर करते हैं तो इस वक़्त हमारी नज़र पीरे तरीक़त ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी अलैहिर्रहमा पर आकर टिक जाती है।

हज़रत ताजुश्शरीआ को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हिन्द व पाक में ख़ुसूसन और बैरूने ममालिक में उमूमन वह शोहरत व मक़बूलियत दी है जो फ़ी ज़माना उन्हीं का हिस्सा है, जिस शहर में

देखो उनका चर्चा है, जिस मुल्क में जाओ उनकी अबक़रियत की धूम मची है, गली गली में उनकी ख़ूबियों का डंका बज रहा है और उनकी महब्बत की सदाए बाज़ गश्त सुनाई देती है।

बस्ती बस्ती क़रया क़रया
ताजुश्शरीआ ताजुश्शरीआ

आपकी इस क़दर मक़बूलियत आपकी विलायत व महबूबियत की सनद और एक ऐसी हक़ीक़त है जिसका इनकार नहीं किया जा सकता। इस लिये यह कहना बेजा न होगा कि हज़रत ताजुश्शरीआ का वुजूदे मस्ऊद आयते करीमा (तर्जमा : यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किये अन क़रीब रहमान लोगों के दिलों में उनकी महब्बत डाल देगा) की जीती जागती तफ़सीर और ऊपर ज़िक्र की गई हदीस की तशरीह व तफ़सील है।

आज हिन्दूस्तान व पाकिस्तान का दीनी क़ाइद ऐसा नहीं जिसकी इस क़दर मक़बूलियत और आओ भगत हो, इज़्ज़तो वक़ार की निगाह से देखा जाता हो। अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से उनकी शान ही कुछ ऐसी थी कि मुसलमान उनको अपना अज़ीम क़ाइद मानने पर मजबूर थे और हैं। आज से तक़रीबन पन्द्रह साल की बात है, हुज़ूर ताजुश्शरीआ झारखंड के एक मग़रबी मक़ाम पर मदऊ थे, हवाई जहाज़ के ज़रीए रांची पहुँचे फिर वहाँ से कार के ज़रीए फ़लां जगह पहुँचे, रांची के मुसलमानों ने हज़रत का ज़बरदस्त इस्तिक़बाल किया काफ़ी लोग ज़ियारत के लिये हज़रत के पास पहुँचे हुए थे, हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी साहेब अलैहिर्रहमा भी रांची की कान्फ्रेंस के लिये मदऊ थे या रांची पहुँचे हुए थे, वापसी पर एक दिन अपने चेम्बर में जलवा अफ़रोज़ और हम चन्द मुदर्रेसीन उनके इर्द गिर्द बैठे थे, हज़रत ने फ़रमाया कि हुज़ूर अज़हरी मियाँ को अल्लाह तआला ने ज़बरदस्त मक़बूलियत दी है, ऐसी मक़बूलियत तो कहीं देखने में न आई। देखो तो सही कि अज़हरी मियाँ को फ़लां प्रोग्राम में जाना था, रांची एयरपोर्ट पर उतरे फिर कार से फ़लां जगह पहुँचना था मगर रांची में उनसे मिलने के लिये हज़ारों मैकशों की भीड़ जमा हो गई थी जब कि रांची में रुकना भी न था सिर्फ़ वहाँ से गुज़रना था मगर आनन फ़ानन इतने लोगों का इकट्ठा हो जाना बड़ी बात है। मालूम होता है कि कोई दूसरी मख़लूक़ लोगों के कानों तक बात पहुँचा देती है और आनन फ़ानन सब जमा हो जाते हैं।

आख़िर सवाल यह है कि कोई दूसरी मख़लूक़ लोगों के कानों में क्यूँ फूंक मार देती है। वजह यही है कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने फ़ज़्ले ख़ास से हज़रत अज़हरी मियाँ को अपना महबूब व मक़बूल

बन्दा बना लिया है और उसके हुक्म से फ़रिश्ते का ऐलान हो गया है फिर इन्सानों के दिलों ने हज़रत ताजुश्शरीआ को अपना महबूब बना लिया है।

यह तो हज़रत अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा का मुशाहदा व तबसरा है, ख़ुद फ़क़ीर ने मुबारक पूर, बरैली शरीफ़ और जमशेदपूर में हज़रत की मक़बूलियत और अक़ीदत मन्दों के हुजूम को मुलाहज़ा किया।

मुशाहदा है कि जब किसी की मक़बूलियत बढ़ जाती है तो हासिदीन की एक टोली पैदा हो जाती है। मिसाल के तौर पर हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, बारहवीं सदी के मुजद्दिद शहंशाह ओरंगज़ेब और मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरैलवी अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान जैसी हस्तियाँ इसी ज़ुमरे में आती हैं। अपनों की नज़र में यह फूल हैं और हासिदों की नज़र में कांटें, जो हक़ वाले हैं वह इनकी तारीफ़ें करते हैं और जो अपनी राह से भटके हुए हैं वह नक़्स, ऐब निकालते हैं।

कुछ यही सूरते हाल उम्दतुल फ़ुक़हा हुज़ूर ताजुश्शरीआ के साथ भी है, अरबाबे हिल्लो अक़्द और अहले सआदत (हक़ वालों) की नज़र में आप महकते हुए फूल और दमकते हुए सितारा हैं और फूल से महब्बत की जाती है नफ़रत नहीं। सितारे से रोशनी हासिल की जाती है ज़ुल्मत से नहीं। इस लिये सआदत मन्द लोग उनकी बारगाह में अक़ीदत मन्दी का फूल निछावर करके फ़ैज़ियाब हो रहे हैं और शिक़ावत पसन्द लोग बकवास करते हैं। मैं नूरी फ़ैज़ पाकर यह कहने से कुछ दरेग़ न करूँगा कि आपको सब जा नशीने मुफ़्तिये आज़म मानते हैं कि आपकी रिफ़अत ही कुछ ऐसी है। नाइबे आला हज़रत जानते हैं कि आपकी अज़मत ही कुछ ऐसी है। फ़क़ीहे आज़म मानते हैं कि आपकी फ़ुक़ाहत ही कुछ ऐसी है। सब आपकी तारीफ़ में नग़मा सरा हैं देखते ही मसरूर हो जाते हैं कि सूरत ही कुछ ऐसी है। आपको ताजे शरीअत से याद करते हैं कि आपकी अबक़रियत ही कुछ ऐसी है। आपको दामने शाहे हुदा कहते हैं इस लिये कि आपकी लिखी हुई नअ़त व मिदहत ही कुछ ऐसी है। हक़ीक़त यही है कि पूरे बर्रे सग़ीर में इन जैसा ब तजरे इल्मी, कमाल बुज़ुर्गी का मालिक और फ़ैज़ याफ़्ता कोई नहीं, इनके जैसा फ़ैज़ रसां कोई नहीं, फ़ी ज़माना इनके जैसा कोई पीर नहीं।

इनका फ़तवा आख़िरी हर्फ़ की हैसियत रखता है, इनका फ़ैसला आख़िरी फ़ैसला है, इस लिये मुफ़्तिये आज़म के बाद वह कल भी हम सुन्नियों के मुक़्तदाए आज़म थे और आज भी हैं। लिहाज़ा उनसे इख़्तिलाफ़ की कोई वजह नहीं हो

सकती। सआदत मन्दी तो इसमें है उनसे महब्बत करने वाले उनके तमाम शहज़ादों से महब्बत करें, उनकी गली कूचों से महब्बत करें। तारीख़ के झरोके से हम तो सिर्फ़ इतना जानते हैं कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक कुत्ते को बहुत महब्बत की निगाह से बार बार देख रहे थे, दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीद गंजशकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरबार में इसी शक्ल का एक कुत्ता था इस लिये मैं इसे महब्बत की निगाह से देख रहा हूँ। अल्लाहु अकबर!

आप अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़ज़्लो करम, नबिये रहमत, हुज़ूर सय्यदना ग़ौसे आज़म, सय्यदना मुजद्दिदे आज़म और सय्यिदी मुर्शिदी मुफ़्तिये आज़म के फ़ैज़ाने करम से मालामाल हैं। इस लिये वह इल्मो तफ़क़्क़ा, तक़वा व तहारत और विलायत व बुज़ुर्गी में इस वक़्त बे मिस्लो बे नज़ीर और यकताए रोज़गार हैं उनका कोई सानी नहीं, किसी जहत से उनका दामन दाग़दार नहीं। वह शरीअते मुतह्हरा का पास व लिहाज़ करते हैं, सुनन व नवाफ़िल पर अमल करते हैं, गुनाहे कबाइर व सग़ाइर (छोटे बड़े गुनाहों) से दूर रहते हैं, उनके मुत्तक़ी और वलिये कामिल होने में कोई कलाम नहीं बिला शक व शुबह मौजूदा हिन्दूस्तान के मुफ़्तिये आज़म क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात और मुसल्लम बुज़ुर्ग हैं। बे फ़ैज़ लोगों के इख़्तिलाफ़ से इस इत्तिफ़ाक़ पर कुछ असर नहीं होता। हज़रत अज़हरी मियाँ, नाम के मुफ़्ती और शैख़ नहीं बल्कि मुस्तनद मुफ़्ती और मुस्तनद पीरे कामिल हैं क्यूँकि हज़रत सय्यिदी मुफ़्तिये आज़म ने अपनी सोहबत में रखकर उन्हें कामिल मुफ़्ती बना दिया। यह फ़क़ीर नूरी के लिये बफ़ज़्लेही तआला सआदत और ख़ुश बख़्ती ही की बात है कि इसका पूरा घराना ख़ानवादए आला हज़रत से जुड़ा हुआ है।

हक़ीक़त यह है कि हुज़ूर अज़हरी मियाँ अलैहिर्रहमा पर सय्यदना हज़रत ग़ौसे आज़म सय्यदना आला हज़रत और सय्यदना मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का फ़ैज़ान जारी व सारी है और वह फ़ैज़ान आसमान की तरह साया फ़िगन है। हज़रत सरकारे बग़दाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ुद फ़रमाया है कि : मेरा हाथ मेरे मुरीदों पर इसी तरह साया फ़िगन है जिस तरह आसमान ज़मीन पर। और इसमें कोई शक नहीं कि हुज़ूर अज़हरी मियाँ अलैहिर्रहमा, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीदे सादिक़ और आशिक़े बा सफ़ा हैं इस लिये वह ज़रूर इन मशाइख़े किराम के फ़ैज़ान से सरशार थे और रहेंगे।

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ

अरबाबे इल्मो दानिश की नज़र में

मौलाना अहमद अली क़ादरी रज़वी, बांसा शरीफ़ बाराबंकी

(1) **हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द :** अख़्तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिनकी भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते, अब तुम इस काम को अन्जाम दो, मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ

लोगों से मुख़ातब होकर मुफ़्तिये आज़म ने फ़रमाया : आप लोग अब अख़्तर मियाँ सल्लमहू से रुजूअ करें, इन्हीं को मेरा क़ाइम मुक़ाम और जा नशीन जानें। **(मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, जि. 1, स. 152)**

(2) **हुज़ूर कुतबे मदीना :** हुज़ूर कुतबे मदीना अल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउद्दीन रज़वी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं : मुझे मेरे मुर्शिद हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जो कुछ मिला इन ख़ानवादे के शहज़ादों मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ, मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ और मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ को अता कर दिया। **(कुतबे मदीना)**

(3) **हुज़ूर सय्यिदुल उलमा :** हुज़ूर सय्यिदुल उलमा मुफ़्ती सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा बरकाती मारेहरवी अलैहिर्रहमा ने (हुज़ूर ताजुश्शरीआ को) जमीअ सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और दुआओं से नवाज़ा। **(मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, स. 162)**

(4) **हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत :** एक साहिब की वालिदा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से मुरीद होना चाहीं तो आपने फ़रमाया : मियाँ ! सरकार आला हज़रत के शहज़ादे हज़रत अज़हरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ, उन्हीं से मुरीद करवाइये।

दूसरी रिवायत है कि हज़रत ने फ़रमाया कि मैं हज़रत अज़हरी मियाँ साहेब के सामने से होकर कैसे गुज़र सकता हूँ आख़िर कार उक़बी (पीछे के) दरवाज़े से हज़रत अन्दर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाते कि कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि हज़रत अज़हरी मियाँ तशरीफ़ फ़रमा हैं, आहिस्ता बोलो शहज़ादे क़याम फ़रमा हैं। (रावी, मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा हश्मती, रदोली शरीफ़)

(5) **क़ाज़ी शमसुल उलमा :** एक दिन हम तमाम तालिब हज़रत क़ाज़ी साहब के दर्स में मौजूद थे और हज़रत पढ़ा रहे थे (क़ाज़ी शमसुल उलमा अल्लामा शुमसुद्दीन रज़वी जोनपूरी जो शागिर्द थे हुज़ूर सदरुश्शरीआ अलैहिमर्रहमा के) एक बुज़ुर्ग सिफ़त इन्सान तशरीफ़ लाए क़ाज़ी साहेब ने खड़े होकर उनका इस्तिक़बाल किया, आने वाले को अपनी मस्नद पर बिठाया और ख़ुद मुअद्दब होकर बैठ गए और तालिब इल्मी के ज़हन व दिमाग़ में क्या तअस्सुर उभरा ? इसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैंने

महसूस किया, क़ाज़ी साहेब जैसी शख़्सियत अल्लाह अल्लाह इनकी शानो शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े इनके सामने तिफ़्ले मकतब (छोटी क्लास के बच्चे) मालूम होते थे। अपने उस्तादों में से किसी से मैंने दरयाफ़्त किया, हज़रत कौन हैं ? फ़रमाया : यह हज़रत अज़हरी मियाँ क़िब्ला हैं। **(रावी, मौलाना शमशाद हुसैन रज़वी, बदायूँ)**

(6) **हुज़ूर अहसनुल उलमा :** 14, 15 नवम्बर सन् 1984 ई. को मारेहरा मुताह्हरा में उर्से क़ासमी की तक़रीब में हज़रत अहसनुल उलमा मौलाना मुफ़्ती सय्यद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे बरकातिया मारेहरा शरीफ़ (अलैहिर्रहमा) जा नशीने मुफ़्तिये आज़म का इस्तिक़बाल क़ायम मुक़ाम मुफ़्तिये आज़म अल्लामा अज़हरी ज़िन्दा बाद के नारा से किया और मजमए कसीर में उलमा व मशाइख़ और फ़ुज़ला व दानिशवरों की मौजूदगी में जा नशीने मुफ़्तिये आज़म को यह कहकर :

फ़क़ीर आस्तानए आलिया क़ादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से क़ाइम मुक़ाम मुफ़्तिये आज़म अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहेब को सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम ख़िलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मिजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले तमाम बरकाती भाई सुन लें और यह उलमाए किराम जो उर्स में मौजूद हैं इस बात के गवाह रहें। (मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, स. 162)

(7) **हुज़ूर मुफ़स्सिरे आज़मे हिन्द :** डॉक्टर अब्दुन्नईम अज़ीज़ी लिखते हैं : वालिदे माजिद मुफ़स्सिरे आज़मे हिन्द ने अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द को फ़राग़त से पहले आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जानशीं बनाया और एक तहरीर भी इनायत फ़रमाई।

हज़रत रहमानी मियाँ अलैहिर्रहमा माहनामा आला हज़रत में ब उनवान कवाइफ़ दारुल उलूम में तहरीर फ़रमाते हैं : बवजहे अलालते वालिदे माजिद यह तवक़्क़ोअ़ नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो, इस बिना पर ज़रूरत थी कि दूसरा क़ाइम मुक़ाम हो। लिहाज़ा अख़्तर रज़ा सल्लमहू को क़ाइम मुक़ाम व जा नशीने आला हज़रत बना दिया गया। जानशीन का अमामा बांधा गया और इबा पहनाई गई।

(मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, स. 163)

(8) **अल्लामा तहसीन रज़ा ख़ाँ :** अलहम्दु लिल्लाह कि हज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ सल्लमहू ने बा वजूद तरह तरह की मसरूफ़ियात और अलालते तबा इसका तर्जमा (अल मोअ़तक़द) फ़रमाया ताकि इसका फ़ायदा आम हो जाए, इसका बिल इस्तीआब मुतालआ तो मैं न कर सका मगर जस्ता जस्ता जो मक़ामात मैंने देखे उससे बड़ी ख़ुशी हुई कि बहुत सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया है।

(अल मोअ़तक़द, स. 38)

(9) **शारेह बुख़ारी :** हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी साबिक़ सदर शोअ़बए अल जामिअतुल अशरफ़िया मुबारकपूर ज़िला आज़मगढ़ यू.पी. जो तक़रीबन ग्यारह साल

तक बरैली शरीफ़ में हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की सरपरस्ती में फ़तावा लिखते रहे और जिन्हें मुफ़्तिये आज़म की उम्र में ही नाइबे मुफ़्तिये आज़म कहा और लिखा जाता रहा। उनकी ज़बानी मैंने कई बार उनका तअस्सुर सुना कि हज़रत मुफ़्तिये आज़म हिन्द को अपनी ज़िन्दगी के आख़री पचीस सालों में जो मक़बूलियत व हर दिल अज़ीज़ी हासिल हुई वह आपके विसाल के बाद अज़हरी मियाँ को बड़ी तेज़ी के साथ इब्तिदाई सालों ही में हासिल हो गई और बहुत जल्द लोगों के दिलों में अज़हरी मियाँ ने अपनी जगह बना ली। **(अल्लामा यासीन अख़्तर मिस्बाही)**

(10) **अल्लामा अरशदुल क़ादरी :** अल्लाह तआला ने हुज़ूर अज़हरी मियाँ को ज़बरदस्त मक़बूलियत दी है, ऐसी मक़बूलियत तो देखने में न आई देखो तो सही कि अज़हरी मियाँ को मुख़्तलिफ़ जगह प्रोग्राम में जाना था, रांची एयरपोर्ट पर उतरे फिर बज़रीए कार फ़लां जगह पहुँचना था मगर रांची में उनसे मिलने के लिये हज़ारों मैकशों की भीड़ जमा हो गई थी जब कि रांची में रुकना न था सिर्फ़ वहाँ से गुज़रना था मगर आनन फ़ानन इतने लोगों का इकट्ठा हो जाना बड़ी बात है। मालूम होता है कि कोई दूसरी मख़लूक़ लोगों के कानों तक बात पहुँचा देती है और आनन फ़ानन सब जमा हो जाते हैं। **(रावी मुफ़्ती आबिद हुसैन नूरी, टाटा नगर)**

(11) **अल्लामा मोहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ाँ हश्मती :** फ़क़ीर हक़ीर ने किताब बनाम, टाई का मस्अला (मुसन्निफ़ा अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी मद्दज़िल्लहुल आली) ब ग़ौरो ख़ोज़ मुतालआ किया, अपने दलाइल के लिहाज़ से वह फ़तवा किसी की तस्दीक़ का मोहताज नहीं है फिर भी इम्तिशाले अम्र के लिये फ़क़ीर तस्दीक़ करता है। **(टाई का मस्अला)**

(12) **अल्लामा ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी :** हज़रत ताजुश्शरीआ ने इन अहम मुबाहस का सलीस उर्दू ज़बान में ऐसा बर जस्ता तर्जमा (अल मोअतक़द अल मुनतक़द) फ़रमाया है कि तर्जमा ही से मफ़हूम वाज़ेह हो जाता है इसके बावुजूद जा बजा पेचीदा मसाइल की ऐसी अक़्दा कुशाई की है कि बे इख़्तियार ज़बान से निकल पड़ता है कि यह आला हज़रत और मुफ़्तिये आज़म के फ़ैज़ से ताजुश्शरीआ ही का ख़ास्सा है।

(अल मोअतक़द, स. 46)

(13) **अल्लामा अब्दुल हकीम शरफ़ क़ादरी :** हुज़ूर ताजुश्शरीआ से हज़रत के रवाबित बहुत गेहरे थे, सफ़रे पाकिस्तान के मौक़े पर वालिदे गिरामी अलैहिर्रहमा से मसाइले शरइय्या पर सन्जीदा माहौल में गुफ़्तुगू हुआ करती थी, हज़रत वालिदे माजिद क़द्दसा सिर्रहू हुज़ूर ताजुश्शरीआ के इल्मो फ़ज़्ल, फ़िक़्ही बसीरत और हदीस दानी के मोअतरिफ़ थे। **(ब रिवायत डाक्टर सदीदी)**

(14) **मुफ़्तिये आज़म राजस्थान :** अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मत अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी मद्दज़िल्लहुल आली को बे शुमार फ़ज़ाइल और मनाक़िबे जलीला से

नवाज़ा है, मैं आपके इल्मो फ़ज़्ल हज़्मो इत्तिक़ा, तस्नीफ़ी, फ़िक़ही, तब्लीग़ी ख़िदमात से बहुत मुतास्सिर हूँ। अरबी अदब में आप हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा अश्शाह मुफ़्ती हामिद रज़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा के मज़हर हैं । नीज़ हुज़ूर सय्यदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरैलवी का आप पर ख़ुसूसी फ़ैज़ान है जिसकी वाज़ेह नज़र यह है कि ऐशिया व यूरप की बलन्द आहंग चोटियों पर आपकी अज़मतों के परचम लहरा रहे हैं और आपकी इल्मी जलालत व शख़्सी वज़ाहत के आगे बड़े बड़ों के सर ख़मीदा नज़र आते हैं । **(मआरिफ़ मुफ़्तिये आज़म राजस्थान, स. 383)**

(15) **अल्लामा फ़ैज़ अहमद उवैसी :** हज़रत ताजुश्शरीआ ने अल मोअ़तक़द अल मुस्तनद का तर्जमा फ़रमाया फ़क़ीर ने सआदत समझकर किताबे मज़कूर का मुतालआ किया उससे फ़क़ीर इल्मी तौर पर ख़ूब मुस्तफ़ीद हुआ फ़क़ीर यक़ीन और निहायत वुसूक़ से अर्ज़ करता है कि अवाम के लिये तो अक़ाइद के मुआमलात में बिला शुबह यह तर्जमा शरीफ़ रहबर व हादी है लेकिन उलमाए किराम के लिये भी बहतरीन दस्तावेज़ है। **(अल मोअ़तक़द, स. 52)**

(16) **मुफ़्ती अब्दुल लतीफ़, गुजरा नवाला :** फ़क़ीर ने किताबे मुस्तताब का उर्दू तर्जमा कहीं कहीं से मुलाहज़ा किया। अलहम्दु लिल्लाह जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द ताजुश्शरीआ हज़रतुल अल्लाम अल मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी मद्दज़िल्लहुल आली ने बड़ी अर्क़ रेज़ी से यह तर्जमा फ़रमाया है।

यक़ीनन हुज़ूर ताजुश्शरीआ मद्दज़िल लहुल आली हर हवाले से अपने आबा व अज्दाद के सच्चे जा नशीन है । अल्लाह तआला उनका साया अहले सुन्नत पर दराज़ फ़रमाए। **(अल मोअ़तक़द, स. 66)**

(17) **अल्लामा अब्दुल्लाह ख़ां अज़ीज़ी :** हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहेब क़िब्ला जा नशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के रिसाला मुबारका मुसम्मात (टाई का मस्अला) के मुतालआ का शरफ़ हासिल हुआ । हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के फ़तवा और हज़रत मुसन्निफ़ अल्लामा के दलाइल व बराहीन से अहक़र को इन्शिराहे सद्र हासिल हुआ कि टाई का इस्तिमाल करना नाजाइज़ व हराम है । मुसलमानों को इससे एहतिराज़ (परहेज़) करना चाहिये। **(टाई का मस्अला, स. 41)**

(18) **मौलाना सय्यद उवैस मुस्तफ़ा वासिती :** फ़क़ीर क़ादरी को जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ साहेब से बारहा मुलाक़ात का शरफ़ हासिल होता रहता है, यह मुलाक़ात व राब्ते देरीना तअल्लुक़ात के बाइस हैं जो ख़ानक़ाहे बिल गिराम और ख़ानक़ाहे बरैली में हमेशा रहा है।

मौसूफ़ को ख़ानवादे रज़वियत में वह मक़ाम हासिल है कि ताजुश्शरीआ और क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात जैसे आला ख़िताब से याद किये जाते हैं। **(अल मोअ़तक़द, स. 43)**

(19) **अल्लामा अबुन्नस ख़लीफ़ए कुतबे मदीना :** हज़रत अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहेब ख़ानदाने आला हज़रत के फ़ाज़िल मुहक़्क़िक़ हैं जिनके फ़ैज़ान से एक ज़माना मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ हो रहा है। अब अहले सुन्नत का यह फ़रीज़ा है कि वह इस किताब (अल मोअ़तक़द) का मुतालआ करके इसे दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें। **(अल मोअ़तक़द, स. 55)**

(20) **मुफ़्ती नईम अख़्तर अशरफ़ी लाहोरी :** हुज़ूर मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहेब का इल्मी मक़ाम का क्या कहना इस किताब (अल मोअ़तक़द) के बारे में सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि यह किताब हज़रत के अरबी अदब पर महारत की दलील है और यह किताब साबित करती है कि आप वाक़ेई जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द हैं। **(अल मोअ़तक़द, स. 58)**

(21) **अल्लामा सय्यद अलवी मालिकी :** जा नशीने मुफ़्तिये आज़म अल्लामा मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी क़ादरी बरैलवी सन् 1407 हि./1988 ई. में जब हज्जो ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए तो अल्लामा सय्यद मोहम्मद अलवी मालिकी ने अपनी तस्नीफ़ कर्दा किताबें इनायत फ़रमाईं और बहुत ही क़द्रो मन्ज़िलत की नज़र से देखा, इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरैलवी के पोते होने की हैसियत से और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के जा नशीं की वजह से बहुत इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाई और दुआइय्या कलेमात से नवाज़ा। **(मुफ़्तिये आज़म और उनके ख़ुलफ़ा, स. 517)**

(22) **प्रोफ़ेसर मस्ऊद अहमद मज़हरी :** उस इमाम अहमद रज़ा के जां नशीं उसके परपोते अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी हैं, बड़े मुत्तक़ी और आलिमे बा अमल 1983 में पाकिस्तान तशरीफ़ लाए अज़राहे करम ग़रीब ख़ाने पर भी तशरीफ़ लाए, एक अरबी नअ़त की फ़रमाइश की क़लम बरदाश्ता उसी वक़्त लिख दी। इससे अन्दाज़ा होता है कि अरबी ज़बान ने इमाम अहमद रज़ा के घराने में घर कर रखा है। यह उसी घराने का इम्तियाज़े ख़ास है। **(उजाला, स. 26)**

(23) **शैख़ अबू बक्र क़ादरी, केरला :** समाहतुल मुफ़क्क़ी हज़रत अल्लामा शैख़ मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अल अज़हरी साहेब की शख़्सियत आलमे इस्लाम में मरकज़ी हैसियत रखती है, आप इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म की मस्नद के सच्चे जा नशीन और क़ाबिले एतिमाद मुफ़्ती हैं। आपने जामिअतुर्रज़ा, बरैली शरीफ़ में क़ाइम करके अहले सुन्नत पर एहसाने अज़ीम फ़रमाया। **(इक़्तिबासे तक़रीर इमाम अहमद रज़ा कान्फ्रेंस ब मौक़ा उर्से रज़वी)**

(24) **अल्लामा मोहम्मद ग़ुफ़रान सिद्दीक़ी, अमेरिका :** फ़क़ीर हक़ीर ग़फ़रलहु आज आस्ताना आलिया रज़विया हाज़िर हुआ तो हुज़ूर जा नशीने सरकार मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, सरकार मुफ़्तिये आज़म अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ साहेब दामत बरकताहुमुल आलिया की क़दम बोसी नसीब हुई। सरकार मद्दज़िल

लहुल आली ने फ़तवा टाई के मुतअल्लिक़ अता फ़रमाया। हक़ीक़त यह है कि हज़रत ने GROLIER ENCYLPEDIA की अस्ल फ़ोटो स्टेट कॉपी देकर अहले इस्लाम पर हुज्जत क़ाइम कर दी है और फिर शरई हैसियत से जो हुक्म फ़रमाया है वह आपका ही हिस्सा है। मौला करीम अहले इस्लाम को अपना ज़ाहिर और बातिन अपनी सरकारों की तरह बनाने की तौफ़ीक़ व हिम्मत अता फ़रमाए। **(टाई का मस्अला, स. 36)**

(25) **मुफ़्ती मुजीब अशरफ़ रज़वी :** हज़रते वाला मरतबत जा नशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अल्लामा मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहेब क़िब्ला का तहक़ीक़ी जवाब टाई के अदम जवाज़ के बारे में नज़र से गुज़रा जो बिला शुबह हक़्क़ो सवाब और दलाइले शरइय्या से मुबरहन है। **(टाई का मस्अला, स. 42)**

(26) **अल्लामा बदरुल क़ादरी हॉलेन्ड :** हॉलेन्ड और बेल्जियम के अन्दर सिलसिलए रज़विया की इशाअत हो रही है, कई ख़ानवादों को बरैली शरीफ़ भेजकर दाख़िले सिलसिला कराया गया है। बाज़ लोगों ने हरमैन तैय्यिबैन की सर ज़मीन पर जा नशीने मुफ़्तिये आज़म हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी दामत बरकातुहुमुल आलिया के दामन से वाबस्तगी हासिल की है और एक बार के सफ़रे हॉलेन्ड के दौरान हज़रत जा नशीने मुफ़्तिये आज़म ने क़ादरियत रज़वियत के अनवार से इस ख़ित्तए तारीक को ख़ुद रौनक़ भी बख़्शी है।

रहे यह जारी क़ियामत तक उनका फ़ैज़े आम
जहां में फूले फले बाग़े रज़वी नूरी (बद्र)

(ताजदारे अहले सुन्नत, स. 225)

(27) **मौलाना आले मुस्तफ़ा कटीहारी :** अस्ल किताब और हाशिया का सलीस उर्दू तर्जमा (अल मोअ्तक़द) करके किताब के अहम और ज़रूरी मुबाहस को उर्दू दां तबक़े तक पहुँचा कर उनके अक़ाइद व अफ़कार की इस्लाह और तहफ़्फ़ुज़ का जो क़ाबिले क़द्र कारनामा अन्जाम दिया गया, वह बजा तौर पर क़ाबिले तहसीन व क़ाबिले मुबारकबाद है, एक ज़बान को दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करना वह भी तर्जमा के उसूल को पेशे नज़र रखकर, एक मुश्किल काम है। ख़ुसूसन जब कि इल्मी कलाम की फ़न्नी बारीकियों और मुस्तलहात की ताबीर एक अहम मस्अला हो, मगर ऐसे मक़ाम पर हुज़ूरे वाला (हुज़ूर ताजुश्शरीआ) ने तर्जमे में ताबीर व तफ़हीम का भरपूर लिहाज़ व ख़याल फ़रमाया है। **(अल मोअ्तक़द, स. 63)**

मुफ़्तिये आज़म के क़ाइम मक़ामो जानशीन
चश्मए फ़ैज़े रज़ा बिल वास्ता अख़्तर रज़ा

पेशवाए क़ौमो मिल्लत रहबरे दुनिया व दीं
रह रवाने राहे हक़ के रहनुमा अख़्तर रज़ा

हुज़ूर ताजुश्शरीआ का मुजाहिदाना किरदार

मौलाना मोहम्मद साक़िब रज़ा अलीमी, रिसर्च स्कॉलर अलीगढ़ यूनिवर्सिटी

इस आलमे रंगो बू और निगार ख़ानए कुदरत में बेशुमार शख़्सियतें ऐसी मौजूद हैं जिनके गेसूए इल्मो हिकमत की ख़ुश्बू से पूरी दुनिया महक रही है। उन इक़बाल मन्द और अज़ीम हस्तियों में एक नाम, मोहम्मद इस्माईल रज़ा, का है जिसे दुनिया जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द फ़क़ीहे इस्लाम मुफ़क्किरे अहले सुन्नत शैख़ुल मुहद्देसीन, ताजुश्शरीआ क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात फ़िल हिन्द अल्लामा अश्शाह मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी मियां अलैहिर्रहमा के नाम से जानती है पहचानती है। आपकी ज़ात मोहताजे तआरुफ़ नहीं, अगर आप फ़िक़ह के एक मुसल्लेमुस्सुबूत मोजें मारने वाली दरिया हैं तो दूसरी तरफ़ मैदाने हदीस के आप मशहूर मुहद्दिस हैं। ग़रज़ यह कि उलूमे अक़लिया व नक़लिया पर आपको कमाल हासिल है मगर इन सब के बावुजूद आपका जो नुमायां वस्फ़ और ख़ूबी है वह आपका मुजाहिदाना किरदार है।

नसबन्दी के ख़िलाफ़ फ़तवा

इन्द्रा गांधी साबिक़ वज़ीरे आज़म हिन्द का मिज़ाज ज़ालिमाना था, उनके दौरे इक़्तिदार में अवाम पर ज़ुल्मो जब्र किया गया, कांग्रेस पार्टी की सारी कुव्वत का इनहिसार सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्द्रा गांधी की ज़ात थी, वह सियासी मुख़ालिफ़ीन को बे दर्दी से कुचल देने के लिये सख़्त से सख़्त इक़दाम करने में भी कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थी। इन्द्रागांधी के साथ उसके बेटे संजय गांधी का तानाशाही नज़रिया उसकी आड़ में काम कर रहा था। 1975 में पूरे मुल्क में हंगामी हालात (एमरजेंसी) का ऐलान कर दिया गया, तमाम शहरियों के बुनियादी हुक़ूक़ छीन लिये गए मुक़ाबला करने और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वालों को क़ैद कर दिया गया, मीसा जैसे जाबिर क़ानून को नाफ़िज़ कर दिया गया इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज़्यादा बच्चा पैदा करने पर पाबन्दी आइद कर दी गई और उन लोगों पर नस बन्दी करना ज़रूरी क़रार दे दिया, पुलिस अवाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नस बन्दी करा रही थी। इसी असना में नस बन्दी के जाइज़ या नाजाइज़ होने पर शरई नुक़्तए नज़र जानने और अमल करने के लिये देवबन्दी वहाबी दारुल इफ़्ता से क़ारी मोहम्मद तय्यब मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द ने नस बन्दी के जाइज़ होने का फ़तवा दे दिया। मुल्क की हेजानी कैफ़ियत

और उम्मते मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुए जाबिर व ज़ालिम हुकूमत के ख़िलाफ़ ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा के हुक्म पर हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने नस बन्दी के हराम व नाजाइज़ होने का फ़तवा सादिर फ़रमाया। उस फ़तवे पर हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के अलावा हज़रत मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी अब्दुर्रहीम बस्तवी, मौलाना मुफ़्ती रियाज़ अहमद सिवानी के दस्तख़त हैं।

फ़तवा की इशाअत के बाद हुकूमत ने इस बात के लिये दबाव डाला कि यह फ़तवा वापस ले लिया जाए मगर हज़रत ने फ़तवा से रुजूअ करने से इनकार कर दिया और हुकूमत के नुमाइन्दों से साफ़ साफ़ कह दिया गया कि फ़तवा क़ुरआनो हदीस की रोशनी में लिखा गया है किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता।

है क़ौले मुहम्मद क़ौले ख़ुदा फ़रमान न बदला जाएगा
बदलेगा ज़माना लाख मगर क़ुरआन न बदला जाएगा

हक़ गोई व बे बाकी

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जा नशीने मुफ़्तिये आज़म हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिमर्रहमा को जिन गूना गूं सिफ़तों से मुत्तसिफ़ किया है उन ख़ूबियों में एक हक़ गोई और बे बाकी है। आपने कभी भी सदाक़त व हक़्क़ानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा, चाहे कितने ही मसलहत के तक़ाज़े क्यूँ न हों, चाहे कितने ही क़ैदो बन्द, मसाइबो आलाम और हाथों में हथकड़ियाँ पहनना पड़े, कभी किसी को ख़ुश करने के लिये उसकी मंशा के मुताबिक़ फ़तवा तहरीर नहीं फ़रमाया, जब कभी फ़तवा तहरीर फ़रमाया तो अपने अस्लाफ़, (बुज़ुर्गों) अपने आबा व अज्दाद (बाप, दादा) के क़दम ब क़दम होकर तहरीर फ़रमाया। जिस तरह जद्दे अमजद आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी और ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्तिये आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरैलवी ने बे ख़ौफ़ो ख़तर फ़तावा तहरीर फ़रमाए। इस हक़ गोई के गवाह आज आपके हज़ारों फ़तावा और वाक़ेआत हैं जो मुल्क और बैरूने ममालिक में फेले हुए हैं। हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा तीन बार हज और मुतअद्दिद बार उमरह से फ़ैज़ियाब हुए। पहला हज 4 सितम्बर 1983 ई. दूसरा हज 1985 ई. तीसरा हज 1986 में अदा किये।

सऊदी मज़ालिम की कैफ़ियत ताजुश्शरीआ की ज़बानी

एक मरतबा का वाक़िआ है कि जा नशीने मुफ़्तिये आज़म हुज़ूर ताजुश्शरीआ अपनी शरीके हयात (पीरानी अम्मा साहिबा) के साथ हज व ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए थे, अरफ़ात से वापस लौटने के बाद सऊदी हुकूमत ने रात के वक़्त मक्कए मुअज़्ज़मा में आपको क़याम गाह से गिरफ़्तार कर लिया, बिला वजह 11 दिन जेल में रखकर बग़ैर मदीना शरीफ़ की ज़ियारत कराए हिन्दूस्तान भेज दिया।

हज़रत की ज़बानी मुख़्तसर रिपोर्ट

31 अगस्त 1986 शब में 3 बजे अचानक सऊदी हुकूमत के सी. आई. डी और पुलिस के लोग आपकी क़याम गाह पर आए और सामान की तलाशी ली और मुख़्तलिफ़ सवाल किये, आपने उसका ब हुस्नो ख़ूबी जवाब दिया। एक सवाल आपसे

नमाज़ से मुतअल्लिक़ किया कि आप हरम शरीफ़ में क्यूँ नहीं नमाज़ पढ़ते हैं तो आपने जवाब दिया कि मैं हरम से दूर रहता हूँ इस लिये नहीं जाता हूँ। फिर सी. आई. डी ने सवाल किया कि आप महल्ला की मस्जिद में भी नमाज़ नहीं पढ़ते हैं तो आपने जवाब दिया कि मेरे मज़हब में और आपके मज़हब में इख़्तिलाफ़ है, आप हंबली कहलाते हैं और मैं हन्फ़ी हूँ और हन्फ़ी मुक़्तदी की रिआयत ग़ैर हन्फ़ी इमाम अगर न करे तो हन्फ़ी की नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी इसी वजह से मैं अलेहदा नमाज़ पढ़ता हूँ।

मुख़्तसर यह कि आपको क़ैद कर दिया गया। हज़रते वाला फ़रमाते हैं कि मेरा जुर्म मेरे बार बार पूछने के बाद भी मुझे बताया नहीं बल्कि यही कहते रहे कि आपका मुआमला अहमियत नहीं रखता लेकिन उसके बावुजूद मेरी रिहाई में ताख़ीर की और बग़ैर जुर्म बताए मुझे मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी से मौक़ूफ़ रखा और ग्यारह दिनों के बाद जब मुझे जद्दा रवाना किया गया तो मेरे हाथों में जद्दा एयरपोर्ट तक हथकड़ी पहनाए रखी और रास्ते में नमाज़े ज़ोहर के लिये मौक़ा न दिया गया इस वजह से मेरी नमाज़े ज़ोहर क़ज़ा हो गई।

अख़ीर में चलते चलते इतना ज़रूर अर्ज़ करूँगा कि गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल चमनिस्ताने आला हज़रत के गुले ख़ुश रंग हज़रत अल्लामा मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान साहेब क़ादरी बरकाती अज़हरी रहमतुल्लाहि अलैह की शख़्सियत जो शरीअत व तरीक़त के दरिया हैं बहुत कम ऐसा होता है कि शैख़े तरीक़त, शैख़े शरीअत भी हो। यही वजह है कि आज लाखों की तादाद में आपके मुरीदीन पाए जाते हैं। कर्नाटक के मनतिक़ा हसन में एक मरतबा साठ हज़ार लोग बयक वक़्त दाख़िले सिलसिला रज़विया बरकातिया क़ादरिया हुए। आप लोगों से कम मिलना चाहते हैं, तन्हाई पसन्द हैं, भीड़ भाड़, दस्त बोसी, क़दम बोसी से दूरी इख़्तियार फ़रमाते हैं, नमाज़ों के पाबन्द हैं शरीअत के अहकाम पर पूरी सख़्ती से अमल पेरा होते हैं और उसकी ताकीद करते हैं और जो फ़ेअ़्ल शरीअत में नापसन्द हो उस पर लोगों की इस्लाह फ़रमते हैं।

मुद्दत के बाद होते हैं पैदा कहीं वह लोग
मिटते नहीं हैं दहर से जिनके निशां कभी

सैयिदुना हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से महब्बत करता है तो हज़रत जिब्राईल को निदा देता है कि बिला शुबह अल्लाह तआला फ़लां आदमी से महब्बत रखता है पस तू भी उसे महबूब रख। पस जिबईल अलैहिस्सलाम भी उससे महब्बत रखते हैं। फिर वह आसमान वालों में निदा करते हैं कि अल्लाह तआला को फ़लाँ आदमी से महब्बत है। लिहाज़ा तुम सब भी उससे महब्बत रखो। पस आसमान वाले उससे महब्बत रखते हैं फिर ज़मीन में उसे मक़बूल बना दिया जाता है। *

हुज़ूर ताजुश्शरीआ ब हैसियते आलिमे रब्बानी

क़ारी दिलशाद अहमद रज़वी, बनारस

उलमाए किराम, अंबियाए किराम के वारिस होते हैं उनका मन्सब रूहानी क़द्रों को सीना ब सीना मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उम्मत पर पहुँचाना। सहाबए किराम से लेकर आज तक के मशाइख़ सूफ़िया व उलमा का तरीक़ा-ए-कार रहा है। इन्हीं ख़ुश नसीब हज़रात के सरों पर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नयाबत का सुनेहरा ताज रखा है इस लिये कि क़ुरआन व सुन्नत की तब्लीग़ ही एक ऐसा ज़रीआ है जो उम्मत को अल्लाह की मारिफ़त का रास्ता दिखाती है। हर नाइबे मुस्तफ़ा (उलमा) पर दो ज़िम्मेदारियाँ होती हैं अव्वल वह ख़ुद अल्लाह व रसूल की इताअत का पाबन्द हो और दूसरी ज़िम्मेदारी यह कि इताअते ख़ुदा व रसूल का जो मफ़हूम और मअ़ना उसने क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में समझा है उसे उम्मते मुस्तफ़ा तक पहुँचाए और उसी पर अमल पेरा होने की तालीम व तरग़ीब दे।

इस लिये कि एक नाइबे पैग़म्बर (आलिमे दीन) के पेशे नज़र तमाम अहकामाते शरइय्या और इरशादाते मुस्तफ़ा आईने की तरह रौशन रहते हैं, वह ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े रसूल में ऐसा गुम होता है कि वह वही करना चाहता है जिसका हुक्म ख़ुदा ने दिया और वह वही सुनना चाहता है जिसमें मुस्तफ़ा प्यारे की रज़ा हो। आइये अब इन उसूल व ज़वाबित की तराज़ू पर एक तरफ़ शरीअत के अहकाम और दूसरी तरफ़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ की शख़्सियत को रख कर देखा जाए कि उनकी मुबारक ज़िन्दगी में किस क़दर हम आहंगी है।

ताजुश्शरीआ उस दौर की पैदावार हैं जब कि फ़क़ाहत व रूहानियत और तरीक़त में जानशीने आला हज़रत सय्यिदी सरकार मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा का डंका बज रहा था और ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द ने अपने विसाल के क़ब्ल ही से हुज़ूर ताजुश्शरीआ को इफ़्ता व दर्से हदीस की ज़िम्मेदारियाँ देकर अपनी ख़िलाफ़त और रूहानियत का अमीन बना दिया था। एक ऐसी शख़्सियत जो अहले सुन्नत के लिये मरकज़ी हैसियत

रखती हो और उलमाए अरब व अजम का मरजअ हो उसकी नज़रे इन्तिख़ाब ही हुज़ूर ताजुश्शरीआ के लिये सनद की हैसियत रखती है।

आफ़ताबे विलायत का गुरूब क्या होना था कि पस हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ज़ात ने अपनी जोत जगा डाली, मुर्शिदे कामिल आलिमे रब्बानी को मरजए सुन्नियत होने के लिये किसी तहरीक की ज़रूरत न पड़ी बल्कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ का ब तजरे इल्मी, फ़िक़ही इन्फ़िरादियत क़ाबलियत और मसलके आला हज़रत पर पूरी दयानत के साथ इस्तिक़ामत ने सिर्फ़ हिन्द व पाक और बंगलादेश ही नहीं पूरी दुनिया के सुन्नियों को अहले सुन्नत का क़ाइदे आज़म तस्लीम करने पर मजबूर कर दिया।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ज़िन्दगी में अहले सुन्नत व जमाअत की शीराज़ा बन्दी, इफ़्ता के तअल्लुक़ से उठने वाले बोहरान की पेश बन्दी और तरीक़त की ज़ंजीरों में नई कड़ियों का इज़ाफ़ा ही सुब्हो शाम का मशग़ला है। हुज़ूर ताजुश्शरीआ की गुलामी ने जिसे हिन्द व बैरूने हिन्द में रूशनास किया।

तालिब इल्मी का दौर था जमशेदपूर में क़ाइदे अहले सुन्नत अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा की क़ियादत में शहर के गोल मोरी महल्ला में इमाम अहमद रज़ा कान्फ्रेंस में हुज़ूर ताजुश्शरीआ की आमद हुई। हम लोग आपकी ख़िदमत पर मामूर किये गए, बेअत व इरशाद का सिलसिला शुरू था, ज़हन में एक बात खटकती थी कि बग़ैर वालिदैन की इजाज़त कैसे मुरीद हो जाऊँ। क़ल्बी कैफ़ियत में एक उबाल था जिसे लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता। क़ाइदे अहले सुन्नत ने मेरी परेशानी मेहसूस की जैसे पेशानी की लकीरें पढ़ ली हों। इरशाद फ़रमाया : क्या कोई परेशानी है। मेरी आँखें भीक गईं अर्ज़ किया हुज़ूर ! बेअत होना चाहता हूँ क्या वालिदैन की इजाज़त के बग़ैर मुमकिन है। कुरबान जाइये क़ाइदे अहले सुन्नत अल्लामा अरशदुल क़ादरी के अलफ़ाज़ पर जो मेरी ज़िन्दगी का सबसे क़ीमती असासा हैं, इरशाद फ़रमाया : नादान ! जन्नत का सोदा वालिदैन से पूछकर नहीं किया जाता और मैं भी तो तुम्हारा बाप हूँ, (उस्ताद का दर्जा बाप से बढ़ कर है) यह कहते हुए मुझे ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा के क़दमों में डाल दिया। हुज़ूर यह बच्चा रशीदी साहब का है जो अहले सुन्नत के अलमबरदार हैं और नअ़त के ज़ोर गो शाइर भी हैं उनका बच्चा आपकी ख़िदमत में है इसे (मुरीद करके) ग़ौसे आज़म तक पहुँचा दीजिये। मुर्शिदे रब्बानी हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने मेरा हाथ पकड़ा सिलसिलए क़ादरिया में दाख़िल

किया, दुआओं से नवाज़ा, इरशाद फ़रमाया : फ़ारिग़ होकर मसलके आला हज़रत की नशरो इशाअत करना यही कुरआनो सुन्नत का रास्ता है। यह जुमला किया था पूरी ज़िन्दगी का नसबुल ऐन सामने रख दिया। मुझे हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की ज़िन्दगी के उस हिस्से को ज़ब्ते तहरीर करना है जिसका तअल्लुक़ सिर्फ़ कुरआन व सुन्नत से है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ मस्नदे हदीस पर

मैं एक बार बरैली शरीफ़ हाज़िर हुआ, शहज़ादए ताजुश्शरीआ मौलाना मोहम्मद असजद रज़ा ख़ाँ के साथ बाद नमाज़े मग़रिब मुलाक़ात के लिये हज़रत के हुजरे में दाख़िल हुआ, उस वक़्त और भी मुफ़्तियाने किराम मौजूद थे, चन्द लम्हे में हुज़ूर ताजुश्शरीआ अन्दुरूने ख़ाना से अपने हुजरा शरीफ़ में तशरीफ़ लाए, सलाम व क़दम बोसी के बाद मैं भी सफ़ के कनारे बैठ गया। एक मुफ़्ती साहेब ने अरबी इबारत पढ़ी और हज़रत ने हदीसे मुबारक के ख़त्म होते ही पुर सोज़ लहजे में अल्लाहु अकबर ! फ़रमाया और चेहरए मुबारक मिस्ले आफ़ताब हो गया। रिक़्क़त आमेज़ लहजे में फ़रमाया क्या शान है सरकार की। शिफ़ा शरीफ़ की वह हदीस याद आ गई जिसे हज़रत सय्यदना क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने सलफ़े सालेहीन और अमले बिस्सुन्नह के बाब में बयान फ़रमाया है।

हदीस : हज़रते अम्र बिन मैमून रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत सय्यदना इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में था, एक दिन उन्होंने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस बयान की और क़ाला क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कहते हुए उन पे अजीब कैफ़ियत तारी हो गई और चेहरए मुबारक अर्क़ आलूद हो गया। **(शिफ़ा शरीफ़, बाब अव्वल तीसरी फ़स्ल, स. 92)**

और एक रिवायत के मुताबिक़ इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रिवायत करते वक़्त गले की रगें फूल जातीं, आँखें अश्कबार हो जातीं और चेहरे का रंग तब्दील हो जाता।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा दर्से हदीस देते वक़्त सहाबए किराम के मज़हर नज़र आ रहे थे जैसे सरकार का सरापा सामने हो और जलवए ज़ैबा के दीदार की दौलत हासिल हो रही है और दिल एतिराफ़े हक़ीक़त कर रहा है। यही वह आसार हैं जिससे इश्क़े रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जलवागरी हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की ज़ात में जलवा फ़गन नज़र आती है। एक आलिमे रब्बानी की

ज़ात में जिनती ख़ूबी होनी चाहिये हुज़ूर ताजुश्शरीआ की सुब्हो शाम और उनकी मेहफ़िल के दिन व रात में देखने के बाद मिन व अन ऐसी ही नज़र आती है। जैसा कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ौल व फ़ेअ़ल में हम आहंगी बरक़रार रखने की तालीम दी है। क़ौल व फ़ेअ़ल की हम आहंगी इल्म व तक़वा की यक जहती, शरीअत व तरीक़त का हसीन संगम, तन्हाई व मजलिस में यकसानियत देखकर दिल को एतिराफ़ करना पड़ता है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा हर जहत, हर ज़ाविये से आलिमे रब्बानी ही नज़र आते हैं । सुब्हानल्लाह ! ताजुश्शरीआ के इल्मी फ़ैज़ान से सिर्फ़ हिन्द व पाक और बंगलादेश ही नहीं बल्कि पूरी दुनियाए सुन्नियत इस वक़्त मालामाल नज़र आ रही है। इस दौरे पुर फ़ितन में दीन की नश्रो इशाअत करने (दीन को फैलाने) वालों के लिये एक ऐसे अम्र का सामना है जिसे मैं तहरीर करना ज़रूरी समझता हूँ ताकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की शख़्सियत इस्तिक़ामते फ़िद्दीन (दीन पर सख़्ती के साथ क़ाइम रहने) की हैसियत भी उजागर हो जाए। यूरप व एशिया के दीगर ममालिक में भी तसवीर कशी एक आम चलन बनकर रह गई है जिसे चाहकर भी अकसर उलमा इससे बच नहीं पाते। दीनी जल्सों में पूरे प्रोग्राम की मन्ज़र कशी (वीडियो) होती है, उलमा के मना करने के बावुजूद लोग बाज़ नहीं आते, मगर हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा का मोक़िफ़ इस मस्अले पर जो नाजाइज़ होने का है यह सिर्फ़ आपके फ़तवे के हिसार तक महदूद नहीं है बल्कि तसवीर कशी अगर वह क़लम से नाजाइज़ गरदानते हैं तो अपने अमल से भी साबित कर दिखाते हैं। यही वजह है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ जिस महफ़िल में मौजूद होते हैं चाहे वह एशिया की कोई कान्फ्रेंस हो या यूरप का कोई इज्लास, इनकी हैबत लोगों पर कुछ इस तरह तारी रहती है कि बड़े बड़े जरीह भी ग़ैर शरई हरकत की हिम्मत नहीं कर पाते । यह भी हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की इस्तिक़ामते फ़िद्दीन (दीन पर सख़्ती से क़ाइम रहने) की नज़ीर (मिसाल) है। कि अल्लाह तआला बन्दे का उन पर ऐसा रोब तारी कर देता है कि आशिक़े मुस्तफ़ा नेकी का हुक्म देने के साथ बुराई से रोकने की भी तफ़सीर व तनवीर नज़र आता है। इस मक़ाम पर यक़ीन कर लेता है कि ऐसा शख़्स जो दीन पर सख़्ती के साथ कार बन्द रहने वाला हो वह ख़ुदा का सच्चा बन्दा और आलिमे रब्बानी है।

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और इस्लाहे मुआशरा

मौलाना इस्लामुद्दीन रज़वी, कलकत्ता

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़ानवादए इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरैलवी को अज़मतो रिफ़अत से सरफ़राज़ फ़रमाया है, इस अज़ीम ख़ानवादे में ताजदाराने इल्मो फ़न और किश्वराने इश्क़ो इरफ़ान ने अपनी जलालते इल्मी और तफ़क्क़ोह फ़िद्दीन से चार दांगे आलम में ऐसा ग़लग़ला पैदा किया कि आज भी उस जरस की आवाज़ हर चहार सम्त गूंजती हुई नज़र आ रही है। इसमें अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरैलवी (मुतवफ़्फ़ा 1326 हि.) मुफ़्ती मोहम्मद रज़ा ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1938 ई.) मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ाँ बरैलवी (मुतवफ़्फ़ार 1362 हि., 1943 ई.) मुफ़्ती मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1402 हि./1981 ई.) अल्लामा हस्नैन रज़ा ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1401 हि./1981 ई.) मुफ़्ती इब्राहीम रज़ा ख़ाँ (1385 हि./1965 ई.) और हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान मद्दज़िल्लुहुल आली के अस्मां नुमायां हैं।

आख़िरुज़्ज़िक्र मुमताज़ इल्मी फ़िक़ही शख़्सियत हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ां क़ादरी रज़वी मद्दज़िल्लुहुल आली फ़ाज़िल जामेअ अज़हर (मिस्र) मोहताजे तआरुफ़ नहीं, आपके तब्लीग़ी अस्फ़ार, दावतो तब्लीग़ का मिशन और हलक़ए इरादत का दोरा अवामे अहले सुन्नत की इस्लाह और दीन से भटके हुओं के लिये हिदायत की रौशनी हुआ करते हैं। आपने अपनी तक़रीरों, वअ़ज़ो नसीहत और तहरीरों के ज़रीए उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह के लिये वह जोहर और शहपारे उम्मत को दिये हैं वह आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं। इस वक़्त मुतालआ की मेज़ पर हुज़ूर ताजुश्शरीआ की एक गोहरे नायाब किताब आसारे क़ियामत मौजूद है जिससे चन्द अहम इक़्तिबासात (पेराग्राफ़) जो मुसलमानाने आलम के लिये मुर्शिद व हादी की हैसियत रखते हैं आपके सामने पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ।

नमाज़

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो नमाज़ें उनके

वक़्तों पर पढ़ें और उनका वुज़ू कामिल हो और नमाज़ों में क़याम ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ, रुकूअ व सुजूद कामिल तौर पर करे तो उसकी नमाज़ सफ़ेद चमकती हुई निकलती है कहती है अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त करे जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की और जो वक़्त पर नमाज़ न पढ़े और वुज़ू कामिल न करे और न ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ, न रुकूअ व सुजूद तमाम करे तो उसकी नमाज़ निकलती है स्याह अन्धेरी। कहती है अल्लाह तुझे ज़ाए करे जैसा कि तूने मुझे ज़ाए किया यहाँ तक कि जब उस जगह पर पहुँचती है जहाँ अल्लाह चाहता है लपेट दी जाती है जैसे कि पुराना कपड़ा लपेट दिया जाता है फिर उस नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है। **(आसारे क़ियामत, स. 20 मुसन्निफ़ा हुज़ूर ताजुश्शरीआ)**

अमानत : अमानत के मुतअल्लिक़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जला लुहू का इरशादे गिरामी है :

तर्जमा : बे शक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिनकी हैं उन्हें सुपुर्द कर दो। (सूरह निसाअ, आयत 58)

तफ़सीरे ख़ाज़िन में है यह आयत तमाम अमानत को शामिल है तो इसके हुक्म में हर वह अमानत दाख़िल जिसकी ज़िम्मेदारी इन्सान को सोंपी गई और यह तीन क़िस्मों पर है।

पहली क़िस्म : अल्लाह की अमानत को मलहूज़ रखे और यह अल्लाह के अहकाम बजा लाना और ममनूआत (जिन कामों से मना किया गया है उन) से परहेज़ करना है।

दूसरी क़िस्म : बन्दा अपने नफ़्स में अल्लाह की अमानत मलहूज़ रखे और वह अल्लाह की वह नेअमतें हैं जो अल्लाह ने बन्दे के तमाम आज़ा में रखीं हैं। तो ज़बान की अमानत यह है कि ज़बान को झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरह ख़िलाफ़े शरअ़ बातों से महफ़ूज़ रखें और आँखों की अमानत यह है कि मुहर्रिमात (ग़ैर औरतों व हराम कामों) पर निगाह से आँख को बचाए और कान की अमानत यह है कि लग़्व, बेहयाई और झूटी बातें और इसके मिस्ल ख़िलाफ़े शरअ़ बातें सुनने से परहेज़ करे।

तीसरी क़िस्म : बन्दा अल्लाह के बन्दों के साथ मुआमलात में अमानत का लिहाज़ रखे किसी की कोई अमानत हो तो उन लोगों को लौटाना ज़रूरी है जिन्होंने उसके पास यह अमानतें रखीं और उसमें उनके साथ ख़यानत (कम करना, ज़ाए करना, बदलना, इस्तिमाला में लाना) मना है। **(आसारे क़ियामत, स. 21)**

इल्म : हुज़ूर ताजुश्शरीआ इल्म की अहम्मियत के तअल्लुक़ से अल्लामा जलालुद्दीन सयूती अलैहिर्रहमा की किताब अल आलिल मस्नूआ जिल्द अव्वल सफ़ा 205 के हवाले से यूँ लिखते

हैं कि हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इल्म के मुआमले में ख़ैर ख़्वाही से काम लो और कोई किसी से इल्म न छुपाए इस लिये कि इल्म में ख़यानत, माल में ख़यानत से सख़्त तर है (आसारे क़ियामत, स. 25)

रिश्वत : हुज़ूर ताजुश्शरीआ रिश्वत जैसी क़बीह अमल के बारे में लिखते हैं कि कुरआन शरीफ़ में इसकी हुरमत ज़ाहिर है और हदीस शरीफ़ में फ़रमाया : **तर्जमा :** अल्लाह की लअ़नत रिश्वत लेने और देने वाले पर। (मुस्नद इमाम अहमद, स. 387/2)

यानी रिश्वत लेने वाला मुतलक़न लअ़नत का मुस्तहिक़ है और देने वाला भी उसी रस्सी में गिरफ़्तार है जब कि नाजाइज़ काम के लिये रिश्वत दे या बग़ैर मजबूरी के दे और दफ़्ए ज़ुल्म और जाइज़ हक़ को हासिल करने के लिये जब रिश्वत दिये बग़ैर चारा न हो तो यह सूरत मुस्तस्ना (जुदा) है और देने वाला इस वईद (सज़ा) का मिस्दाक़ नहीं। (आसारे क़ियामत, स. 31)

हुक़ूक़े वालिदैन : हुज़ूर ताजुश्शरीआ अज़मते वालिदैन बयान फ़रमाते हुए यूँ लिखते हैं : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की इताअत वालिदैन की इताअत है और अल्लाह की मासियत (ना फ़रमानी) वालिदैन की ना फ़रमानी है। (मजमउज़्ज़वाइद जि. 8, स. 136, आसारे क़ियामत , स. 40) मज़ीद लिखते हैं कि सय्यदना मुहद्दिसे बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : वालिदैन के साथ नेकी सिर्फ़ यही नहीं कि उनके हुक्म की पाबन्दी की जाए और उनकी मुख़ालफ़त न की जाए बल्कि उनके साथ नेकी यह भी है कि कोई ऐसा काम न करे जो उनको ना पसन्द हो अगरचेह उसके लिये ख़ास तौर पर उनका कोई हुक्म न हो । इस लिये उनकी फ़रमांबरदारी और उनको ख़ुश रखना दोनों वाजिब हैं और ना फ़रमानी, नाराज़ करना है। (आसारे क़ियामत, स. 42)

मजमउज़्ज़वाइद जिल्द 8 सफ़ा 137 के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं कि हदीसे पाक में है कि एक सहाबिये रसूल ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! एक राह में ऐसे गर्म पत्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब हो जाता, मैं छः मील तक अपनी मां को अपनी गरदन पर सवार करके ले गया हूँ, क्या मैं ने उसका हक़ अदा कर दिया। सरकार ने फ़रमाया तेरे पैदा होने में जिस क़दर दर्द के झटके उसने उठाए शायद उनमें से एक झटके का बदला हो सके। (आसारे क़ियामत, स. 42)

मर्दों से मुशाबहत : फ़ी ज़माना औरतें लिबास में तौर तरीक़े और क़िस्म

क़िस्म के फ़ैशन में मर्दों से मुशाबहत करने में ज़र्रा बराबर नहीं झिझकती हैं। हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ऐसी औरतों के बारे में लिखते हैं: बिला ज़रूरते सही औरत को घोड़े पर चढ़ना मना है कि यह भी एक क़िस्म का मरदाना काम है। हदीस में उस पर लअ़नत है। इब्ने हब्बान अपनी सही में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मेरी उम्मत के आख़िर में कुछ ऐसी औरतें होंगी जो मर्दों की तरह जानवरों पर सवार होंगी और उसके आख़िर में यह अलफ़ाज़ आए: उन औरतों पर लअ़नत भेजो क्यों कि वह मलऊन हैं। **(आसारे क़ियामत, स. 64)**

मज़ीद आगे तहरीर फ़रमाते हैं: ज़नाने अरब (अरब की औरतें) जो ओढ़नी ओढ़तीं हिफ़ाज़त के लिये सर पर पेच दे लेतीं उस पर यह इरशाद हुआ कि एक पेच दें, दो न दें कि अमामा वाले मर्दों से मुशाबहत न हो जाए क्योंकि औरतों को मर्दों से और मर्दों को औरतों से तशब्बोह हराम है। **(आसारे क़ियामत,स. 65)**

और फ़रमाया: औरत को अपने सर के बाल कतराना हराम है और कतरे तो मलऊन कि यह मर्दों से मुशाबहत है और औरतों को मर्दों से तशब्बोह हराम। दुर्रे मुख़्तार में है कि किसी औरत ने सर के बाल कतर डाले तो गुनाहगार हुई नीज़ अल्लाह तआला की उस पर लअ़नत हुई।

(आसारे क़ियामत, स. 66)

मुहर्रमी कपड़े : आशूरा के मौक़े पर महब्बते हुसैन में लोग क़िस्म क़िस्म के रंग बिरंग कपड़े ख़ुद भी पहनते हैं और बच्चों को भी पहनाते हैं। हुज़ूर ताजुश्शरीआ हुक्मे शरअ़ सादिर फ़रमाते हैं: मुसलमान को चाहिये कि अशरए मुबारका में तीन रंगों से बचे सब्ज़, सुर्ख़, स्याह।

मज़ीद लिखते हैं अशरए मुहर्रम के सब्ज़ रंगे हुए कपड़े भी नाजाइज़ हैं यह भी सोग की ग़रज़ से हैं। **(आसारे क़ियामत, स. 73)**

ग़ैरुल्लाह की क़सम : आज कल बिल ख़ुसूस नौजवान तबक़ा बात बात पर मुख़तलिफ़ चीज़ों की क़सम खाने लगता है जैसे मां क़सम, औलाद क़सम, कुरआन क़सम, मस्जिद क़सम वग़ैरह, इस सिलसिले में हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं : ग़ैरुल्लाह की क़सम, क़समे शरई नहीं। उलमा फ़रमाते हैं कि अगर ग़ैरुल्लाह की क़सम को क़समे शरई जानें और उसका पूरा करना लाज़िम समझे उस सूरत में काफ़िर हो जाएगा।

इमाम राज़ी ने फ़रमाया: मेरी जान की क़सम, तेरी जान की क़सम कहने वाले पर मुझे कुफ़्र का अन्देशा और लोग आम तौर पर यह नादानी में कहते हैं अगर ऐसा न होता तो मैं कहता यह शिर्क है।

(आसारे क़ियामत, स. 77)

आगे लिखते हैं : हदीस शरीफ़ में ग़ैरुल्लाह की क़सम खाने वाले को जो मुश्रिक फ़रमाया गया उससे उस शख़्स का भी हुक्म ज़ाहिर जो यूँ क़सम खाए कि अगर मैं यह काम करूँ तो यहूदी या नसरानी या मिल्लते इस्लाम से बरी व बेज़ार हो जाऊँ, ऐसी क़सम खाना सख़्त हराम बदकाम कुफ्र अन्जाम है।

(आसारे क़ियामत, स. 79)

आख़िर में लिखते हैं अल्लाह तआला तुमको कसरते क़सम से मना करता है और बे बाकी से बाज़ रखता है इस लिये उससे बाज़ रहने में ही परहेज़गारी और तुम्हारी भलाई है। (आसारे क़ियामत, स. 89)

मीरासी मन्सब : जिस दौर से हम लोग गुज़र रहे हैं मज़हबी पेशवाओं या सियासी लीडरान, मदारिस के ज़िम्मेदारान हों या ख़ानक़ाहों के गद्दी नशीन अपना मन्सब को वरासती मन्सब बना चुके हैं । शहज़ादगान (उनकी औलाद) उस अज़ीमुश्शान मन्सब के अहल हों या न हों, लेकिन अपनी ज़िन्दगी में जा नशीनी का ऐलान कर देते हैं। हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा इस बेराहरवी रविश के बारे में यूँ लिखते हैं : मजमउल बिहार में एक हदीस लिखी है जिसका मज़मून यह है कि उससे बढ़कर बड़ा ख़ाइन (ख़यानत करने वाला) कोई नहीं जो ग़ैर अस्हाबे राय (ना अहल) अवाम का मुन्तख़ब अमीर हो। (आसारे क़ियामत, स. 91)

ख़ानक़ाहे बरकातिया की तीन करामतें

शहज़ादए हुज़ूर **अहसनुल उलमा** अलैहिर्रहमह हज़रत शरफ़े मिल्लत **हुज़ूर अशरफ़ मियाँ** साहब क़िब्ला मदज़िल्लुहुल आली फ़रमाते हैं एक बार हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान से किसी ने दरियाफ़्त किया कि हुज़ूर आपकी ख़ानक़ाह के बुज़ुर्गों की कौन कौन सी करामतें हैं, हज़रत ने फ़रमाया कि हमारे ख़ानदान में अपने बुज़ुर्गों की करामतों का ज़्यादा बयान नहीं किया जाता, क्यूँकि हमारे बुज़ुर्ग हमें सबक़ दे गए हैं कि दीन पर इस्तिक़ामत किसी करामत से ज़्यादा बलंद होती है। जब उन साहब ने ज़िद की तो हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने फ़रमाया सुनिये ! माज़ी क़रीब में मेरी ख़ानक़ाह की दो करामतें हैं एक **अहमद रज़ा** और दूसरी **मुस्तफ़ा रज़ा**, वह साहब यह सुनकर हैरान रह गए......

फिर हज़रत शरफ़े मिल्लत फ़रमाते हैं काश ऐसा हो कि हमारी ख़ानक़ाहे बरकात की अगली पीढ़ियाँ अपने ज़माने वालों से कह सकें, सुनो ! माज़ी क़रीब में हमारी ख़ानक़ाह की तीन करामतें हैं **अहमद रज़ा, मुस्तफ़ा रज़ा** और **अख़्तर रज़ा** (तजल्लियाते ताजुश्शरीआ, 284/85

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और फ़रोग़े तालीम

मोहम्मद अबू हुरैरह रज़वी मिस्बाही, रामगढ़ (झारखंड)

आलमे इस्लाम की अबक़री शख़्सियत हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा के फ़रोग़े तालीम को मैंने अपना मौज़ूए सुख़न बनाया है। समझ में नहीं आता कि आख़िर इल्मो फ़न के किन किन पहलुओं का जायज़ा लूँ और किन को नज़र अन्दाज़ करूँ ?

शिकारे माह या तस्ख़ीरे अफ़ताब करूँ
मैं किसको तर्क करूँ किसका इन्तिख़ाब करूँ

बातें ज़्यादा, सफ़हात कम हैं। कायनाते इल्म को आख़िर मुट्ठी में बन्द कौन कर सकता है और वह भी उस वक़्त जब कि ममदूह (ताजुश्शरीआ) के घर का बच्चा बच्चा इल्मो फ़न का कोहे हिमाला हो, पूरा का पूरा घराना इल्मो फ़ज़्ल के ज़ेवर से आरास्ता हो। अन पढ़ों से हमें बहस नहीं। पढ़े लिखे लोगों से पूछ लीजिये हज़रत रज़ा अली ख़ाँ हिन्दूस्तान के किस अज़ीम सपूत का नाम है, हज़रत मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ किस मुतकल्लिमे ज़माना को कहते हैं ? आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी इल्मो फ़न के किस हुज्जत व बुरहान का नाम है, मुफ़्तिये आज़म हज़रत अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ हिन्दूस्तान के किस मुत्तक़ी व मुदब्बिरे आज़म का नाम है ग़रज़ कि ख़ानवादए रज़विया के अफ़राद व अशख़ास (हज़रात) का आप ब नज़रे इन्साफ़ जायज़ा लेते हैं तो हक़ीक़त ख़ुद आपको बताती जाएगी कि अभी जो एशिया व यूरोप में दीनो सुन्नियत की बहारें हैं, मदारिसे अहले सुन्नत की क़तारें हैं और तेरहवीं सदी से लेकर आज तक वह उलमा जिनके वारे नियारे हैं, तक़रीबन सबके सब इन ख़ानवादे के बिल वास्ता या बिला वास्ता संवारे हैं।

आप दुनिया का जायज़ा लेंगे तो आपको बहुत सी ऐसी ख़ानक़ाहें मिल जाएंगी जिनके आबा व अज्दाद (बाप, दादा) और बानी मुबानी ने तो तालीमो तअल्लुम और दीनो सुन्नियत में कारहाए नुमायां अन्जाम दिये मगर आज उनकी मस्नद पर बैठने वालों का हाल यह है कि अरकाने इस्लाम से भी ना आशना हैं, वह दूसरों तक क्या इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाएंगे ख़ुद जब इस्लाम और उलूमे दीनिया से कोसों दूर हैं। आख़िर ऐसा क्यूँ

हुआ ? क्या उनके पास तालीम हासिल करने की राहें मस्दूद (बन्द) थीं, क्या उन्हें शरई मजबूरी ने उलूमे इस्लामिया से ग़ाफ़िल रखा ? बल्कि उनमें पिदरम सुल्तान बुवद का नशा था, जब देखा कि बचपन ही से अपने आबा व अज्दाद (बाप, दादा) की नेक नामी की भीक मिल रही है तो फिर तालीम हासिल करने की क्या ज़रूरत ? सफ़र की तकलीफ़ें और मदारिस से क़ैदो बन्दाना ज़िन्दगी गुज़ारने से क्या फ़ायदा ? बना बनाया फ़ील्ड है, चमकी चमकाई दुकान है, बस इधर मुर्शिदे गिरामी की आँख बन्द हुई उधर जा नशीनी हाथ आई।

मगर वाह रे ताजुश्शरीआ की ज़ाते बा बरकात ! पूरा का पूरा एशिया बल्कि आलमे इस्लाम आपके घराने का मोतक़िद है एक इशारए अबरू पर तन, मन, धन की बाज़ी लगा देने को तैयार है, फ़ैज़ याफ़्तों की ख़ासी भीड़ लगी हुई है, हर तरफ़ से आव भगत हो रही है मगर इन सब को छोड़कर आप इल्म की तरफ़ लपके जा रहे हैं, हिन्दूस्तान में एक से एक रिजाले इल्मो फ़न से इल्मी तश्नगी बुझाने की कोशिश की मगर तश्नगी बढ़ती ही रही है, पढ़ते गए बढ़ते गए, जब ख़ूब पर निकल आए तो परवाज़ के लिये पर तोलने लगे, जामिआ अज़हर से बड़ी, वक़्त की कोई दीनी दर्सगाह नज़र न आई, बस क्या था परवाज़ किया और फिर आलमे इस्लाम की सबसे अज़ीम यूनिवर्सिटी में दाख़िला ले लिया, ख़ूब पढ़ा, वक़्त का सही इस्तिमाल किया, आँखों का तेल जलाया, किताबों में दिमाग़ खपाया, रात को रात न समझा, जब जामिआ अज़हर का नतीजा निकला तो सारे तलबा बिल ख़ुसूस तलबए मिस्र देखकर हैरान व शशदिर रह गए कि एक हिन्द नज़ाद (हिन्दूस्तानी) तालिबे इल्म ने अपने दर्जे में वह नुमायां मक़ाम हासिल किया कि सारे रफ़ीक़े दर्स (क्लास के साथी) जिस मक़ाम को हासिल करने के लिये तरसते रहते हैं, आख़िर एक अज्मी (हिन्दूस्तानी) ने हम अरबों के मुल्क में आकर अपनी शानो शौकत व सतवत का झन्डा कैसे गाड़ दिया ?

इस तरह (ताजुश्शरीआ) जहाँ गए दौरे तालिबे इल्मी ही से अपनी इल्मी धाक बिठाते रहे और एक कामयाब तालिबे इल्म की हैसियत से जाने जाते रहे। आज उन्हीं मेहनतों और मशक़्क़तों का समरा है कि उनके हम पल्ला कोई नज़र नहीं आता। मरजउल उलमा हैं, मरजए अस्हाबे फ़िक़ह व तहक़ीक़ हैं। आइये ज़रा अब उनकी इल्मी मैदान में उनकी कार फ़रमाइयाँ मुलाहज़ा फ़रमाएं।

ताजुश्शरीआ और फ़रोग़े तालीम के तहत बहुत कुछ लिखा जा सकता है, क्यूँकि यह आपकी ज़िन्दगी का एक अटूट हिस्सा है। सफ़र में हों या हज़र में हर जगह इल्मो फ़ज़्ल के जोहर लुटाते रहे, कभी मस्नदे तदरीस पर बैठकर तश्नगाने उलूमे नबविया को सैराब करते रहे, तो कभी

दारुल इफ़्ता को ज़ीनत बख़्श कर हल्लुल मुशकिलात बनते रहे, कभी दुनिया के चप्पे चप्पे में घूम घूम कर उलूमे रज़ा तक़सीम फ़रमाते रहे कभी फ़िक़ही सीमिनार में उलमा की नुमाइन्दगी करके उनके इल्मी तसामुहात पर मुत्तलअ़ फ़रमाते रहे।

ज़बान की बात आई तो ज़बान से और जब सिनाने क़लम की बात निकली तो फिर अपने क़ल्मी जवाहर पारे बिखेर कर वक़्त की ज़रूरत को पूरा करने में लगे रहे। ग़रज़ कि इल्मो फ़न की तमाम मुरव्वजा शाख़ों पर अपना आशियाना बनाकर मौक़ा महल की मुनासिबत से नग़्मा सन्जी करते रहे।

तदरीस के ज़रीए फ़रोग़े तालीम

जामिआ अज़हर से फ़राग़त के बाद हिन्दूस्तान वापस तशरीफ़ लाकर अपने मादरे इल्मी दारुलू उलूम मन्ज़रे इस्लाम में तदरीस के ज़रीए इल्मो फ़ज़्ल के गोहर लुटाने लगे। यह 1967 का आग़ाज़ था बिरादरे अकबर हज़रत अल्लामा रैहान रज़ा ख़ाँ रहमानी मियाँ ने जब आपके तदरीस (पढ़ाने) का निराला अन्दाज़ देखा तो आपको 1979 में सदरुल मुदर्रेसीन के आला ओहदे पर फ़ाइज़ फ़रमा दिया इस तरह आप यहाँ मुसलसल 12 साल तक ख़िदमते दीनो सुन्नियत में लगे रहे और इल्मी ग़लग़ला में अपने बहुत से मुआसेरीन (अपने ज़माने के बड़े उलमा) को पीछे छोड़ दिया।

आपकी तदरीसी धमक हिन्दूस्तान के कोने कोने में महसूस की जाने लगी और तश्नगाने उलूमो मारिफ़त आपकी जानिब रिख़्ख़ते सफ़र बाँधने लगे इस तरह मन्ज़रे इस्लाम आपके एहदे तदरीस (पढ़ाने के ज़माने में) शोहरत व मक़बूलियत के बामे उरूज को पहुँच गया।

चुनाँचे आपकी दर्सगाह से ऐसे ऐसे इल्मो फ़ज़्ल के बादशाह निकले कि आज दुनिया उन्हें सर आँखों पर सजा रही है और दिल में जगह दे रही है। जब दावती और मज़हबी मसरूफ़ियात बढ़ गईं, तब्लीग़ी अस्फ़ार के बग़ैर चारए कार न रहा तो आप दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम से अलेहदा हो गए मगर आपके आलिमाना और रज़वियाना ज़हन ने इस बात को क़बूल न किया कि सिर्फ़ तब्लीग़ी अस्फ़ार (मुल्क और मुल्क से बाहर के दोरों) में लगे रहें और तालिबाने उलूमे नबविया को यकसर नज़र अन्दाज़ कर दें। चुनाँचे आप एक बार फिर अपने काशानए अक़दस में मस्नदे तदरीस को शरफ़ बख़्शा और दर्से क़ुरआन व दर्से बुख़ारी के ज़रीए मज़हबे इस्लाम की नशरो इशाअत करने लगे जिसमें मन्ज़रे इस्लाम, मज़हरे इस्लाम और जामिआ नूरिया के तलबा कसरत से शरीक होकर मुस्तफ़ीद हुए।

जब जामिअतुर्रज़ा (बरैली शरीफ़ में ही) क़ायम हुआ तो वहाँ जाकर आपने तलबा को बुख़ारी शरीफ़ का दर्स देना शुरू किया और एक ज़माना तक तलबा-ए-जामिअतुर्रज़ा को अपने काशानए अक़दस

ही पर दर्स दिया करते थे जिसमें फ़ज़ीलत तख़स्सुस फ़िल फ़िक़ह और इफ़्ता के बच्चों की हाज़री लाज़मी हुआ करती थी इस तरह आप अपनी पीराना साली और ज़ुअफ़ व नक़ाहत (बुज़ुर्गी व कमज़ोरी) के बावुजूद फ़रोग़े तालीमे दीन में लगे रहे।

फ़तावा नवीसी के ज़रीए फ़रोग़े तालीम

1967 ही से जब आपने तदरीसी (पढ़ाने की) दुनिया में क़दम रखा था उस वक़्त से लेकर अख़ीर तक फ़तवा नवीसी का अहम फ़रीज़ा अन्जाम देते रहे, बक़ौल मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी एक अन्दाज़े के मुताबिक़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ के फ़तावा के रजिस्टरों की तादाद 31 से ज़्यादा हो गई है। (हयाते ताजुश्शरीआ, स. 20) जो अपने आप में एक बहुत बड़ा इल्मी कारनामा है। इसके अलावा अपने मदरसे से (जामिअतुर्रज़ा) में मश्क़े इफ़्ता के तलबा को दर्स दिया करते थे और उन्हें दारुल इफ़्ता के इसरारो रुमूज़ सिखाकर फ़तावा नवीसी (फ़तवे देने) के लाइक़ बना दिये। इस तरह फ़रोग़े तालीम और इशाअते सुन्नियत का काम जारी व सारी रहा।

तक़रीर के ज़रीए फ़रोग़े तालीम

दर्सगाहों में तो आपकी ख़ालिस इल्मी व तहक़ीक़ी तक़ारीर होती ही रहती थी, जब जल्सा गाहों में आप पहुँचते थे तो वहाँ भी आप इस्लाम का हक़ीक़ी चेहरा पेश करते क्यूँकि जल्सा गाह मदारिस से जुदा नहीं। अगर मदारिस तलबा के पढ़ने की जगह हैं तो जल्से अवाम के लिये बहतरीन दर्सगाह की हैसियत रखते हैं। चुनाँचे आप इब्तिदा ही से अपनी तक़ारीर के ज़रीए अवाम को सिखाने के दरपे रहे और कुरआनो हदीस की सही तालीमात से रू शनास कराया।

तहरीर के ज़रीए फ़रोग़े तालीम

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा क़लमो क़िरतास की अहमियत के पेशे नज़र वक़्तन फ़वक़्तन किताबें तहरीर फ़रमाते रहे और शरीअते मुतह्हरा की हक़ीक़ी तालीमात पेश करते रहे यहाँ तक कि कसरते असफ़ार (मुल्क व मुल्क से बाहर के दौरे) कसीर दीनी मशाग़िल बल्कि आँखों से माज़ूर होने के बावुजूद इनकी नई नई किताबें अहले इल्म को ज़ोक़े तस्कीन फ़राहम करती रहीं तो अहले इल्म मज़ीद वरतए हैरत में डूबते रहे कि आख़िर इतनी मसरूफ़ियात के बावुजूद किताबी काम के लिये कहाँ से वक़्त निकाल लेते हैं, मैं समझता हूँ कि :

ईं सआदत बज़ोर बाज़ू नीस्त
ता न बख़्शद ख़ुदाए बख़्शिन्दा

आपकी किताबें, किताबों के ढेर में इज़ाफ़े का सबब नहीं बनती बल्कि वक़्त की ज़रूरत को पूरा किया करती हैं और इस्लाम का उजाला लेकर आती हैं। हवाशी, तआरीब, तराजिम और तसानीफ़ की मुख़्तलिफ़ शक्लों में आपकी

किताबों की तादाद पिछत्तर से ज़ाइद हैं।

जामिअतुर्रज़ा

हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने फ़रोग़े तालीम के सिलसिले में अपने तौर पर इल्मी जिद्दो जोहद करने के साथ ही साथ सबसे बड़ा काम यह किया कि एक इल्मी कारख़ाना जामिअतुर्रज़ा खोलकर तालीम की राहें हमवार कर दी हैं जिसमें हर तरफ़ से तश्नगाने उलूमो फुनून जोक़ दर जोक़ आकर अपनी इल्मी तश्नगी बुझा रहे हैं, इसमें महज़ रिवायती तालीम शामिले निसाब नहीं है बल्कि इसका निसाब क़दीम नाफ़ेअ़ और जदीद सालेह का हसीन संगम है।

शरई कोंसिल ऑफ़ इन्डिया

उम्मत को दरपेश जदीद (नए नए) मसाइल के हल के लिये आपने शरई कोंसिल ऑफ़ इडिया क़ाइम किया जिसके तहत अपने आग़ाज़ ही से अब तक बारह सीमिनार का इनइक़ाद हो चुका है।

अब तक तक़रीबन छत्तीस नौ पेद मसाइल का हल तलाश किया जा चुका है। यह काम आपकी सरपरस्ती में हर साल ब हुस्नो ख़ूबी अन्जाम पाता रहा इस तरह आपकी इस तहरीक के ज़रीए चैलेंज के इस दौर में मुसलमानों को जदीद (नए नए) फ़िक़ही मसाइल से आगाह किया जा रहा है

इदारों की सरपरस्ती

आपकी इल्मी व फ़िक़ही दिलचस्पी और बहतरीन क़ाइदाना सलाहियतों के पेशे नज़र हर शख़्स ने आपको सुर्मए निगाह बनाए रखा और आपके सायए करम में रहने को अपने लिये बाइसे इफ़्तिख़ार समझा। यही वजह है कि सैकड़ों तालीमी और तन्ज़ीमी इदारे आपकी सरपरस्ती में चलते रहे और तालीमो तब्लीग़ का यह सिलसिला दराज़ से दराज़ तर होता रहा।

पेश है चन्द तालीमी इदारों की एक फ़ेहरिस्त

(1) जामिआ मदीनतुल इस्लाम हॉलेन्ड (2) मरकज़ुद्दरासातुल इस्लामिया जामिअतुर्रज़ा, बरैली शरीफ़ (3) अल जामिअतुन्नूरिया, बहराइच (4) अल जामिअतुल रज़विया, पटना (5) मदरसा अरबिया ग़ौसिया हबीबिया, बुरहानपूर (6) मदरसा अहले सुन्नत गुलशने रज़ा, धनबाद (7) मदरसा ग़ौसिया जश्ने रज़ा, गुजरात (8) दारुल उलूम क़ुरैशिया रज़विया, आसाम (9) मदरसा रज़ाउल उलूम, मुम्बई (10) मदरसा तन्ज़ीमुल मुस्लेमीन, पुरनिया

इस तरह हज़रत की ज़िन्दगी का मुतालआ करने से पता चलता है कि आपको तालीम से, या तालीम को आपसे जुदा नहीं किया जा सकता।

नोट : इस मज़मून को लिखने में हयाते ताजुश्शरीआ, अनवारे ताजुश्शरीआ, तजल्लियाते ताजुश्शरीआ से मदद ली गई है

***

हज़रत ताजुश्शरीआ

मस्लके आला हज़रत के सच्चे दाई व तर्जमान

अलहाज मोहम्मद सईद नूरी चेयरमेन रज़ा अकेडमी, मुम्बई

जा नशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, ताजुश्शरीआ क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ात, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी अलैहिर्रहमा मेरे हज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की यादगार थे। आप हुज़ूर आला हज़रत और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के इल्मी व अमली वरासत के सच्चे और हक़ीक़ी अमीन थे। अल्लाह तबारक व तआला ने आपके ज़रीए सय्यदना सरकार आला हज़रत व हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के सिलसिले की बड़ी ज़बरदस्त इशाअत की है, ज़मानए हाल और माज़ी क़रीब जिसकी मिसाल पेश करने से क़ासिर है।

मैंने कई मरतबा हज़रत की रिफ़ाक़त का शरफ़ हासिल किया है और ख़िदमत के भी कई मौक़े मयस्सर आए हैं। सरकारे मदीना में हाज़री और उमरों की सआदतों से मैं कई मरतबा हज़रत की मइय्यत में बेहर अन्दोज़ हुआ। मक्कए मुअज़्ज़मा, मदीनए मुनव्वरा और पाकिस्तान वग़ैरह में हज़रत ताजुश्शरीआ की ख़िदमत का ज़र्रीं मौक़ा मिला। मैंने इन मक़ामात पर भी हज़रत के इर्द गिर्द अवाम व ख़वास का वही हुजूम देखा है जो हिन्दूस्तान में देखने को मिलता है। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप मुल्क व बैरूने मुल्क उलमा व अवाम के दरमियान यकसां तौर पर मक़बूल हैं।

शहर मुम्बई में मुहर्रमुल हराम, रबीउल अव्वल शरीफ़ और रबीउल आख़िर के 10, 11 और 12 रोज़ा प्रोग्राम एक ही स्टेज पर हुआ करते थे, उन जल्सों में हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म के विसाल के बाद हुज़ूर ताजुश्शरीआ शिरकत फ़रमाते, उनमें हज़रत का वह इल्मी बयान होता था कि उलमा व ख़वास अश अश कर उठते थे, अफ़सोस उसकी रिकार्डिंग मौजूद नहीं है वर्ना यक़ीनन यह बहुत बड़ा इल्मी सरमाया होता।

सन् 1986 में जब हुज़ूर जा नशीने मुफ़्तिये आज़म हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा हज्जो ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए उस सफ़र में अम्मी जान (अहलिया मोहतरमा) भी आपके साथ थीं, हज़रत को मक्कए मुकर्रमा में गिरफ़्तार कर लिया गया और ग्यारह रोज़ तक क़ैद व बन्द में रखा गया, उस वक़्त रज़ा अकेडमी मुम्बई ने हज़रत की रिहाई के लिये मुल्क

गीर तहरीक चलाई थी और ज़बरदस्त एहतिजाजी सिलसिला शुरू किया था, उस वक़्त के तक़रीबन तमाम अख़बारात में हज़रत की गिरफ़्तारी के ख़िलाफ़ बयानात दिये जा रहे थे, उस मौक़े पर रज़ा अकेडमी मुम्बई के दो रुक्नी वफ़्द ने उस वक़्त के सऊदी कोंसिल से मुलाक़ात करके हज़रत की रिहाई का मुतालबा किया था, उस वफ़्द ने कोंसिल से कहा था कि आख़िर उनका जुर्म क्या है ? उनको गिरफ़्तार क्यूँ किया गया है ? सऊदिया गवर्नमेन्ट ने उन्हें शायद इस लिये गिरफ़्तार किया है कि वह इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी अलैहिर्रहमा के परपोते हैं और हिन्दूस्तान के एक ज़बरदस्त आलिमे दीन और अहले सुन्नत व जमाअत के क़ाइद व रहबर हैं। उस वक़्त सऊदिया हुकूमत के अहल कारों को फ़ेक्स के ज़रीए एहतिजाजी मुरासलात जारी किये जा रहे थे, बर्रे सग़ीर (हिन्दूस्तान, पाकिस्तान) के सुन्नियों में एक अजीब सी बेचेनी पाई जा रही थी, उस ज़माने में हज कमेटी ऑफ़ इंडिया के चेयरमेन अमीन खंडवानी साहब थे, मैं ने उनसे भी मुलाक़ात की और उनसे भी यही कहा कि वह अपने तौर पर हज़रत की रिहाई की कोशिश करें। उन्होंने यक़ीन दिलाया। वहाँ पर एक मौलवी साहब से मुलाक़ात हुई बोले कि मैं अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ की रिहाई का मुतालबा इस लिये करूँगा कि वह एक सुन्नी आलिम हैं। मैंने कहा कि वह सिर्फ़ सुन्नी आलिम ही नहीं बल्कि मुक़्तदाए अहले सुन्नत हैं और हमारे पीर ज़ादा हैं इस लिये हमारी कोशिश और ज़्यादा होनी चाहिये।

रज़ा अकेडमी ने सिर्फ़ इसी पर बस नहीं किया बल्कि मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमों को साथ लेकर इब्राहीम रहमतुल्लाह रोड़ मीनारा मस्जिद के पास एहतिजाजी जल्से का ऐलान भी किया, यहाँ एहतिजाज की तैयारियाँ शुरू हो गईं कि मक्कए मुकर्रमा से फ़ोन पर इत्तिला मौसूल हुई कि हज़रत को हुकूमते सऊदिया ने रिहा करके मक्कए मुकर्रमा से जद्दा रवाना कर दिया है और वह कल जद्दा से मुम्बई पहुँच जाएंगे।

हज़रत के इस्तिक़बाल के लिये कई गाड़ियाँ और बसें जिसमें दारुल उलूम हन्फ़िया रज़विया कुलाबा मुम्बई के तलबा और असातिज़ा थे और भी दीगर हज़रात थे, बस और गाड़ियों के साथ एयरपोर्ट पहुँच गए, इनके अलावा दीगर पीर भाई और अहबाबे अहले सुन्नत भी कसीर तादाद में पहुँच चुके थे। हज़रत ताजुश्शरीआ सुबह की फ़्लाइट से मुम्बई पहुँचे थे। चूँकि अख़बारात वग़ैरह के ज़रीए यह ख़बर आम हो चुकी थी कि हुकूमते सऊदिया ने हज़रत को रिहा कर दिया है और हज़रत फ़लां वक़्त पर मुम्बई पहुँच रहे हैं इस लिये अवाम में से भी कसीर तादाद में लोग पहुँच गए थे।

हज़रत जब मुम्बई पहुँचे तो उनका एक

शानदार इस्तिक़बाल किया गया। मेरे लिये यह बाइसे फ़ख़्र है कि हज़रत मेरे ग़रीब ख़ाना पर तशरीफ़ लाए, हज़रत बहुत थके हुए थे, और सऊदी गवर्नमेन्ट ने हज़रत के हाथों में हथकड़ी भी डाल दी थी। इस लिये उनको आराम की सख़्त ज़रूरत थी। हज़रत से मुलाक़ात के लिये सबसे पहले हज़रत मौलाना सय्यद हामिद अशरफ़ साहब क़िब्ला अलैहिर्रहमा और हज़रत मौलाना ज़हीरुद्दीन ख़ाँ ख़तीबो इमाम इस्माईल हबीब मस्जिद, फूलों का हार लेकर तशरीफ़ लाए मगर चूँकि हज़रत आराम फ़रमा रहे थे इस लिये उनके आराम में ख़लल अन्दाज़ी मुनासिब न समझी गई, मैंने उन हज़रात से कहा कि हज़रत को बेदार न किया जाए इस लिये यह हज़रात हार मेरे हवाले करके वापस हुए।

मुम्बई 13 सितम्बर सन् 1986/1407 हि. को इब्राहीम रहमतुल्लाह रोड़ मुम्बई-3 पर मीनारा मस्जिद के पास रज़ा अकेडमी के ज़ेरे एहतिमाम एक एहतिजाजी जल्सा मुनअक़िद किया गया बल्कि यूँ कह लीजिये कि एक जश्न का इनइक़ाद हुआ जो हज़रत की रिहाई की ख़ुशी में मुनअक़िद हुआ जिसमें मुहद्दिसे कबीर हज़रत अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला मद्दज़िल्लहुल आली और ख़तीबुल हिन्द हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह ख़ाँ आज़मी और दीगर उलमाए किराम शरीक थे। हज़रत ने उस जल्से में ख़ुसूसी ख़िताब फ़रमाया। जब हज़रत ने ख़िताब शुरू किया तो मजमा में बिल्कुल सुकूत (सन्नाटा) तारी था।

हज़रत ने अपने इस ख़िताब में अपनी गिरफ़्तारी की रूदाद बयान फ़रमाई थी और अपना एक शेर भी पढ़ा था :

अर्ज़े तैबा है किस क़दर दिल रुबा
मुझसे पहले मेरा दिल हाज़िर हुआ

हज्जो ज़ियारत

हुज़ूर ताजुश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी ने **पहला हज** 1403 हि., 4 सितम्बर 1983 ई., **दूसरा हज** 1405 हि., 1985 ई., **तीसरा हज** 1406 हि., 1986 ई. में अदा किया, और कई बार उमरह से फ़ैज़ियाब हुए। हर साल रमज़ानुल मुबारक मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में गुज़ारते थे। ज़ियारत रोज़ए नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इश्क़ की शमअ् कभी कभी साल में दो दो बार फ़रोज़ां होती थी और ज़ियारते हरमैन शरीफ़ से मुस्तफ़ीज़ होते थे।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अरबो अजम के दाई

मुफ़्ती गुलाम जीलानी अज़हरी (ख़लीफ़ए ताजुश्शरीआ), जामिआ सुन्निया नागचून, खण्डवा (म.प्र.)

हिन्दूस्तान की मोअ़तबर तारीख़, तारीख़े फ़रिश्ता में है कि निज़ामे दुनिया चलाने के लिये बयक वक़्त 315 औलियाए किराम मौजूद होते हैं, मैं समझता हूँ उन्हीं में से एक हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा हैं।

विलादत : 24 ज़िल क़अ़दह सन् 1362 हि. मुताबिक़ 23 नवम्बर सन् 1943 महल्ला सोदाग्रान बरैली शरीफ़ में हुई। (ताजुश्शरीआ एक जामेअ कमालात शख़्सियत)

आप पैदाइशी ख़ुश नसीब थे इस लिये मशियत ने आपको इल्मी, नसबी और हसबी घराने में जलवा गर किया। आपकी रगों में सिर्फ़ आला हज़रत का ख़ून ही नहीं दौड़ता बल्कि मसामे जिस्म का पसीना भी उलूमे रज़विया की ख़ुश्बू लेकर बाहर आता है

नसब नामा : हुज़ूर ताजुश्शरीआ का सिलसिलए नसब आला हज़रत को दादा व नाना बताते हुए सहाबिये रसूल क़ैस मलिक अब्दुर्रशीद तक जा पहुँचता है।

अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी, बिन इब्राहीम रज़ा, बिन हामिद रज़ा, बिन इमाम अहमद रज़ा, बिन इमाम नक़ी अली ख़ान, बिन इमाम रज़ा अली ख़ान, बिन मौलाना काज़िम अली ख़ान, बिन मौलाना शाह मोहम्मद आज़म ख़ान, बिन मौलाना मोहम्मद सआदत यार ख़ान, बिन शुजाअत जंग मुहम्मद सईदुल्लाह ख़ान बहादुर क़न्धारी, बिन अब्दुर्रहमान ख़ान क़न्धारी, बिन यूसुफ़ ख़ान, बिन दौलत ख़ान, बिन बादल ख़ान, बिन दाऊद ख़ान, बिन बरहेच ख़ान, बिन शरफ़ुद्दीन, बिन इब्राहीम, बिन सय्यदना क़ैस मलिक अब्दुर्रशीद सहाबिये रसूल। (तहक़ीक़ शैख़ अबू मुहम्मद अब्दुल हादी अल क़ादरी, इमाम अहमद रज़ा अकेडमी डरबन साउथ अफ़्रीका)

हुज़ूर ताजुश्शरीआ आला हज़रत की तीसरी और सहाबिये रसूल कीअठारहवीं नस्ल हैं।

तालीम : इब्तिदाई तालीम बरैली शरीफ़ में हासिल की, क़ुरआन शरीफ़ वालिदा माजिदा से और दर्से निज़ामी मन्ज़रे इस्लाम से। आला तालीम के लिये सन् 1963 में जामेआ अज़हर मिस्र तशरीफ़ ले गए यहाँ तीन साल तक कुल्लिया उसूलुद्दीन में रहकर कमाले

इल्म हासिल किया। जामिआ अज़हर दुनिया की क़दीम इस्लामिक यूनिवर्सिटी है जहाँ के पढ़ने वाले अपने आपको अज़हरी लिखने पर फ़ख्र मेहसूस करते हैं मगर 4 मई सन् 2009 में, मैं ख़ुद जामिआ अज़हर में ज़ेरे तालीम था। कुल्लिया दावा के ए. सी. हॉल में एक प्रोग्राम हुआ जिसके बाद आपको अद्दरउल फ़ख्री नाम की चादर उढ़ाकर शैख़ुल अज़हर मोहम्मद सय्यद तनतानवी अलैहिर्रहमा ने फ़ख्रे अज़हर का एवार्ड दिया जब से दुनियाए सुन्नियत हुज़ूर ताजुश्शरीआ को फ़ख्रे अज़हर के नाम से भी याद करने लगी।

दावती सफ़र : ख़ानवादए रज़ा में सबसे ज़्यादा आपने सफ़र फ़रमाया, तमाम सफ़रों में एक मक़सद मुश्तरक था मस्लके आला हज़रत का तआरुफ़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ का सफ़र चाहे मुरीद करने के लिये हो या निकाह पढ़ाने के लिये, मुनाज़रा के लिये हो या जल्सा व कान्फ्रेंस के लिये, यह ज़रूर इरशाद फ़रमाते थे कि मस्लके आला हज़रत ही सच्चा मज़हब है।

शाम (सीरिया) यमन, इराक़, तुर्की, अफ़रीक़ा, सऊदिया, दुबई, मॉरिशियस, लन्दन, पाकिस्तान और श्रीलंका वग़ैरहा ने बारहा आपकी क़दम बोसी की है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ मिस्र में

4 मई सन् 2009 की बात है जब तलबए अज़हर में यह ख़बर मशहूर हो गई कि कल हुज़ूर ताजुश्शरीआ की तक़रीर होगी। यह प्रोग्राम कुल्लिया दावा के ऐ. सी. हाल में था। जब मैं जल्सा गाह में गया तो एक पोस्टर पर नज़र पड़ी जो दीवार पर चिपका हुआ था जिसमें लिखा था **ममनूउत्तस्वीर** यानी हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ज़ात आज भी तस्वीर की हुरमत की क़ाइल है लिहाज़ा कोई साहब फ़ोटो न लें। मगर हुस्न को देख कौन आशिक़ बे क़ाबू नहीं होता। जूँ ही हज़रत प्रोग्राम हॉल में तशरीफ़ लाए तलबा ने फ़ोटो लेना शुरू कर दिया फ़ौरन नक़ीबे जल्सा ने ऐलान किया

ايها المتعلمون لا تتصوروافان التصوير
عند الشيخ حتى الآن حرام

यानी बराए मेहरबानी आप फ़ोटो न लें क्यूँकि हुज़ूर ताजुश्शरीआ के यहाँ तस्वीर कशी आज भी हराम है।

यह ऐलान सुनकर तमाम तलबए अज़हर रुक गए, हॉल में दाएं बाएं कुर्सियों पर अज़हर यूनिवर्सिटी के बड़े बड़े मुफ़्ती और डाक्टर बेठे हुए थे, बीच वाली कुर्सी हुज़ूर ताजुश्शरीआ के लिये ख़ाली थी, आप निहायत ही आलिमाना वक़ार और दाइयाना शानो शौकत के साथ जलवा अफ़रोज़ होते हैं। फ़ुसहाए मिस्र और उलमाए अज़हर की मौजूदगी में फ़सीह अरबी में तक़रीर फ़रमाते हैं, मैं इस सोच में ग़र्क़ हो गया कि इनकी अरबी का यह हाल है तो आला हज़रत अलैहिर्रहमा की अरबी का क्या हाल होगा। ख़ैर।

वहाँ अख़ीर में हुज़ूर ताजुश्शरीआ से एक सवाल हुआ : ماذاالفرقةالبريلوية

यानी बरैलवी किसको कहते हैं ?

हुज़ूर ताजुश्शरीआ फ़रमाते हैं :

نحن قادريون مشربا و ماتريديون عقيدة و حنفيون مذهبا والمخالفون يقولون لنا البريلوية كما يقال اهل السنة والجماعة الصوفية فى حجازودمشق ومصر

यानी पीरी मुरीदी के हिसाब से हम लोग क़ादरी हैं, अक़ीदा के एतिबार से मा तुरीदी हैं, मज़हब के हिसाब से हम लोग हन्फ़ी हैं, मुख़ालिफ़ीन हमें बरैलवी कहते हैं जैसे हिजाज़, दमिश्क़ और मिस्र वग़ैरह में मुख़ालिफ़ीन अहले सुन्नत व जमाअत को सूफ़ी कहते हैं।

बरैलवी, नाम मुख़ालिफ़ीन का दिया हुआ है, यह हमने अव्वलन अल्लामा मोहम्मद अहमद मिस्बाही साबिक़ प्रिंसपल अल जामिअतुल अशरफ़िया मुबारकपूर से सुना था मगर हिजाज़ वग़ैरह में अहले सुन्नत को सूफ़ी कहते हैं यह सुनकर इल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ साहिबे इल्मे लदुन्नी थे

यह भी मिस्र की बात है सन् 2009 में, मैंने मरकज़ फ़ज्र ज्वाइन किया यह क़ाहिरा में सलफ़ियों (ग़ैर मुक़ल्लिदों) का अरबी कोचिंग सेन्टर है । कुर्ता पजामा देखकर सल्फ़ी टीचर समझ गया गुलाम जीलानी सूफ़ी (सुन्नी) है।

सल्फ़ी टीचर ने कहा : ऐ गुलाम जीलानी तुम्हारी नज़र में कोई ऐसा आदमी है जिसके पास इल्मे लदुन्नी हो ? मैंने कहा हाँ है : सल्फ़ी टीचर ने कहा : वह कौन है? मैंने कहा : वह अख़्तर रज़ा अज़हरी हैं, सल्फ़ी टीचर ने कहा : तुम्हें कैसे पता चला, मैंने कहा : वह मग़रिबी ममालिक में उर्दू में तक़रीर कर रहे थे तो लोगों ने कहा : We Cant Not Understand Urdu language please speak in English हुज़ूर हम उर्दू नहीं जानते बराए महरबानी इंगलिश में ख़िताब फ़रमाएं।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने थोड़ी देर ग़ोरो फ़िक्र किया उसके बाद फ़सीहो बलीग़ इंगलिश में तक़रीर फ़रमाई।

यह इस बात की दलील है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ के पास इल्मे लदुन्नी है।

सल्फ़ी टीचर ने कहा : हो सकता है उन्होंने इंगलिश पढ़ी हो, मैंने कहा : उन्होंने इससे पहले कभी इस अन्दाज़ में तक़रीर नहीं फ़रमाई। किसी भी ज़बान का पढ़ना और है और बोलना और। अचानक इस तरह तक़रीर फ़रमाना यह इल्मे लदुन्नी को बताता है।

यह सुनकर सल्फ़ी टीचर ख़ामोश हो गया

नोट : यह वाक़िआ नाचीज़ ने अल्लामा अरशदुल क़ादरी अलैहिर्रहमा की किताब में पढ़ा है। नाम फ़िल वक़्त याद नहीं है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ की हक़ गोई

पोरबन्द गुजरात में आप अकसर दौरा फ़रमाया करते थे मेरी नज़र में यह गुजरात का वाहिद ऐसा शहर है जहाँ के बाशिन्दे सबके सब सुन्नी हैं।

सन् 2000 से 2003 तक नाचीज़ ख़ुद दारुल उलूम ग़ौसे आज़म में अपने मुशफ़िक़ उस्ताज़ मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा अलैहिर्रहमा की मौजूदगी में ज़ेरे तालीम था मुझे कुछ मोअ़तबर लोगों ने बताया जो वहाँ जल्सा में मौजूद थे।

जल्सा शबाब पर था, दौराने तक़रीर एक मुक़र्रिर ने कहा : अशरफ़िया मुबारकपूर सुलह कुल्ली हो चुका है वहाँ अब चन्दा न दें।

जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने ख़िताब फ़रमाना शुरू किया तो अलल ऐलान फ़रमाया : अशरफ़िया कल भी हमारा था, आज भी हमारा है और कल भी हमारा रहेगा इन्शाअल्लाह।

ऐसे ही मुम्बई में तक़रीर के दौरान एक मशहूर ख़तीब ने कहा : असली सय्यद वह है जिनकी रगों के ख़ून से आला हज़रत की महब्बत की बू आती हो। जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ के पास माइक आया तो आपने फ़रमाया : उन्होंने (ख़तीब ने) जो कहा है उसके ज़िम्मेदार वह ख़ुद हैं मैं उससे बरी हूँ।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ पर अल्लाह का ख़ुसूसी फ़ज़्ल था आख़िर उम्र तक आपकी मौजूदगी में कोई ख़िलाफ़े शरअ काम करके आपकी ख़ामोशी को रज़ा का नाम देकर नाजाइज़ फ़ायदा नहीं उठा पाता था।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ का बतज़ इल्मी

तक़रीबन सन् 2016 में बरैली शरीफ़ में सीमिनार चल रहा था, हिन्दूस्तान के अजिल्ला उलमा ब शिमोल अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा, अल्लामा आशिक़ुर रहमान और मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा दाम ज़िल्लहुम आसमाने बरैली के इल्मी उफ़्क़ पर जगमगा रहे थे। ब हैसियते फ़ैसल हुज़ूर ताजुश्शरीआ सीमिनार हॉल में तशरीफ़ लाने वाले थे। फ़ैसले की कॉपी हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर के हाथ में थी, मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहेब अमजदिया घोसी वाले एक अश्काल पेश फ़रमा रहे थे कि ऐसा काफ़िर जो ज़िम्मी हो न मस्तामिन, उस पर हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर ने फ़रमाया, हरबी काफ़िर, जो ज़िम्मी हो न मस्तामिन वह हरबी है। मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहेब ने अर्ज़ किया : उस पर हरबी की तारीफ़ सादिक़ नहीं आ रही है। अब हुज़ूर ताजुश्शरीआ का बतजरे इल्मी देखें आप फ़रमाते हैं : ऐसे काफ़िर को ग़ैर मुसलमानाने ज़माना कहते हैं।

इस पर मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहेब कुछ बोलना चाह रहे थे फिर ख़ामोश हो

गए । शायद हरबी की जगह ग़ैर मुसलमानाने ज़माना से उनका इश्काल दूर हो गया।

दुख़ूले काबा पर एतिराज़ और उसका जवाब

1 शअ़बानुल मुअज़्ज़म सन् 1434 हि. मुताबिक़ 10 जून सन् 2013 बरोज़ पीर 6 बजकर 5 मिनट पर आप काबा शरीफ़ के अन्दर दाख़िल हुए। (ताजुश्शरीआ एक जामेअ कमालात शख़्सियत)

मेरी नज़र में पन्द्रहवी सदी हिजरी की हिन्दूस्तान में यह वाहिद शख़्सियत है जिसे अल्लाह ने अपने घर का मेहमान बनाया।

बाला सोर उड़ीसा में हर साल बड़ी धूम धाम से मुहर्रम के मौक़े पर लोग यादे हुसैन कान्फ्रेंस मनाते हैं। सन् 2015 में नाचीज़ उसका ख़ुसूसी ख़तीब था साथ ही मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा जामिआ अमजदिया घोसी भी थे, शोअरा में असद इक़बाल और रईस कौसर साहेबान थे, हुजरए ख़ास में नाचीज़ ने अपने उस्ताद मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहेब से इल्मी इस्तिफ़ादा करते हुए अर्ज़ किया। हुज़ूर यह बताएं कि अभी कोई मुजतहिद है या नहीं ?

आपने फ़रमाया : नहीं।

नाचीज़ ने कहा : फिर सीमिनार में जो नए मसाइल पास हो रहे हैं वह क्या हैं ?

मुफ़्ती साहेब ने फ़रमाया : यह मजमूई तौर पर इज्तिहादी फ़ैसले हैं । यानी मुफ़्तियों का मजमुआ मजतहिद है।

इसी दरमियान एक साहेब तशरीफ़ लाए और कहा : कुछ लोग यह कह रहे हैं कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ का ग़ुस्ले काबा के लिये जाना यह बद अक़ीदा की दावत क़बूल करना है लिहाज़ा इसका जवाब आप प्रोग्राम में दें। मुफ़्ती साहब ने प्रोग्राम में जवाब देते हुए फ़रमाया :

यह हुकूमती मुआमलात हैं न कि बद अक़ीदा से मवालात। और ऐसे मौक़े पर महज़ इक्तिसाबे फ़ैज़ और बैतुल्लाह से बरकत हासिल करना मक़सूद होता है। बेजा अकाबिरीन की बुराई करना यह ग़ैर मुनासिब है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ का तक़वा

17 रजुबल मुरज्जब सन् 1439 हि. मुताबिक़ 5 अप्रैल सन् 2018 को बाद नमाज़े मग़रबि उर्से तहसीनी से एक दिन पहले नाचीज़ अपने शैख़ हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर की मइय्यत में काशानए हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा महल्ला सोदाग्रान बरैली शरीफ़ में हाज़िर हुआ। मैंने अपने सर की आँखों से यह देखा कि हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर ने निहायत ही आजिज़ी के साथ पीरो मुर्शिद हुज़ूर ताजुश्शरीआ की दस्त बोसी के साथ ही शेहज़ादए ताजुश्शरीआ अल्लामा असजद मियाँ की भी दस्त बोसी की। उस वक़्त नाचीज़ ने अपने शैख़ से यह सीखा

कि पीर घराने का बच्चा बच्चा भी क़ाबिले ताज़ीम होता है जब कि उससे चन्द साल क़ब्ल जामिअतुर्रज़ा में, मैंने यह देखा कि अल्लामा साहब हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ताज़ीम में खड़े हैं और हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा साहब की ताज़ीम में खड़े हैं।

इससे बारगाहे ताजुश्शरीआ में अल्लामा साहब की मक़बूलियत का अन्दाज़ा होता है। बहर हाल नमकीन और चाय से अल्लामा साहब के सदक़े में हमारी ज़ियाफ़त हुई, साथ में मौलाना अबू यूसुफ़ अज़हरी भी थे। बादहू मेरे शैख़ ने अल्लामा असजद मियाँ से नाचीज़ का तआरुफ़ कराया और ख़िलाफ़त की दरख़्वास्त की। वह एक ऐसा लम्हा था जहाँ से इन्सान की ज़िन्दगी करवटें लेती है मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं फ़ना और बक़ा के दरमियान खड़ा हूँ मेरी तक़दीर लिबासे जिस्म में बाहर आने वाली है, अल्लामा असजद मियाँ दरख़्वास्त को हुज़ूर ताजुश्शरीआ की बारगाह में पेश करते हैं और हुज़ूर ताजुश्शरीआ नाचीज़ के सर को ख़िलाफ़तो इजाज़त के ताजे ज़रीं से मुज़य्यन कर देते हैं। वह शब मेरी ज़िन्दगी की शबे मेअराज थी फिर इसके बाद नाचीज़ ने फिर यह नहीं सुना कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने किसी को ख़िलाफ़त दी है इस हैसियत से नाचीज़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ का आख़री ख़लीफ़ा है। फ़लहम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक। ख़िलाफ़त की रात इशा की नमाज़ हम लोगों ने हुज़ूर ताजुश्शरीआ के काशाना पर ही अदा किया आपने भी जमाअत के साथ नमाज़ अदा फ़रमाई जब अल्लामा असजद मियाँ जमाअत से नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाए तो हमने यह अजीब मन्ज़र देखा कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने जमाअत खड़ी होने से पहले अल्लामा असजद मियाँ के चेहरे पर हाथ फेरा, ग़ालिबन आपने अपने इत्मीनाने क़ल्ब के लिये यह किया। बादे जमाअत हम लोग सुनन व नवाफ़िल में मशग़ूल हो गए। जब कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा असजद मियाँ की इक़्तिदा में नवाफ़िल भी जमाअत के साथ पढ़ रहे थे। मैं यह सोच रहा था कि जो शरीअत के ताज हों वह शरीअत के ख़िलाफ़ कैसे कर सकते हैं।

अस्ल मस्अला जानने के लिये बे क़रार था, जब अज़हरी गेस्ट हाउस में अपने शैख़ हुज़ूर मुहद्दिसे कबीर से दरयाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया : तदई के साथ नहीं है यानी नफ़्ल की जमाअत तदाई के साथ नाजाइज़ है, तदाई की मिक़दार 3 से ज़्यादा है और यहाँ 3 से कम थे। नाचीज़ ने यह बहस दर्से निज़ामी में ज़रूर पढ़ी थी मगर अमली शक्ल में देखा नहीं था, मेरे शैख़ ने यह भी फ़रमाया : अगर तुम लोग नहीं होते तो मैं भी शरीके जमाअत हो जाता

यह है हुज़ूर ताजुश्शरीआ का तक़्वा। इस उम्र में जब कि इन्सान तलफ़्फ़ुज़ पर पूरी तरह क़ादिर नहीं होता है तब भी उसकी इन्फ़िरादी नमाज़ हो जाती है मगर क़िरअतुल इमाम लहुल क़िरअत के तहत इमाम की क़िरअत से अपनी नमाज़ की फ़र्ज क़िरअत को अदा करना फ़राइज़ो नवाफ़िल में भी जमाअत की पाबन्दी करना, यह तक़्वा नहीं तो और क्या है।

वाक़िअए ख़िलाफ़त के ठीक तीन महीने पन्द्रह दिन के बाद 6 ज़ुल क़अदह सन् 1439 हि. मुताबिक़ 20 जुलाई सन् 2018 को बरोज़ जुमा बाद नमाज़े मग़रिब 7 बजकर 50 मिनट पर अताए अनवारे मिल्लत हाफ़िज़ अबरार अहमद क़ादरी ख़तीबो इमाम गुलशने मुहम्मदी मस्जिद खण्डवा का नमदीदा आँखें भर्राई हुई आवाज़ में फ़ोन आया कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ का इन्तिक़ाल हो चुका है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मैंने फ़ौरन बरैली शरीफ़ फ़ोन लगाया तो पता चला कि हाँ अभी पन्द्रह बीस मिनट पहले ही हुआ है। इसके बाद पूरा हिन्दूस्तान जैसे मातम कुनां हो, आला हज़रत के बाद मुफ़्तिये आज़मे हिन्द का कोई जवाब नहीं था और मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के बाद हुज़ूर ताजुश्शरीआ का कोई जवाब नहीं है फिर भी हम यह दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें हुज़ूर ताजुश्शरीआ का बदल अता फ़रमाए। आमीन। ***

वारिसे उलूमे इमाम अहमद रज़ा

मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा क़ादरी रज़वी बासनी, ज़िला नागौर लिखते हैं : ताजुश्शरीआ चूँकि वारिसे उलूमे इमाम अहमद रज़ा हैं इसलिये इसकी झलक उनकी तसानीफ़ में भी नज़र आती है वह लिखते हैं और ख़ूब लिखते हैं अरबी ज़बान में भी और उर्दू में भी। फिर ख़ुदा का फ़ज़्ल ही कहिये कि मुल्क और बैरूने मुल्क के मुतअद्दिद सफ़र और आलमी राब्तों के बावुजूद आपने (किताबों की शक्ल में) हमें इल्मी ख़ज़ाने अता फ़रमा दिये। बेशक ऐसे सालेहीन के औक़ात में बरकत होती है। मुमताज़ुल फ़ुक़हा हज़रत अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा साहेब क़ादरी अमजदी दाम ज़िल्लुहुल आली ने बजा फ़रमाया है।

ताजुश्शरीआ के क़लम से निकले हुए फ़तावे के मुताले से ऐसा लगता है कि हम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तहरीर पढ़ रहे हैं। आपकी तहरीर में दलाइल और हवालों की भरमार से यही ज़ाहिर होता है।

(तजल्लियाते ताजुश्शरीआ, स. 432)

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और उनकी महबूबियत

मुफ़्ती शमशाद अहमद मिस्बाही अशरफ़ी, चीफ़ क़ाज़ी, मनावर ज़िला धार (म.प्र.)

इरशादे ख़ुदा वन्दी है :

तर्जमा : बेशक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अनक़रीब उनके लिये रहमान महब्बत कर देगा (सूरह मरयम आयत, 96) यानी अपना महबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उनकी महब्बत डाल देगा।

मालूम हुआ कि मोमिनीन सालेहीन और औलियाए कामेलीन की मक़बूलियते आम्मा उनकी महबूबियत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी, हज़रत सुल्तान निज़ामुद्दीन देहलवी और हज़रत सुल्तान सय्यद अशरफ़ जहांगीर समनानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व दीगर हज़रात औलियाए कामेलीन की मक़बूलियतें उनकी महबूबियत की दलील हैं। **(कन्ज़ुल ईमान मअ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)**

इस आयते करीमा की तफ़सीर हदीसे पाक में भी मौजूद है।

यही वजह है कि अहले हक़ को इब्तिदा में अगरचेह बड़ी मज़ाहमतों का सामना करना पड़ता है, उनके ख़िलाफ़ मुख़ालफ़त के तूफ़ान उमन्ड आते हैं, तरह तरह की तोहमतें लगाकर उन्हें बदनाम करने की कोशिशें की जाती हैं लेकिन आख़िर कार उनकी बेदाग़ सीरत और दिल आवेज़ शख़्सियत दिलों को मोह लेती है। मुख़ालफ़त करने वाले इनके जां निसार साथी बन जाते हैं । बोहतान लगाने वाली ज़बानें उसकी सना गुस्तरी ज़मज़मा सन्ज हो जाती हैं । बादशाह मुल्क फ़तह कर सकते हैं उनके सामने गरदनें ख़म हो सकती हैं लेकिन दिल की नगरी में वह क़दम नहीं रख सकते। यह इनआम अल्लाह तआला सिर्फ़ अपने मक़बूल बन्दों पर फ़रमाता है कि लोगों के दिलों में उनकी महब्बत जा गुज़ीं फ़रमा देता है। **(तफ़सीर ज़ियाउल क़ुरआन)**

उन्हीं मक़बूल बन्दों में सनदुल मुहद्देसीन उमदतुल मुहक़्क़ेक़ीन रईसुल मुतकल्लेमीन ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान साहेब क़िब्ला अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की ज़ाते सतूदा सिफ़ात है जिनकी महब्बत व अक़ीदत अल्लाह तआला ने अरबो अजम के मुसलमानों के

दिलों में ऐसी डाल दी कि अकनाफ़ो अतराफ़े आलम से लाखों लाख अक़ीदत मन्द मुसलमानों का ठाठें मारता हुआ समन्दर मरकज़े अहले सुन्नत बरैली शरीफ़ में आपकी आख़िरी ज़ियारत और नमाज़े जनाज़ा जो फ़र्ज़े किफ़ाया है उसकी अदायगी के लिये आया और फ़ैज़ियाब होकर अपने घरों को बा मुराद लौटा। और मुसलमानों का नारए अक़ीदत मन्दाना **बस्ती बस्ती क़रया क़रया, इल्म का दरिया ताजुश्शरीआ** ऐसा सच साबित हुआ जिसकी तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती।

मुसलमानों से गुज़ारिश है कि आइन्दा भी अपने और अपने अकाबिरीन व मुअज़्ज़ेमीन के लिये इसी क़िस्म के अच्छे बोल बोलते और नारे लगाते रहें ताकि ता दमे वापसी भी अगर मक़बूल हो गए तो समझ लीजिये कि सामाने नजात मिल गए

फ़ैज़ाने नुबुव्वतो रिसालत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने इश्क़ो मोहब्बत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने शरीअतो सुन्नत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने हक़्क़ो सदाक़त का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने इन्साफ़ो अदालत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने जूदो सख़ा का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने हिम्मतो शुजाअत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने तक़वा व तहारत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने इल्मो हिकमत का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने इबादतो रियाज़त का नाम है... ताजुश्शरीआ
फ़ैज़ाने जबलो इस्तिक़ामत का नाम है... ताजुश्शरीआ

वह ताजुश्शरीआ जो सन् 1943 ई. में पैदा हुए और अपने नाना मुफ़्तिये आज़म व वालिदे गिरामी मुफ़स्सिरे आज़म से रूहानी जिस्मानी तरबियत हासिल की और आला हज़रत अज़ीमुल बरकत के दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम से 1963 ई. में सनदे फ़ज़ीलत ली, बादे फ़राग़त आपके वालिद मुफ़स्सिरे आज़म हज़रत इब्राहीम रज़ा ख़ान साहब क़िब्ला ने तीन साल के लिये जामेअ अज़हर मिस्र भेज दिया जहां पर उन्होंने दिल जमई के साथ हदीस और उसूले हदीस में तख़स्सुस (पी.एच.डी) किया और अरबी व अजमी तमाम तालिबाने उलूमे नबविया में शाने इम्तियाज़ी हासिल करके फ़ख़्रे अज़हर का ताजे ज़र्रीं सर पर सजाकर दुनिया के कोने कोने में जाकर और हदीसे उसूल सुनाकर मारिफ़ते ख़ुदा व इश्क़े रसूल का लाफ़ानी जाम पिलाया आप जहां सनदुल मुहद्देसीन उमदतुल महक़्क़ेक़ीन कहलाए वहीं पर

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत व मुफ़्तिये आज़म के सच्चे बा अमल जा नशीन और उनके उलूमो फुनून के सही अमीन भी बने। हक़ गोइ व बेबाकी आपकी अस्ल पूंजी थी, तहक़ीक़ो तदक़ीक़ आपके घर की कनीज़ थी, सब्रो इस्तिक़ामत आपकी फ़ितरते सानिया थी, आपकी याद दाश्त पर कुव्वते हाफ़िज़ा को भी नाज़ था अज़ीमतो रुख़सत में से हत्तल इमकान आपने अज़ीमत को तरजीह दी अपनी तहक़ीक़ पर ज़्यादा तर अपने अकाबिरीन की तहक़ीक़ ही को फ़ौक़ियत दी अगर मगर और बेजा तावीलात से मक़्दूर भर इज्तिनाब करते रहे आप लौ मता लाइम अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर करते रहे आप पाकीज़ा मिज़ाज, सन्जीदा तबीअत, नेक ख़सलत और अख़्लाक़े हसना के नूरानी पैकर थे। आप की ज़ाहिर सूरत हुस्ने यूसुफ़ का अक्से जमील थी आपकी बातिनी सीरत उस्वए मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना की आईनादार थी यही वजह है कि जो आपके मुखड़े को देखता देखता ही चला जाता चूंकि आपकी ज़ाते मुबारका दिलकश दिल नशीं और पुर कशिश व सहर अंगेज़ थी मैं भी कई बार ख़ासकर जामिआ अमजदिया घोसी के संगे बुनियाद और दारुल उलूम नूरी, इन्दौर के शरई कोंसिल बरैली शरीफ़ के फ़िक़ही सीमीनार में इख़्तितामी इज्लास व नशिस्त के हसीन व रूह परवर मौक़े पर उस वक़्त जी भर कर क़रीब से ताजुशअशरीआ के रूहानी पहलू में बैठकर ज़ियारत करके इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल किया। हुज़ूर ताजुश्शरीआ वह अतियए रब्बानी थे कि आप की नसीहत आमोज़ ईमान अफ़रोज़ तक़रीरों से बद अक़ीदा, ख़ुश अक़ीदा हो जाते, इस्यां शिआर, पारसा हो जाते, ग़ाफ़िल, आमिल बन जाते। सच है:

निगाहे वली में यह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

ग़रज़ कि जो आपकी जमाले जहाँ आरा सूरत व दिल आरा सीरत को देखते बर जस्ता ज़ुबान से सुब्हानल्लाह कहते।

सब उन से जलने वालों के गुल हो गए चिराग़
अख़तर रज़ा की शमा फ़रोज़ां है आज भी

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ एक तआरुफ़

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती अख़तर रज़ा ख़ाँ, आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमा के परपोते हैं

आप हुज्जतुल इस्लाम हज़रत हामिद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा के सगे पोते और हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा के सगे नवासे हैं।

आपने इस्लामी दुनिया की सबसे प्राचीन और बड़ी विश्व विद्यालय जामिआ अल अज़हर क़ाहिरा (मिस्र) से तालीम हासिल की। आपने बहतरीन तालीमी रिकॉर्ड और यूनिवर्सिटी टॉप करने पर मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल अब्दुल नासिर के हाथों फ़ख़्रे अज़हर अवार्ड दिया गया, इसी लिये आपके नाम के आगे अज़हरी लिखा जाता है। आपने अरबी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फ़ारसी में इस्लामी फ़िक़्ह पर बहुत सारी किताबें लिखीं और बहुत सारी किताबों का तर्जमा भी किया।

आपने इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से लबरेज़ नातिया दीवान सफ़ीनए बख़्शिश लिखी जिसमें उर्दू अरबी भाषाओं में नातिया कलाम व मनक़बतें हैं।

शरीअते इस्लामिया की हिफ़ाज़त की अज़ीम ख़िदमात की वजह से आपको शरीअत के ताज का लक़ब ताजुश्शरीआ दिया गया।

आपकी प्रसिद्धि का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जॉर्डन की राजधानी ओमान के रायल स्टडीज़ सेन्टर से हर साल जारी होने वाली दुनिया की 500 प्रभाव शाली मुसलमानों की लिस्ट में आप टॉप 25 शख़्सियतों में शामिल रहे जब कि भारत की तरफ़ से प्रभाव शाली शख़्सियत में आप पहले नम्बर पे हैं।

दुनिया भर में आपके करोड़ों मुरीद हैं जो भारत पाकिस्तान बंगलादेश, श्रीलंका, मिस्र मॉरिशियस, दक्षिणी अफ़्रीक़ा, अमेरिका, कनाडा, यूरोपी और अरब देशों में फेले हुए हैं। आपने कई हज और अनगिनत बार उमरह अदा किये। इसी लिये आपको मेहमाने कअ़बा के नाम

से भी याद किया जाता है । आप सिलसिला-ए-क़ादरिया के अज़ीम बुज़ुर्ग सूफ़ी परम्परा के प्रचारक थे।

आपको मुफ़्तिये आज़म फ़िल हिन्द, क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात फ़िल हिन्द,जा नशीने मुफ़्तिये आज़म और नबीरए आला हज़रत की उपाधी से नवाज़ा गया। आपको 36 से ज़्यादा उलूम (Educational Subjects) पर महारत हासिल थी।

आपको उर्दू अरबी फ़ारसी अंग्रेज़ी के अलावा 11 मज़ीद भाषाओं का इल्म था।

आपको आपके नाना हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान, वालिदे मोहतरम मुफ़्ती मोहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान के अलावा हज़रत मौलाना बुरहानुल हक़ साहेब जबलपूर, हज़रत मौलाना सय्यद हैदर हसन साहेब बरकाती मारेहरा शरीफ़ रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन से भी सिलसिला क़ादरिया में ख़िलाफ़त व इजाज़त हासिल थी।

आपने मरकज़ी दारुल इफ़्ता, मरकज़ी दारुल क़ज़ा, शरई काउंसिल ऑफ़ इन्डिया, जामिअतुर्रज़ा इस्लामिक यूनिवर्सिटी की स्थापना की।

आप ऑल इन्डिया जमाअत रज़ाए मुस्तफ़ा बरैली शरीफ़, ऑल इन्डिया सुन्नी जमीअतुल उलमा और इमाम अहमद रज़ा ट्रस्ट के सरपरस्त रहे।

आपके विसाल पर दुनियाभर से ताज़ियत भरे पैग़ाम आए, जिनमें तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोगान, अमीर दावते इस्लामी मौलाना इलयास अत्तार क़ादरी, प्रोफ़ेसर अमीन मियाँ बरकाती, मशहूर नात ख़्वां उवैस रज़ा क़ादरी, पीर साक़िब शामी, हज़रत साक़िब रज़ा मुस्तफ़ाई शैख़ अबू बक्र (केरल), अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी मौलाना शाकिर अली नूरी (मुम्बई), मुफ़्ती निज़ामुद्दीन मिस्बाही (अल जामेअतुल अशरफ़िया) वग़ैरहुम ने ख़ुसूसी ताज़ियत फ़रमाई।

आपकी नमाज़े जनाज़ा में देशभर के सभी राज्यों समेत दुनिया भर के 127 मुल्कों से मुरीदीन और अक़ीदत मन्दों ने शिरकत की जिनकी तादाद क़रीब 1.25 करोड़ से ज़्यादा रही।

आपकी वफ़ात दुनियाए सुन्नियत के लिये अज़ीम ख़सारा है जिसकी भरपाई ना मुमकिन है।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की इन पर रहमत हो और इनके सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। आमीन।

तालिबे दुआ : लारैब मोमिन अली
(पूर्व छात्र – जे.एन. मेडिकल कॉलेज ए.एम.यू अलीगढ़)

✻✻✻

हुज़ूर ताजुश्शरीआ एक दीदावर

पास्बाने क़ौमो मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद हबीब यार ख़ान साहेब क़ादरी (मुफ़्तिये मालवा) शहर इन्दौर

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

सैयिदुल करीम, आक़ाए नेअ्मत, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दर अस्ल दीदावरों के दीदावर हैं, उनके मुआसिरीन अकाबिरीन मशाइख़ीन उलमा व फ़ुज़ला उनकी इज़्ज़त व तकरीम में अपनी पलकें उनके लिये फ़र्शे राह करने में अपनी सआदत यक़ीन फ़रमाते थे।

उनकी कीमिया असर नज़र जिस पर पड़ गई बफ़ज़्लिही तआला, बकरमे हबीबिहिल अअ्ला वह भी अपने मुआसिरीन में दीदावर हो गया।

उन्हीं दीदावराने इस्लाम में नुमायाँ और मुमताज़ मुक़ाम पर फ़ाइज़ हमारे ममदूहे गिरामी क़द्र मोहम्मद इस्माईल रज़ा ख़ाँ उर्फ़ अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अल मारूफ़ बह अल्लामा अज़हरी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की ज़ाते बा बरकात है।

बजा तौर पर अल्लामा अज़हरी, वारिसे उलूमे आला हज़रत, नबीरए हुज्जतुल इस्लाम और शहज़ादए मुफ़स्सिरे आज़मे हिन्द हैं मगर जुम्ला फ़ुयूज़ो बरकात और उलूमो मआरिफ़ का मंबअ् तो उनके मुर्शिदे बरहक़, मुर्शिदे इजाज़तो ख़िलाफ़त उनके नानाजान आक़ाए नेअ्मत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे इस्लाम की ज़ाते गिरामी ही है जिनकी जानशीनी उनके उरूजो इक़बाल और क़ुबूलियते आम्मा और ताम्मा का बाइस है।

उनकी रहलत अहले सुन्नत व जमाअत का अज़ीम नुक़सान है। अल्लामा अज़हरी अलैहिर्रहमह का विसाले पुर मलाल **मौतुल आलिमे मौतुल आलम** का सही मिस्दाक़ है।

ख़ुदाए क़दीरो क़य्यूम, मुसब्बिबुल अस्बाब अज़्ज़ व जल्ल की बारगाहे बुज़ुर्गो बरतर से क़वी उम्मीद है कि वह इस अज़ीम नुक़सान की तलाफ़ी फ़रमाकर अहले सुन्नत व जमाअत के इल्मी व रूहानी मरकज़ुल मराकिज़ में हस्बे दस्तूर यके बाद दीगरे दीदावर पैदा फ़रमाता रहेगा।

माहनामा पैग़ामे रसूल का ख़ुसूसी शुमारा दीदावरे इस्लाम ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अज़हरी अलैहिर्रहमह की बारगाह में नज़रानए अक़ीदत है। मौला तआला इन दीदावरों के सदक़े में माहनामा **पैग़ामे रसूल** को मज़ीद दीदा ज़ैब और मक़बूले ख़ासो आम फ़रमाए आमीन बिजाहिन्निबिय्यिल करीम अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अफ़ज़लुस्सलाति वत्तसलीम ०

हुज़ूर ताजुश्शरीआ

ख़ानदाने उलमा व मशाइख़ के चशमो चिराग़

मुफ़्ती मोहम्मद अनवार अहमद साहब क़ादरी, सरबराहे आला जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, इन्दौर

बुलबुले बिस्ताने मदीना, वारिसे उलूमे आला हज़रत, जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, बदरुत्तरीक़ा, ताजुश्शरीआ, हज़रत मौलाना मुफ़्ती अश्शाह मोहम्मद अख़तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी अलैहिर्रहमा की शख़्सियत पुर कशिश और चेहरा पुर ज़िया था । अल्लाह तआला ने हज़रत ताजुश्शरीआ की ज़ाते मुबारका पर उलूमो अज़हान की तस्ख़ीर और उयूनो अबसार की महबूबियत व मक़बूलियत की नूरी चादर डाल रखी थी कि चेहरए ज़ेबा पर नज़र पड़ते ही देखने वाला देखता ही रहता और यह कहने पर मजबूर होता।

ऐसा कहाँ से लाएं कि तुझसा कहें जिसे

हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा इल्मो अमल, तक़वा व तहारत, ख़ुलूसो लिल्लाहियत व इस्तिक़ामत अलद्दीन व ख़शियते इलाही व इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में व सहाबए किराम व अहले बैते इज़ाम व औलिया ज़विल एहतिराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की अक़ीदत में अस्लाफ़ की यादगार और हुस्ने सूरत व सीरत के पैकरे जमील और अहले सुन्नत व जमाअत की आबरू और वक़ार थे । वह ऐसे हक़ गो आलिमे दीन, मुफ़्तिये शरअ मतीन और शैख़े तरीक़त थे कि इस दौर में दूर दूर तक उनका कोई ममासिल नज़र नहीं आता।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा
(डाक्टर इक़बाल)

हज़रत ताजुश्शरीआ के वालिदे गिरामी

हुज़ूर आला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत मौलाना मोहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान मुफ़स्सिरे आज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैह हैं जो आलिमे बा अमल, मक़बूले ज़माना मुफ़्ती के साथ बा करामत अल्लाह वाले थे। (विलादत 1325 हि. मुताबिक़ 1906 ई., विसाल 1385 हि. मुताबिक़ 1965 ई.)

हज़रत ताजुश्शरीआ के नाना जान

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के शहज़ादा मौलाना शाह मोहम्मद मुस्तफ़ा

रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जो बा करामत वली और आलमे इस्लाम के मुफ़्तिये आज़म और क़ुतबे आलम और पन्द्रहवीं सदी के मुजद्दिद थे। (विलादत सन् 1310 हि. मुताबिक़ 1893 ई., विसाल 1402 हि. मुताबिक़ 1981ई.)

हज़रत ताजुश्शरीआ के दादा जान

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्दे अकबर हुज्ज़तुल इस्लाम मौलाना शाह हामिद रज़ा ख़ान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जो अपने वालिदे गिरामी मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उलूम के वारिस और सच्चे जा नशीन थे। आपकी शख़्सियत बा वक़ार और दीदा ज़ैब थी और आपका चेहरा इस क़दर नूरानी और हसीनो जमील था कि बहुत से ग़ैर मुस्लिमों ने आपका चेहरा देखा और कहने लगे कि यह किसी झूटे का चेहरा नहीं हो सकता और कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। **(विलादत रबीउल अव्वल सन् 1292 हि. मुताबिक़ 1875 ई., विसाल सन् 1362 हि. मुताबिक़ 1943ई.)**

हज़रत ताजुश्शरीआ के परदादा

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आयतुम मिन आयातिल्लाह यानी अल्लाह तआला की निशानियों में से एक निशानी और मोअ़जज़तुम मिन मोअ़जज़ाते रसूलिल्लाह यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मोअजिज़ों में से एक मोअजिज़ा थे, जिन्होंने अल्लाह तआला की अता कर्दा क़ुव्वते इल्मी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इनायत कर्दा बसीरत की वजह से ख़ुलूसो इश्क़ से लबरेज़ तहरीर के ज़रीए रुख़े इस्लाम पर जमी हुई गरदो गुबार को दूर किया और इस्लाम के रुख़े ज़ैबा को साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ कर दिया जिसकी वजह से अरबो अजम के उलमा व मशाइख़ और ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों ने आपको मुजद्दिद माना, कहा और लिखा। **(विलादत सन् 1272 हि. मुताबिक़ सन् 1856 ई., विसाल 1340 हि. मुताबिक़ 1921ई.)**

हज़रत ताजुश्शरीआ के परदादा आला हज़रत के वालिदे मोहतरम

हज़रत मौलाना नक़ी अली ख़ान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों के इमाम व मुफ़्ती व साहिबे तसानीफ़े कसीरा और मुस्तजाबुद्दावात आलिमे दीन थे। **(विलादत सन् 1246 हि. मुताबिक़ सन् 1830 ई., विसाल सन् 1297 हि.मुताबिक़ सन् 1880 ई.)**

हज़रत ताजुश्शरीआ के परदादा आला हज़रत के दादा

हज़रत मौलाना व मुफ़्ती व वली व क़ुतबे वक़्त मौलाना रज़ा अली ख़ान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आरिफ़े कामिल और ख़ुदा

रसीदा बुज़ुर्ग कि चेहरा देखकर तक़दीर का लिखा हुआ पढ़ लेते थे। मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जब पैदाइश हुई तो आपकी गोद में दिया गया तो पोते के चेहरे को देखकर बहुत ख़ुश हुए और अल्लाह के वली और क़ुतबे वक़्त ने फ़रमाया मेरा यह बेटा बहुत बड़ा आलिमे दीन होगा। (विलादत सन् 1224 हि. मुताबिक़ सन् 1809 ई., विसाल सन् 1282 हि. मुताबिक़ सन् 1869 ई.)

गुफ़्तइ ऊ गुफ़्तह अल्लाह बुवद
गरचेह अज़ हुलक़ूमे अब्दुल्लाह बुवद

अल ग़रज़ हज़रत ताजुश्शरीआ मौलाना शाह मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा के आबा व अज्दाद के सिलसिलए नसब का हर बुज़ुर्ग आलिमे दीन व मुफ़्तिये शरअ और अल्लाह तआला का वली है गोया यह कहना बजा होगा कि हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा का ख़ानदान उलमा व मशाइख़ और औलिया का ख़ानदान है इसी इल्मी व रूहानी ख़ानदान के चश्मो चिराग़ और गुले सर सब्द हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा हैं जो आलिमे रब्बानी, मुफ़्तिये शरअ़ शैख़े कामिल और अल्लाह तआला के वली थे।

कैसे कैसे हैं यह अल्लाह के प्यारे निकले
ऐ फ़लक देखो ज़मीं पर भी सितारे निकले
सींचा है इसे ख़ून से हम तश्ना लबों ने
तब जाके इस अन्दाज़ का मैख़ाना बना है

शहरे इश्क़ो महब्बत बरैली शरीफ़ हो, शहरे बरकत व सियादत मारेहरा शरीफ़ हो, विलायत व रूहानियत की राजधानी अजमेरे मुक़द्दस हो, शहरे पाक बलदे करीम, मदीना मुनव्वरा हो, जहाँ भी मैंने देखा है कि हज़रत ताजुश्शरीआ उलमा व मशाइख़ और अवामुन्नास के मरजअ और महबूबे नज़र हैं। जहाँ बैठ गए मेला सा लग गया। मदीनतुर्रसूल में मेरे मुशाहदा की बात है कि हज़रत ताजुश्शरीआ ईलाफ़ तैबा होटल में मुक़ीम थे, मैं हाज़िर हुआ तो देखा कि उस शहरे पाक में भी अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम से हज़रत ताजुश्शरीआ के चेहरए पुर ज़िया की एक झलक पाने के लिये उलमा व मशाइख़ और अवामुन्नास की भीड़ व क़तार लगी हुई है।

ईं सआदत ब ज़ोर बाज़ू नेस्त
ता न बख़्शद ख़ुदाए बख़्शिन्दा

हज़रत ताजुश्शरीआ का वुरूदे मस्ऊद इन्दौर में

मेरी दावत पर हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा इन्दौर तशरीफ़ लाए तो इन्दौर एयरपोर्ट पर तक़रीबन दस हज़ार ख़लक़े ख़ुदा का मेला लग गया। एयरपोर्ट के हुक्काम का बयान है कि इस शान का इस्तिक़बाल हमारे शहर में आज तक इन्डिया के सदर और वज़ीरे आज़म का भी नहीं हुआ। अवामो ख़वास का हर फ़र्द आपके चेहरए पुर ज़िया की एक झलक पाने के लिये बेताब

नज़र आ रहा था। तक़रीबन 150 फ़ोर व्हीलर कारें और जीपें जिस पर झन्डे लगे हुए थे और एक ख़ूबसूरत कार में हुज़ूर ताजुश्शरीआ तशरीफ़ रखते थे और मैं उसी गाड़ी में था और आगे पुलिस की गाड़ी सायरन बजाते हुए पन्द्रह किलो मीटर की दूरी पर मध्य प्रदेश की मरकज़ी दर्सगाह अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़ की जानिब रवाना हुई। ऐसा मन्ज़र था जैसे ममलकते रूहानियत का ताजदार और मुसलमानों का दीनी पेशवा व इमाम शानो शौकत के साथ अपनी ममलकत का दौरा कर रहा हो। ऐसा नज़ारा अब शायद निगाहें न देख पाएंगी।

हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़ में तशरीफ़ फ़रमा हुए, इरशाद फ़रमाया मुझे नमाज़े ज़ोहर अदा करनी है वुज़ू फ़रमाया और बे क़रारी से फ़रमाया कि नमाज़े ज़ोहर का आख़िरी वक़्त क्या है। मैं ने अर्ज़ किया कि अभी नमाज़े ज़ोहर में तक़रीबन 40 मिनट बाक़ी हैं तब आपकी बे क़रारी और बैचेनी का इज़ाला हुआ। यह हाल था हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की नमाज़ की पाबन्दी का।

हज़रत ताजुश्शरीआ का इल्मी मक़ाम

हज़रत अल्लामा अब्दुल मुबीन नोअमानी रज़वी मुबारकपूर रक़्म तराज़ हैं कि ताजुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी अलैहिर्रहमा की ज़ात पूरी जमाअते अहले सुन्नत के लिये मरजअ की हैसियत रखती है, तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन में जो मलका आपको हासिल है यकताए ज़माना हैं। फ़िक़ही जुज़इय्यात नोके ज़बान पर रहते हैं। एक बार जब कि आप जमशेद पूर में तशरीफ़ ले गए थे जनाब अलीमुद्दीन साहब आसवी के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ थे कि एक इस्तिफ़्ता आया, आपने फ़ौरन उसका जवाब इरक़ाम फ़रमाया और मुतअद्दिद फ़िक़ही इबारात से भी मुज़य्यन फ़रमाया और दस्तख़त करके हवाले कर दिया जब कि कोई किताब सामने न थी। **(हयाते ताजुश्शरीआ)**

मुफ़्तिये आज़म के हैं क़ायम मुक़ाम व जा नशीं
चश्मए फ़ैज़े रज़ा बिल यक़ीं अख़्तर रज़ा

अजमेरे मुक़द्दस का वाक़िआ

हिन्द के राजा हमारे ख़्वाजा अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती संजरी सुम्मा अजमेरी हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उर्से मुबारक के मौक़े पर रज़वी मन्ज़िल में उर्स की तक़रीब का जल्सा हो रहा था जिसमें शहज़ादए आला हज़रत वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आज़म, हज़रत अल्लामा मौलाना मोहम्मद अख़तर रज़ा ख़ान साहेब क़िब्ला क़ादरी अज़हरी अलैहिर्रहमा तशरीफ़ फ़रमा थे और आरिफ़ बिल्लाह, वलिये कामिल, हज़रत मौलाना शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी

अलैहिर्रहमा भी तशरीफ़ फ़रमा थे और राक़िमुल हुरूफ़ अनवार अहमद क़ादरी भी मजलिस में हाज़िर था, मजमा ख़ूब था। एक मुक़र्रिर साहेब ने दौराने वअ़्ज़ फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा साहेब ने पूरे अना सागर के पानी को अपने प्याले में भर लिया था। जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्याले का यह आलम है तो हमारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की काली कमली वाले का आलम क्या होगा। तो हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया : मौलाना काली कमली न कहें बल्कि चादरे नूर कहें या चादरे रहमत फ़रमाएं। हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की इस्लाह को सब ने सुना और अल्लाह के वली आलिमे रब्बानी हुज़ूर बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने भी सुना और हुज़ूर बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने तहक़ीक़ की तो पता चला कि कमली कम्बल की तस्ग़ीर है और तस्ग़ीर का लफ़्ज़ सरकारे आज़म मुस्तफ़ा जाने रहमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह के लिये मोज़ू नहीं है, अदब के ख़िलाफ़ है। उस वक़्त बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया था कि जहाँ उलमा की नज़र नहीं जाती है वहाँ भी हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की नज़र पहुँच जाती है। यक़ीनन हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा उलूमे आला हज़रत के सच्चे वारिस हैं।

आला हज़रत मुफ़्तिये आज़म के इल्मी फ़ैज़ से
रज़ा का फ़ैज़ान है अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी

इन्दौर का वाक़िआ

राक़िमुल हुरूफ़ अनवार अहमद क़ादरी ने एक किताब तरतीब दी थी, दुआओं का मजमुआ आबे रहमत, जिसमें एक शेर था :

अमल से ज़िन्दगी बनती है, जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

यह शेर डाक्टर इक़बाल का है, एक आलिम साहेब ने इस शेअर पर एतिराज़ किया कि यह शेर हदीस के ख़िलाफ़ है। उस वक़्त शहज़ादए आला हज़रत वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आज़म हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा आँख के इलाज के सिलसिले में इन्दौर तशरीफ़ लाए हुए थे और हज़रत का क़याम हज़रत नूरी बाबा साहेब के मकान पर था। राक़िमुल हुरूफ़ किताब को लेकर हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मेरे साथ हज़रत मौलाना नूरूल हक़ साहेब क़िब्ला नूरी भी थे। हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा को किताब दिखाया और इस शेर के बारे में अर्ज़ किया कि यह शेर डाक्टर इक़बाल का है और इस शेर पर एतिराज़ हुआ है कि यह शेर हदीस के ख़िलाफ़ है। हज़रत ने शेर पढ़ा :

अमल से ज़िन्दगी बनती है, जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

तो हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने

बर जस्ता फ़रमाया कि यह शेर तो हदीस शरीफ़ के ऐन मुताबिक़ है और फ़ौरन हदीस शरीफ़ भी पढ़ना शुरू कर दिया : कुल्लु मौलूदिन यूलदु अलल फ़ितरति यानी हर बच्चा सादा पैदा होता है और फ़रमाया कि लोग ग़लती करते हैं इस्लाम बढ़ाकर पढ़ते हैं, अला फ़ितरतिल इस्लाम नहीं है बल्कि सिर्फ़ अलल फ़ितरति है।

और फ़रमाया कि बुख़ारी शरीफ़ लाइये मैं अस्ल हदीस दिखा देता हूँ उसके फ़लां सफ़ा पर फ़लां सतर पर हदीस मौजूद है।

और हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने यह भी फ़रमाया कि मैंने ज़मानए तालिबे इल्मी में इस किताब को पढ़ा था जो आज तक याद है। दारुल उलूम नूरी से बुख़ारी शरीफ़ लाई गई हज़रत ताजुश्शरीआ ने फ़रमाया फ़लां बाब है, फ़लां सफ़ा है, फ़लां सतर है। उसी बाब में उसी सफ़े पर उसी सतर पर हदीस शरीफ़ मिली। **(सहीहुल बुख़ारी, स. 181/1)**

यह शान थी हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा के इल्मी मक़ाम की और किस क़दर आपका इल्मी मरतबा बलन्द व अरफ़अ था कि हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा को वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आज़म और जा नशीने मुफ़्तिये आज़म के लक़ब से मुलक़्क़ब किया गया। यह इल्मी मक़ाम व मरतबा था वारिसे उलूमे आला हज़रत हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा का

वारिसो आशनाए उलूमे रज़ा
रब ने तुम को किया शाह अख़्तर रज़ा

हज़रत ताजुश्शरीआ हक़ गो आलिमे रब्बानी थे

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है :

तर्जमा : तुम लोग बहतरीन उम्मत हो जो इन्सानों के लिये बनाए गए हो ताकि लोगों को नेकी का हुक्म दो और बुराइयों से रोको। **(पारा 4, रुकू 2)**

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है :

तर्जमा : तुम में से जो कोई बुराई देखे तो उसको अपने हाथ से बदल डाले, अगर हाथ से बदलने की ताक़त न रखता हो तो ज़बान से उसकी बुराई बयान करे और अगर इसकी भी ताक़त न हो तो दिल में उसको बुरा जानें और यह ईमान का कमज़ोर दर्जा है **(कन्ज़ुल उम्माल, स. 105/3, मुस्लिम स. 49 व रियाज़ुस्सलेहीन, स. 65)**

हज़रात ! क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला ने और हदीसे तैय्यिबा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिस क़दर हक़ पर रहने और हक़ बोलने की ताकीद फ़रमाई है उसी क़द्र अवामुन्नास तो ग़ाफ़िल हैं ही ख़वास का तबक़ा उलमा, अइम्मा और पीरो मुर्शिद कहलाने वाले हज़रात भी हक़ बोलने के फ़र्ज़े मन्सबी से ग़ाफ़िल नज़र आते हैं।

अगर हक़ के कहने की तुम ताक़त नहीं रखते
समझ लो दहर में फिर तुम कोई इज़्ज़त नहीं रखते

मगर दुनिया के इसी रंगो बू में अल्लाह तआला के कुछ ऐसे पसन्दीदा बन्दे होते हैं

जिनको अल्लाह तआला अपना ख़ास बना लेता है तो अल्लाह के वली व दोस्त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाइब व वारिस होते हैं। अल्लाह तआला के उन्हीं ख़ास बन्दों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाइबों, वारिसों में हज़रत ताजुश्शरीआ मुफ़्ती मौलाना शाह मोहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा नज़र आते हैं। हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने हमेशा इस्लाम व सुन्नियत का अलम उठाए रखा और लौमता लाइम व किसी के नाराज़गी के ख़ौफ़ के बग़ैर हक़ व सच को ज़ाहिर किया। उलमा हों या मशाइख़, ख़ानक़ाह वाले हों या मदरसे वाले, या अवामुन्नास सबको शरीअते मुस्तफ़ा समझाते रहे और हक़ क्या, बातिल किया है बताते रहे। जिसको तौफ़ीक़े इलाही मिली उसने माना और जिसको तौफ़ीक़े इलाही नहीं मिली उसने नहीं माना। कोई माने या न माने, हज़रत ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने इसकी कभी भी परवाह नहीं की। हक़ बताने और सच समझाने पर आपको गालियाँ दी गईं, बुरा भला कहा गया मगर आप पर लाखों सलाम हों, आपको जो कहना था कह दिया, हक़ ज़ाहिर कर दिया गोया यह कहते हुए वासिले इलल्लाह हो गए कि मेरा जनाज़ा फ़ैसला कर देगा कि हक़ पर कौन है। कमो बेश एक करोड़ सुन्नी मुसलमान और एक लाख से ज़ाइद उलमा और तलबा ने आपके नमाज़े जनाज़ा में शिरकत की, आपके मुख़ालिफ़ीन शर्मिन्दा हैं और अल्लाह तआला का ख़ास बन्दा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नाइब और आला हज़रत का शहज़ादा, आलिमे रब्बानी, हज़रत ताजुश्शरीआ मौलाना शाह मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी हक़ पर हैं और हक़्क़ो सदाक़त का परचम लहराते हुए हक़ व ईमान के साथ 6 ज़िल क़अ़दह सन् 1439 हि. मुताबिक़ 20 जुलाई सन् 2018 बरोज़ जुमअए मुबारका, नमाज़े मग़रिब के लिये वुज़ू फ़रमाया, अज़ाने मग़रिब शुरू हुई अज़ान का जवाब देते हुए अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहते हुए दुनिया से रुख़सत हुए और वासिले इलल्लाह होकर ख़ुल्द में पहुँच गए।

आईने जवां मरदां हक़ गोई व बे बाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रू बाही

गुबारे राह से कह दो सभाले निशाने क़दम
ज़माना ढूँढेगा उनको रहबरी के लिये

जिस तरह बे मिसाल है अख़्तर रज़ा की ज़ात
उस तरह बा कमाल है अख़्तर रज़ा की बात

फ़लके रज़ा का अख़्तरे कामिल है दोस्तो
किस दर्जा पुर ज़िया है अख़्तर रज़ा की ज़ात

नग़मा रज़ा का गूंजे क्यूँ न दहर में
फ़िक्रे रज़ा की बय्यिन है अख़्तर रज़ा की बात

हुज़ूर ताजुश्शरीआ बे ताज बादशाह

अज़ – हज़रत अल्लामा मौलाना डॉक्टर मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल अलीम साहेब रज़वी, इन्दौर

नबीरए मुजद्दिदे आज़म, नवासए सय्यिदी सरकार मुफ़्तिये आज़म, शेहज़ादए मुफ़स्सिरे आज़म ताजुश्शरीआ बदरुत्तरीक़ा हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी बरकाती अज़हरी अलैहि रहमतो रब्बिहिल क़वी की शख़्सियत किसी क़िस्म के तआरुफ़ की मोहताज नहीं है। अवामो ख़वास अहले सुन्नत आपकी ज़िन्दगी में ही "बस्ती बस्ती क़रया क़रया ताजुश्शरीआ ताजुश्शरीआ" का जो नारा लगाते थे वह ग़लत नहीं बल्कि बिल्कुल सही और दुरुस्त था। आपके विसाल के बाद हर बस्ती और हर गांव से आशिक़ाने ताजुश्शरीआ का हुजूम बरैली शरीफ़ की धरती पर एक सैलाब की तरह उमड पड़ना और आपकी नमाज़े जनाज़ा के वक़्त एक करोड़ से ज़्यादा इन्सानों का जमा हो जाना इसका वाज़ेह सुबूत है।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा बेशुमार ख़ूबियों के मालिक और बयक वक़्त कई ख़ुसूसियात के हामिल थे। जहाँ आप बलन्द पाया मुफ़स्सिरे क़ुरआन और माया नाज़ मुहद्दिस थे, वहीं एक तजरबा कार मुफ़्ती और बे नज़ीर फ़क़ीह भी थे। फ़ुक़हाए किराम आपके फ़तावा देखकर दादे तहसीन पेश करते हैं। आप अपने वक़्त के अज़ीम मुहक़्क़िक़ थे वहीं आप एक बलन्द पाया शाइर भी थे। आपकी इल्मी और तहक़ीक़ी तहरीरें पढ़कर मुहक़्क़ेक़ीन तारीफ़ किये बग़ैर नहीं रहते।

हमने सैयिदी सरकार मुफ़्तिये आज़म अलैहिर्रहमा का दीदार किया है उनकी ज़िन्दगी के शबो रोज़ देखे हैं और अवामे अहले सुन्नत को आपका इस्लाह करना भी देखा है, सैयिदी सरकारे मुफ़्तिये आज़म हमेशा मुसलमानों की इस्लाह फ़रमाते, इस्लामी अहकाम पर अमल करने और अल्लाहो रसूल की इताअत करने की नसीहत फ़रमाते रहते थे, अगर आप इस एतिबार से देखेंगे तो हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा सैयिदी

सरकार मुफ़्तिये आज़म के सच्चे जा नशीन थे दुनिया ने आपको इस्लाहे उम्मत करते देखा है । आप सच्चे आशिक़े रसूल थे आपका नातिया कलाम इस बात का शाहिद और आपकी पूरी ज़िन्दगी सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आईना है।

ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा करोड़ों इन्सानों के दिलों पर राज करने वाले बेताज बादशाह थे और दुनिया देख रही है कि आप आज भी लोगों के दिलों पर हुकूमत कर रहे हैं। सुनने में आया है कि विसाल के बाद से अब तक सुब्हो शाम और रात दिन आपके मज़ार पर ज़ाइरीन का तांता लगा हुआ है, आने वालों की भीड़ कम होती नज़र नहीं आती।

यह सही है कि आज आप हमारे दरमियान मौजूद नहीं हैं लेकिन आपके दीनी, इल्मी अदबी और तहक़ीक़ी कारनामों की बदौलत आपका नाम रहती दुनिया तक बाक़ी रहेगा। अब ज़रूरत इस बात की है कि आपके इल्मी, दीनी, अदबी, तहक़ीक़ी और आपके मिल्ली व समाजी कारनामों को आम से आम तर किया जाए, अवामे अहले सुन्नत को आपकी तालीमात से रूशनास कराया जाए ताकि दुनिया उनसे फ़ैज़ियाब हो सके

यह सुनकर बड़ी मसर्रत हुई कि बिरादरे तरीक़त हामिये दीनो सुन्नियत नाशिरे मस्लके आला हज़रत हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी बरकाती मद्दज़िल्लहुल आली, एडीटर माहनामा पैग़ामे रसूल (इन्दौर) अपने रिसाले का "ताजुश्शरीआ नम्बर" निकाल रहे हैं जिसमें मुल्को मिल्लत के मशाहीर साहिबाने इल्मो क़लम की अहम निगारिशात शामिल होंगी । रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला अपने महबूबे अकरम सल्लल मौला तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल हज़रत हाफ़िज़ साहेब क़िब्ला की उम्र दराज़ फ़रमाए इनकी इस ख़िदमत को अपनी बारगाहे करम में शरफ़े क़बूलियत से सरफ़राज़ फ़रमाए, दीनो सुन्नियत की मज़ीद ख़िदमात अन्जाम देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और माहनामा पैग़ामे रसूल को दिन दूनी रात चोगनी तरक़्क़ी अता फ़रमाए । आमीन या रब्बल आलमीन बिजाहि हबीबिका सय्यिदिल मुरसलीन सलावातुल्लाहि तआला व सलामुहू अलैहि व अलैहिम व अला आलिहिम व अस्हाबिहिम अजमईन व अला म न तबिअहुम ब अहुम इला यौमिद्दीन

गदाए मुफ़्तिये आज़मे हिन्द

मोहम्मद अब्दुल अलीम रज़वी

ख़ादिमे तदरीस दारूल उलूम नूरी, इन्दौर

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और तालीक़ाते बुख़ारी

हज़रत अल्लामा मुहम्मद आरिफ़ साहब क़ादरी बरकाती, एडीटर : सेहमाही जामे तर्बियत, इन्दौर

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

नहमदुहू व नुसल्ली व नुसल्लिमु अला हबीबिहिल करीम व अला आलिही व अस्हाबिही अजमईन 0

अल्लाह तबारक व तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अता फ़रमा देता है। यह जुम्ला इरशादे रसूल का तर्जमा है : **(बुख़ारी शरीफ़, स. 16/1)**

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत ताजुश्शरीआ को इस मख़सूस मंसबे जलील के लिये चुन लिया था वह एक वक़्त में औसाफ़े कसीरा से मुत्तसिफ़ थे, आलिम थे तो आलिमे रब्बानी, मुफ़्ती थे तो मुफ़्तिये लासानी बल्कि बज़्मे इफ़्ता के सदरुस्सुदूर थे। फ़िक़ही जुज़इय्यात व कुल्लियात पर उन्हें कमाल हासिल था।

बरीं बिना इन्हें अपने और बेगाने सब वारिसे उलूमे आला हज़रत तसलीम करते थे हाफ़िज़े की पुख़तगी, मसाइल के इस्तिहज़ार और तस्ख़ीरे कुलूब में वह अपने दादा हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम और नाना हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द की ज़िन्दा तस्वीर थे। हसीन सूरत अपने दादा से पाई तो ख़ल्क़े ख़ुदा की ख़िदमत और मस्लके आला हज़रत की तर्वीजो इशाअत में अपने नाना के नक़्शे क़दम पर थे। फ़हमे हदीस और शरह हदीस में उन्हें अपने अस्लाफ़ से वाफ़िर हिस्सा मयस्सर आया। उनकी हदीस दानी, सुख़न संजी और नुक्ता आफ़रीनी को अहले इल्म ख़ास तौर पर जानते थे।

आमदम बरसरे मतलब : बुख़ारी शरीफ़ कुतुबे अहादीस में जिस दर्जे पर फ़ाइज़ है अहले इल्म इसे अच्छी तरह पहचानते हैं बल्कि दीनदार अकसर अवाम भी इस बात से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, यही वह किताब है जिसको रूए ज़मीन पर क़ुरआने करीम के बाद सबसे ज़्यादा पज़ीराई हासिल है।

अहादीस की किताबें हों या किसी दूसरे फ़न की ज़मानए क़दीम से इनके हवाशी (मुख़्तसर वज़ाहत) और शुरूह (तवील वज़ाहत) लिखे जाने का दस्तूर चला आ रहा है और यह काम माहिरीने फ़न का होता है हर कोई इस जाँगुसल और सब्र आज़मांवादी में क़दम नहीं रख सकता। इस काम को वही हाथ लगा सकता है जो फ़न में यदे तूला रखता हो।

हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में बुख़ारी शरीफ़, दर्से निज़ामी के दर्जए फ़ज़ीलत में दाख़िल है। लिहाज़ा हमारे यहाँ के हर फ़ाज़िल को बुख़ारी शरीफ़ पढ़ना लाज़िम है।

हिन्दुस्तान में बुख़ारी शरीफ़ का जो नुस्ख़ा उमूमन पाया जाता है इस पर मुहद्दिस सहारनपुरी मौलाना अहमद अली हनफ़ी का रक़मकर्दा हाशिया मौजूद है, इनकी शख़सियत और अन्दाज़े बयान के बारे में मुहक़्क़िके मसाइले जदीदा हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन मिस्बाही साहब क़िब्ला अपने मोहतात अंदाज़ में लिखते हैं कई जगह मुहद्दिसे सहारनपुरी बात को वाज़ेह नहीं करते, खरे खोटे में तमीज़ नहीं करते, बात को ऐसा गाभन रखते हैं कि हर चलने वाला इसी में अपनी मरज़ी की राह तलाश कर लेता है इनकी शख़्सियत में ऐसा इब्हाम पैदा हो गया जैसाकि नुसूस के अन्दर होता है फिर भी हम इनके बारे में बुरा गुमान नहीं रखते और न ही यह शरअन जाइज़ है। वह एक आलिमे नबील और मुहद्दिसे जलील हैं। अहले सुन्नत में इनका शुमार है लेकिन उनकी शख़्सियत हमारे लिये सनद और हुज्जत नहीं क्यूँकि वह इख़्तिलाफ़ी मुआमलात में हक़ बयान करने में मुतसाहिल वाक़ेअ् हुए हैं। **(अहवालुल मुहद्दिस अस्सहारनपुरी, ज़मीमए बुख़ारी, स. 37)** बुख़ारी शरीफ़ के मोहश्शी और उनके हाशिये की बयान कर्दा तफ़्सील से यह बात बिल्कुल ज़ाहिर हो जाती है कि यह हाशिया अहले सुन्नत को किफ़ायत नहीं कर सकता, एक सुन्नी तालिबे इल्म या आलिमे दीन जब इसकी तरफ़ रुजूअ् करेगा तो कई मर्तबा उसकी तबीअत सैराब नहीं होगी और वह उलझकर रह जाएगा।

भला हो जामिआ अशरफ़िया की मज्लिसे बरकात का कि उन्होंने इस ज़रूरत को महसूस किया और ज़रूरत को पूरा करने की सूरत पैदा की, महसूस तो बहुतसों ने किया होगा लेकिन इस तरफ़ इक़दाम कोई न कर सका। इक़दाम सिर्फ़ मजलिसे बरकात ने किया। मजलिसे बरकात के मुदीर अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही सा. क़िब्ला के महसूसात को इन्हीं से सुनिये आप लिखते हैं

मुहद्दिस सहारनपुरी के हवाशी अपनी इल्मी ग़ज़ारत और फ़वाइद की कसरत के बावुजूद कई मुक़ामात पर शरह व ईज़ाह के मोहताज थे तो दूसरे मुक़ामात पर इन्हें इस्लाह की भी ज़रूरत थी।

नज़रे इंतिख़ाब : अब मजलिसे बरकात को एक ऐसी शख़्सियत की ज़रूरत पैश आई जो इस काम को बहुस्नो ख़ूबी अंजाम दे सके। जामिआ अशरफ़िया जो गुलशने हाफ़िज़े मिल्लत है, यहाँ इल्मो आगही के फूल कसरत से पाए जाते हैं। इस शहरे इल्म के मतलअ् से तुलूअ होने वाले दरख़शिन्दा आफ़ताब एक जहान को अपनी किरनों से मुनव्वर कर रहे हैं यहाँ आलिम भी हैं, फ़ाज़िल भी हैं, मुफ़्ती व मुहक़्क़िक़ भी हैं, मुहद्दिस और फ़क़ीह भी हैं। इस सबके बावुजूद मजलिसे बरकात यह अहम काम अपने किसी फ़रज़न्द के हवाले नहीं करती बल्कि उसे किसी और शख़्सियत की तलाश है।

मेरे ख़याल में इस काम को और भी अफ़राद कर सकते थे लेकिन यह काम

उन्हीं करने वालों के मेअ्यार का होता। मजलिसे बरकात ने ज़रूर यह सोचा होगा अगर यह काम वह ज़ाते सितूदा सिफ़ात करे कि जिनकी रगों में इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरैलवी, हुज्जतुल इस्लाम, मुफ़्तिये आज़म और जीलानी मियाँ का ख़ून गर्दिश कर रहा हो तो इसका मेअ्यार अलग होगा।

लिहाज़ा मजलिसे बरकात की नज़र उठी और हज़रत ताजुश्शरीआ पर जाकर ठहर गई। हज़रत मिस्बाही साहब क़िब्ला लिखते हैं, मजलिसे बरकात ने हज़रत अल्लामा अज़हरी से गुज़ारिश की कि वह अपने क़लमे जव्वाद से इस ख़ला को भर दें और इस कमी को दूर करदें। हज़रत ताजुश्शरीआ ने हमारी अर्ज़ी को क़बूल फ़रमा लिया, आपने अपनी हवाशी में इफ़ादात के दरिया बहा दिये। **(ज़मीमा बुख़ारी शरीफ़, स.60)**

जैसाकि आपने मुदीरे मजलिसे बरकात की ज़बानी सुना कि उनकी अर्ज़ी पर हज़रत ताजुश्शरीआ ने बुख़ारी शरीफ़ पर तालीक़ात लिखने का न सिर्फ़ इरादा फ़रमाया, बल्कि इस काम को किया और ख़ूब किया। आप मज़ीद लिखते हैं : अफ़सोस कि हज़रत के कसरते अशग़ाल की वजह से दोनों जिल्दों पर यह काम मुकम्मल न हो सका। पहली जिल्द के आम हवाशी पर नज़र फ़रमाकर जहाँ हज़रत ताजुश्शरीआ ने लाज़िम या नाफ़ेअ् समझा वहाँ हवाशी तहरीर फ़रमा दिये। बाज़ बहसों से मुताल्लिक़ उनके जद्दे अमजद हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी के मुस्तक़िल रिसाले मौजूद हैं हज़रत ताजुश्शरीआ ने इन रिसालों को उर्दू से अरबी में मुंतक़िल फ़रमाकर यहां बतौर इफ़ादा बयान फ़रमाया ताकि नफ़ए आम और फ़वाइदे कसीरा हासिल हों।

तालीक़ाते बुख़ारी : इस तरह हज़रत ताजुश्शरीआ के क़लमे जव्वाद से तालीक़ाते बुख़ारी वुजूद पज़ीर हुई। इन तालीक़ात की गहराई व गीराई पर अगर बहस की जाए तो एक मुस्तक़िल किताब बन जाए। बुख़ारी शरीफ़ की पहली हदीस इन्नमल अअ्मालो बिन्नियात पर हज़रत ताजुश्शरीआ ने जो तफ़्सीली बहस फ़रमाई है वह ख़ुद इतनी तवील है कि अगर इस का उर्दू तर्जमा कर दिया जाए तो वह बजाए ख़ुद एक रिसाले की शक्ल इख़्तियार कर जाए। ज़ाहिर है कि इस मुख़्तसर मज़मून में इस तफ़्सील की गुंजाइश कहाँ। बतौरे नमूना एक दो बात पैशे ख़िदमत हैं

ख़ुतबए तालीक़ात : इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी की यह शान थी कि वह जब अपने रसाइल का ख़ुतबा तहरीर फ़रमाते तो बराअते इस्तेहलाल के तौर पर ख़ुतबे में ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाते कि मक़सूद की तरफ़ रहनुमाई हो जाती। ख़ास तौर पर फ़तावा रज़विया का जो ख़ुतबा है वह अपनी मिसाल आप है। मुहिब्बीन उसमें मुज़दए जाँफ़िज़ा पाते हैं तो अअ्दा अंगुश्त बदनदाँ रह जाते हैं। यह ख़ुतबा एक तरफ़ आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी की इल्मी जलालत का मुँह बोलता सुबूत है तो दूसरी तरफ़ फ़िक़ह, अस्हाबे फ़िक़ह और कुतुबे फ़िक़ह से उनकी मुहब्बत की वाज़ेह दलील है।

ताजुश्शरीआ के इस ख़ुतबे में भी आला हज़रत के ख़ुतबों को जमाल नज़र आता है। यह ख़ुतबा चूंकि ख़िदमते हदीस में बरकत हासिल करने के लिये तहरीर फ़रमाया है इसलिये इसमें हज़रत ताजुश्शरीआ ने बराअते इस्तेहलाल के तौर पर ऐसे अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल फ़रमाया है जिनसे इल्मे हदीस, इल्मे उसूले हदीस, कुतुबे हदीस, इस्तिलाहाते हदीस की तरफ़ ख़ूब ख़ूब इशारा हो जाता है। ख़ुतबे में ज़िक्र कर्दा चंद अल्फ़ाज़ का ज़िक्र कर रहा हूँ ताकि अहले इल्म मेरी बात की ताईद कर सके

المسلسل، المتصل، منقطع، مقطوع، مسند، العوالی،
النزول، المتواتر، الموصول، مرسل، معضل، عزیز،
فرد، غریب، حسن، مشهور، مستفیض، صحیح،
جامع، معجم، حافظ، حاکم، حجة وغیره

ख़ुतबा में इन अल्फ़ाज़ का बर महल इस्तेमाल जहाँ हज़रत ताजुश्शरीआ के इस ज़माने में इमामे फ़न होने की गवाही देता है तो दूसरी तरफ़ उनकी अरबी ज़बान पर महारते ताम्मा की दादे तहसीन वसूल करता है।

इमामे आज़म की रिफ़अत : जैसा कि इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी का वतीरा रहा कि उन्होंने हमेशा अपने इमाम सिराजुल उम्मा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा हज़रत नोमान बिन साबित इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़मतों के परचम लहराए और अपने क़लम से उनका इमामुल अइम्मा होना साबित फ़रमाया, उसी नहज पर चलते हुए हज़रत ताजुश्शरीआ ने अपने इमाम की अज़मतों का पता बताया।

सनदे हदीस और रिवायते हदीस पर बहस करते हुए आपने तहरीर फ़रमाया : इस हदीस को बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजह ने हज़रत सैयिदुना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फ़रमाया है। अबू नुऐम और दार क़ुत्नी ने ग़राइब मालिक में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत किया है वग़ैरह।

फिर लिखते हैं : मैं कहता हूँ इस हदीस को जिस तरह इमाम बुख़ारी ने अपने शैख़ हुमैदी से रिवायत फ़रमाया है। इसी तरह हज़रत इमामे आज़म ने भी इस हदीस को रिवायत फ़रमाया है मगर हज़रत इमामे आज़म की सनद हज़रत इमाम बुख़ारी की सनद से आली है। क्यूँकि हज़रत इमामे आज़म ने हज़रत यहया से रिवायत किया है और इमाम बुख़ारी को हज़रत यहया तक पहुंचने में दो वासिते पेश आए हैं। एक हज़रत हुमैदी दूसरे हज़रत सुफ़ियान का वासिता। लिहाज़ा इमाम बुख़ारी की सनद में वासिते ज़्यादा हो गए और इमामे आज़म की सनद में वासिते कम रहे। इसलिये इमामे आज़म की सनद इमाम बुख़ारी की सनद से आली हो गई। **(तालीक़ाते बुख़ारी, स. 62)**

यह क़िस्सए लतीफ़ अभी ना तमाम है।

फिर भी यह मुबाहिस साबित करते हैं कि हज़रत ताजुश्शरीआ हदीस दानी में भी आला हज़रत के सच्चे वारिस थे।

*

हुज़ूर ताजुश्शरीआ आलमी शोहरत याफ़्ता

हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी बरकाती, एडीटर माहनामा पैग़ामे रसूल, इन्दौर

बस्ती बस्ती क़रया क़रया
ताजुश्शरीआ ताजुश्शरीआ

हुज़ूर ताजुश्शरीआ जा नशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात फ़िल हिन्द, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अलहाज अश्शाह मोहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी रज़वी अज़हरी बरैलवी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की शख़्सियत मोहताजे तआरुफ़ नहीं। अल्लाह तआला ने आपकी ज़ाते बा बरकात को बैनुल अक़वामी सतह पर मरजए ख़लाइक़ बना दिया था, आपकी ज़ाते गिरामी उन पाक जानों में से थी जिनकी इल्मी शोकतो जलालत अज़मतो बुज़ुर्गी, तक़वा व तहारत के उलमा व मशाइख़ शाहिद हैं, फ़ज़ाइलो कमालात, उलूमो फुनून, ख़िदमात व कारनामे मुसल्लिमुस्सुबूत के दरजे पर फ़ाइज़ हैं। हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ज़ाते गिरामी मस्लके आला हज़रत का मेअयार है जिस पर चलना ही सिराते मुस्तक़ीम पर चलना है। आपकी ज़िन्दगी में भी और आपके विसाल के बाद भी हमारे लिये मीनरए नूर है जिसके जलवे पूरे आलम में नज़र आ रहे हैं।

आज आपकी बैनुल अक़वामी शोहरत व मक़बूलियत और पज़ीराई व महबूबियत को देखकर बरमला दिल इस बात का इज़हार करता है कि यह मक़बूलियत आपको मिन जानिबिल्लाह हासिल थी और बहुत से बा कमाल उलमा व मशाइख़ को इसका इज़हार व एतिराफ़ करते हुए देखा और सुना है कि हज़रत ताजुश्शरीआ अज़हरी मियाँ को ख़ल्के ख़ुदा में यह मक़बूलियत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ख़ास अतिया और इनआम है जैसा कि हदीसे पाक में आया है:

अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को अज़ीम दीनी ख़िदमात के लिये मुन्तख़ब करना चाहता है तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम से उसकी महबूबियत का ऐलान कराता है और फ़रमाता है मुझको फ़लां बन्दे से महब्बत है तुम उससे महब्बत करो। चुनाँचे हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को उस बन्दे से महब्बत होती है और वह आसमान में मुनादी करते हैं कि अल्लाह तआला को फ़लां बन्दे से महब्बत है तुम सब उससे महब्बत करो। चुनाँचे आसमान वाले उससे महब्बत करने लगते हैं। फिर ज़मीन में उसकी मक़बूलियत

आम हो जाती है यानी ज़मीन पर रहने वालों के दिलों में उसकी महब्बत हो जाती है ख़ुद उसकी तरफ़ दिल माइल होने लगता है।

इस हदीसे पाक के मुकम्मल मज़हर हैं हुज़ूर ताजुश्शरीआ जिसका ज़िन्दा सुबूत आलमी सतह पर आपकी ग़ैर मामूली मक़बूलियत व मरजइय्यत है। यानी जिस क़रिया जिस बस्ती और जिस शहर में आपकी तशरीफ़ आवरी होती है ख़ुदा जाने कहाँ कहाँ से दूर दराज़ से अक़ीदत मन्दों का हुजूम जमा हो जाता है कि मुन्तज़ेमीन को उन्हें संभालना एक मुश्किल अम्र हो जाता है

सुब्हानल्लाह ! चेहरा पुर नूर, सूरत बा वक़ार कि लोग देखने को तरसते हैं, धक्के खाते गिरते पड़ते हैं मगर क़ुरबान होना चाहते हैं, तमन्ना करते हैं कि बस एक झलक चमकने वाले अख़्तर रज़ा की देखने को मिल जाए, शहज़ादए मुफ़्तिये आज़मे हिन्द और नबीरए आला हज़रत का दीदार हो जाए, जहाँ चले जाते हैं जंगल में मंगल कर देते हैं, जिसने भी सुन लिया कि फ़लां जगह ताजुश्शरीआ की आमद आमद है परवाना वार दौड़ पड़ता है, आम लोग ही नहीं उलमा व फ़ुज़ला कशाँ कशाँ चले आते हैं। दीनदार भी और दुनियादार भी, एक उमंग के साथ कि दामन से वाबस्ता होंगे फ़ैज़ पाएंगे और आला हज़रत अज़ीमुल बरकत अलैहिर्रहमा से अपना कनेक्शन जोड़ लेंगे। जब देखते हैं तो देखते रह जाते हैं फिर जब वह बोलते हैं तो फूल झड़ते हैं, उनके ज़ाहिरो बातिन से तक़वा की झलक नज़र आती है और इल्मो कमाल के जलवे दिखाई देते हैं।

और आप जब दुनिया से रुख़सत हुए तो आपके जनाज़ा में शिरकत की ग़रज़ से मुल्क और बैरूने मुल्क के अक़ीदतमन्दों ने सारे रिकार्ड तोड़ दिये सिर्फ़ उलमाए किराम मुफ़्तियाने इज़ाम और मशाइख़े किराम की तादाद एक लाख के आस पास थी और कुल मिलाकर सवा करोड़ से ज़्यादा चाहने वालों ने शिरकत की, मुख़ालिफ़ीन हैरतो इस्तिअजाब में डुबकियाँ लगा रहे हैं और खिसयानी बिल्ली खम्बा नोचे, के मिस्दाक़ बे सरो पा की बातें बना रहे हैं।

शहर इन्दौर को भी चन्द मरतबा आपकी क़दम बोसी का शरफ़ हासिल हुआ है जलसे व कान्फ्रेंस के अलावा हज़रत अपनी आँख के इलाज के सिलसिले में भी इन्दौर तशरीफ़ ला चुके हैं। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि मरकज़े अहले सुन्नत दारुल उलूम नूरी जिसको यह शरफ़ हासिल है कि इसकी बुनियाद मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद शहज़ादए आला हज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिमर्रहमा ने अपने दस्ते मुबारक से रखी है, और इसी दारुल उलूम नूरी की खजराना वाली अज़ीमुश्शान इमारत की बुनियाद जानशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने अपने मुबारक हाथों से रखी है, इसके दस्तार बन्दी का जल्सा हुज़ूर ताजुश्शरीआ की सरपरस्ती में था जल्सा के इख़्तिताम पर तक़रीबन रात 12 बजे हज़रत को स्टेज से क़यामगाह की तरफ़ ले जाया जा रहा था हज़रत मुफ़्तिये मालवा मुफ़्ती हबीब यार ख़ान साहेब क़िब्ला व शैख़ुल हदीस हज़रत

मौलाना मुहम्मद नूरुल हक़ साहेब नूरी व दरजनों उलमाए किराम के झुरमुट में रवाना हुए तो एक जम्मे ग़फ़ीर था जो साथ हो लिया हर एक हज़रत के क़रीब होना चाह रहा था और जो क़रीब थे वह दस्त बोसी के लिये मचल रहे थे, जब उलमाए किराम ने देखा कि यह बे क़ाबू भीड़ संभाले नहीं संभलेगी तो तमाम अहबाबे अहले सुन्नत अक़ीदत मन्दों को समझाया गया और उनको तसल्ली दी गई कि कल हज़रत नूरी बाबा के दौलत कदा पर हज़रत से सबकी मुलाक़ात होगी।

शहर इन्दौर इस लिहाज़ से भी ख़ुश नसीब रहा है कि यहाँ मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद शहज़ादए आला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा कई मरतबा तशरीफ़ ला चुके हैं और हज़रत का क़याम उनके चहीते ख़लीफ़ा और ज़िन्दा करामत, हज़रत अलहाज हाफ़िज़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहेब नूरी बाबा (नाज़िमे आला दारुल उलूम नूरी के मकान पर होता था और आपके बाद आपके जा नशीन हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा का क़याम भी नूरी बाबा ही के यहाँ रहा करता था, उलमाए किराम और अहबाबे अहले सुन्नत की शरफ़े ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये क़तार लगी रहती थी। सुब्हानल्लाह चेहरए पुर नूर और आलिमाना वक़ार की झलक देखकर देखने वाले बड़े मुतास्सिर हुआ करते थे। हज़रत नूरी बाबा के भतीजे अलहाज अनवार अहमद नूरी ने मुझे बताया कि हज़रत ताजुश्शरीआ के साथ मुझे एक मरतबा उमरह का शरफ़ हासिल हुआ, सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रोज़ए अक़दस के आस पास सऊदी हुकूमत के सिपाही मुतव्वे जो अहले सुन्नत व जमाअत के हज़रात को सलातो सलाम और हाथ बाँधकर खड़े होने वालों को झिड़कते और दूर करने की कोशिश करते हैं लेकिन जब हज़रत की क़ियादत में हम लोग सरकार की बारगाह में हाज़िर हुए तो उस वक़्त हुज़ूर ताजुश्शरीआ के चेहरे से ऐसा मलकूती नूर फूट रहा था कि देखने वालों की निगाहें आपके चेहरए अक़दस पर जम सी गई थीं हज़रत की पुर कशिश शख़्सियत और चेहरए पुर ज़िया का वहाँ के मुतव्वों पर तो ऐसा रोब पड़ा कि सारे मुतव्वे ऐसे हो गए कि जैसे उन्हें सांप सूँघ गया, हमने हज़रत की क़ियादत में निहायत ही अदबो एहतिराम के साथ हाज़री दी और बारगाहे ख़ैरुल अनाम में सलातो सलाम पेश करने की सआदतें हासिल कीं। इन्हीं अनवार अहमद नूरी ने यह भी बताया कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने इन्दौर में क़याम के दौरान एक मरतबा हज़रत नूरी बाबा से यह फ़रमाया कि हाफ़िज़ साहेब ! मैं अकसर मुल्क और बैरूने मुल्क तब्लीग़ी दोरों पर रहता हूँ, इन्दौर के मेरे मुरीदीन और अहबाबे अहले सुन्नत आपके हवाले हैं आप इनका ख़याल रखें।

यह एक मुसल्लमा हक़ीक़त है कि बातिल की सरकोबी में इमामे अहले सुन्नत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमतो

वर्रिज़वान ने और आपकी तरबियत याफ़्ता शागिर्दों ने बे मिसाल ख़िदमात अन्जाम दीं, आपके बाद आपके सच्चे जा नशीन मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिमर्रहमा की क़ियादत में यह सिलसिला जारी रहा। अलहम्दु लिल्लाह ! उनकी इल्मी व फ़िक़्ही ख़िदमात की आबो ताब से आज भी आलमे इस्लाम मुनव्वर और रौशन है। आपके बाद कुछ बद ख़्वाहों को यह महसूस होने लगा था कि ख़ानवादए आला हज़रत में अब ऐसा कोई फ़ाज़िल जानशीं नहीं रहा जो बातिल को मुंह तोड़ जवाब दे सके। अल्लाह तबारक व तआला का शुक्र है जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने अपने तदब्बुर से और फ़ाज़िलाना व क़ाइदाना सलाहियतों से अपने आबा व अज्दाद की इस ख़िदमते अज़ीम को बरक़रार रखा जिससे बद ख़्वाहों की सफ़ों में मातम है। मैंने अपने अकाबिरीन से सुना है कि ख़ानवादए रज़ा में सबसे ज़्यादा दावती तब्लीग़ी सफ़र हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने फ़रमाए और उन अस्फ़ार में एक मक़सद मुश्तरक था मस्लके आला हज़रत का तआरुफ़ । आप हर मजलिस हर जल्सा और कान्फ्रेंस में यह ज़रूर इरशाद फ़रमाते थे कि मस्लके आला हज़रत ही सच्चा मज़हब है उस पर सख़्ती से अमल पेरा रहें।

फ़ना के बाद भी बाक़ी है शाने रहबरी तेरी
ख़ुदा की रहमतें हों ऐ अमीरे कारवाँ तुझ पर

आख़िर में बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआगो हूँ कि या रहमानो रहीम ! या क़ादिरो क़य्यूम! अपने महबूबे पाक साहिबे लोलाक अलैहिस्सलातो वस्सलाम के सदक़े व तुफ़ैल हम अहले सुन्नत व जमाअत को हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमह के मिशन पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाए और हज़रत का रूहानी फ़ैज़ ता क़ियामत हम अहले सुन्नत व जमाअत पर जारी व सारी फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन ० बिजाहिन्नबिय्यिल करीम अलैहिस्सलातो वत्तसलीम ०

मनक़बत शरीफ़
दर शाने हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा

शाइरे इस्लाम अहमद हुसैन साहेब रज़वी शाकिर, इन्दौर

रहनुमाए अहले सुन्नत हज़रते अख़्तर रज़ा
हो गए दुनिया से रुख़सत हज़रते अख़्तर रज़ा

चेहरए पुर नूर बेशक फ़ज़्ले रब्बे कायनात
थे यक़ीनन बा करामत हज़रते अख़्तर रज़ा

इश्क़े अहमद का जलाकर क़ल्बे अतहर में चिराग़
हो गए दुनिया से रुख़सत हज़रते अख़्तर रज़ा

अहले दिल अहले महब्बत अहले हक़ कहते सभी
थे अताए आला हज़रत हज़रते अख़्तर रज़ा

जा नशीने मुफ़्तिये आज़म की यह शाने अज़ीम
वारिसे ताजे शरीअत हज़रते अख़्तर रज़ा

हर अक़ीदत मन्द के दिल में है शाकिर आरज़ू
ख़्वाब ही में दिखला दो सूरत हज़रते अख़्तर रज़ा

हुज़ूर ताजुश्शरीआ की मक़बूलियत

ख़तीबुल हिन्द हज़रत मौलाना नियाज़ुल क़ादरी रज़वी नूरी, ग़ौसिया नगर राऊ, इन्दौर (म.प्र.)

अलहम्दु लिल्लाह ! नबीरए आला हज़रत हुज़ूर अख़्तर रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमा की पूरी ज़िन्दगी मुत्तबेअ़ शरीअत मुत्तबेअ़ सुन्नत रही और वह हर शोअ़बा जिसके ज़रीए सुन्नत व शरीअत की हिफ़ाज़त हो सके और नशरो इशाअत जारी रहे उस शोअ़बे का काम अपनी जिद्दो जोहद से जारी रखा। इस मिशन को जारी रखने के लिये मुल्क और बैरूने मुल्क का सफ़र किया, मस्लके आला हज़रत के तहफ़्फ़ुज़ और नशरो इशाअत के लिये आपने ख़ुद को झोंक दिया। तरह तरह के नए फ़ितने जनम लेने लगे तो जिसमें सबसे बड़ा फ़ितना फ़ितनए सुलह कुल्लियत है आपने बहुत नज़रे अमीक़ से उन फ़ितनों को देखा और उसका सद्दे बाब किया और इसी फ़िक्रो सोच में वक़्त गुज़रा, देखते देखते ज़माना ने देखा जिसकी ज़िन्दगी मुत्तबेअ़ सुन्नत व शरीअत हो, मुख़ालिफ़ीने शरीअत के लिये फ़ारूक़ी तेवर जिसके पास हो, गुस्ताख़े रसूल के लिये आला हज़रत की तलवार का हक़ अदा करने वाला क़लम जिसके हाथ में हो, तक़्वा की अज़ीम दौलत जिसके पास हो उस अज़ीम शख़्सियत को अपना आइडियल माना और फिर दुनिया देखती रही मामूली अक़्लो फ़हम के ठेकेदार और फ़ितनों के कारोबारी की छाती पर मस्लके आला हज़रत की कील ठोंक दी। मिस्र से दुनियाए अरब, बरैली से आलमे इस्लाम के सारे उलमा की आँखों ने बग़ौर देखा कि यह सब मक़बूलियत ख़ुदा दाद है।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

मैं ख़ुद बरैली शरीफ़ में जनाज़ा में हाज़िर था जो तादाद जो अज़दहाम जो भीड़ मौजूद थी उसमें क़ादरी बरकाती रज़वी नूरी चिश्ती साबरी अशरफ़ी वारसी हर कोई कह रहा था, हम में से हर कोई मुरीद तो नहीं मगर हज़रत के आशिक़ ज़रूर हैं। मौला तआला उनके मिशन पर हमें क़ाइम रखे उनका रूहानी फ़ैज़ जारी व सारी रहे। वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह !

हुज़ूर ताजुश्शरीआ और नअ़तिया शाइरी

मोहम्मद उमर फ़ारूक़ नूरी मुतअल्लिम तैबा कॉलेज, इन्दौर

ख़ानवादए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ मोहताजे तआरुफ़ नहीं हैं यह बात किसी पर भी मख़्फ़ी नहीं है कि यह ख़ानवादा बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक के आलमे इस्लाम के अज़ीम ख़ानवादों में से है और यह भी किसी से पोशीदा नहीं कि यह ख़ानदान गुज़श्ता दो सदियों से दीने इस्लाम की ख़िदमतें अन्जाम दे रहा है। मुजाहिदे आज़ादी जद्दे आला हज़रत इमामुल उलमा अल्लामा रज़ा अली ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1282 हि.) रईसुल अतक़िया पिदरे आला हज़रत मुफ़्ती नक़ी अली ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1315 हि.) आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा (मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.) शहज़ादए आला हज़रत हुज्ज़तुल इस्लाम मुफ़्ती हामिद रज़ा ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1362 हि.) सरकार मुफ़्तिये आज़म मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ (मुतवफ़्फ़ा 1402) वारिसे उलूमे आला हज़रत जा नशीने मुफ़्तिये आज़म मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान (मुतवफ़्फ़ा 1439 हि.) रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने नस्लन बादा नस्लिन क़रनन बादा क़रनिन दीने नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमतें अन्जाम दी हैं। यहाँ राक़िमुस्सुतूर का उन्वान इस ख़ानदान की ख़िदमात नहीं है अगर क़लम इस उन्वान पर उठाया जाए तो क़लम की स्याही ख़त्म हो जाए लेकिन इस ख़ानदान की ख़िदमात को क़लम बन्द नहीं किया जा सकता।

नअ़त गोई भी इस ख़ानदान का ख़ास्सा रहा है। अहले इल्म मेरी इस बात से सो फ़िसदी इत्तिफ़ाक़ रखेंगे कि इस ख़ानदान के कई अफ़राद ने अपने दीवान इस उम्मत के हवाले किये हैं। आला हज़रत का मशहूरे ज़माना दीवान **हदाइक़े बख़्शिश**। बिरादरे आला हज़रत उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ का दीवान ज़ौक़े नअ़त और आला हज़रत के ख़लफ़े अकबर हुज़ूर हुज्ज़तुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा ख़ान का दीवान बयाज़े पाक और आला हज़रत के ख़लफ़े असग़र हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ का दीवान सामाने बख़्शिश और हुज़ूर ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान का दीवान सफ़ीनए बख़्शिश इस अम्र पर शाहिद हैं। यहाँ मज़कूरा तमाम दीवान ज़ेरे बहस नहीं, मेरी तहरीर का मरकज़ व मेहवर सिर्फ़ अज़हरी मियाँ का

नातिया कलाम होगा जो सफ़ीनए बख़्शिश की सूरत में हमारे पेशे नज़र है।

ख़ानवादए रज़ा के फ़रज़न्दों की ख़ुसूसियत रही है कि इश्क़े रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हलावत व लताफ़त से मामूर रहे हैं। हुज़ूर मुजद्दिदे आज़म, उस्ताज़े ज़मन, मुफ़्तिये आज़म, हुज्ञतुल इस्लाम वग़ैरहुम क़ाबिले क़द्र शख़्सियात की तरह अज़हरी मियाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह को भी महब्बते रसूल अलैहिस्सलाम का वाफ़र हिस्सा अता हुआ था और वारदाते क़ल्बी के इज़हार के लिये वरासत में मिली दौलत नअ़तिया शाइरी को मुन्तख़ब किया और इस मैदान में आपने अख़्तर तख़ल्लुस इख़्तियार फ़रमाया।

सफ़ीनए बख़्शिश जो आपकी नअ़तिया शाइरी के जलवों का नूरानी ख़ज़ीना और बख़्शिश का सफ़ीना है, इस मजमूअए कलाम के मुरत्तिब मौलाना मुहम्मद मोहियुद्दीन रज़वी लिखते हैं :

हुज़ूर ताजुश्शरीआ की शख़्सियत का ब ग़ौर मुतालआ करने के बाद यह अम्र वाज़ेह होता है कि आपको दीनो मज़हब से वालिहाना वाबस्तगी के साथ साथ मौज़ूनी तबअ़, ख़ुश कलामी, शेअर गोई और शाइराना ज़ौक़ भी वरसे में मिला है।

आप बयक वक़्त मुफ़क्किर व मुदब्बिर और मुहद्दिस व फ़क़ीह होने के साथ साथ एक अज़ीम आशिक़े रसूल और उम्दह नअ़त गो शाइर भी हैं। आप को नए लबो लहजा में नअ़तिया अशआर कहने में ज़बरदस्त मलका हासिल था। आपकी शाइरी मानवियत व पैकर तराशी, सरशारी व शेफ़्तगी का नादिर नमूना है। आपके क़लम से निकले हुए अशआर फ़साहतो बलाग़त, हलावतो मलाहत, जज़्बो कैफ़ और सूज़ो गदाज़ में डूबे हुए होते हैं। (सफ़ीनए बख़्शिश मतबुआ इस्लामिक पब्लिशर, देहली)

हुज़ूर ताजुश्शरीआ की शेअर गोई इल्मे मारिफ़त की राज़दां है, इस ज़िम्न में आपकी बरजस्तगी महारते ताम्मा का अन्दाज़ा इस वाक़िआ से ब ख़ूबी लगाया जा सकता है जिसे अलहाज क़ारी मोहम्मद अमानत रसूल नूरी ने **सामाने बख़्शिश** (नअ़तिया दीवान हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म नूरी) के हाशिया पर रक़म फ़रमाया है। मौलवी अब्दुल हमीद साहब रज़वी अफ़्रीक़ी यह नाते पाक हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा की मजलिस में (कलामे मुफ़्तिये आज़म, तू शम्ए रिसालत है आलम तेरा परवाना) पढ़ रहे थे जब इसका मक़ता :

आबाद इसे फ़रमा वीरां है दिले नूरी
जलवे तेरे बस जाएं आबाद हो वीराना

तो हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म ने फ़रमाया बि हम्दिही तआला फ़क़ीर का दिल तो रौशन है

अब इसको यूँ पढ़ो :

आबाद इसे फ़रमा वीरां है दिले नज्दी

जा नशीने मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अल्लामा मुफ़्ती अश्शाह अख़्तर रज़ा साहेब क़िब्ला ने बरजस्ता अर्ज़ किया : मक़ता को इस तरह पढ़ा जाए :

सरकार के जलवों से रौशन है दिले नूरी
ता हश्र रहे रौशन नूरी का यह काशाना

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा ने इसे पसन्द फ़रमाया। (सामाने बख़्शिश मतबुआ इस्लामिक पब्लिशर, देहली)

नअ़त एक ऐसा सिन्फ़े शाइरी है जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ातो हयात और मोजिज़ात का ज़िक्र किया जाता है और हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की अमानत, सदाक़त, दयानत, शुजाअत, सख़ावत, इनायत, बख़्शिश, अता, इख़्तियार जैसे आला औसाफ़ और अख़्लाक़े हमीदा का बड़ी ख़ूबसूरती से ज़िक्र किया जाता है। हुज़ूर ताजुश्शरीआ की नअत का मुतालआ कीजिये तो आँखें अपना सफ़र बन्द कर लेती है अशआर मुलाहज़ा फ़रमाएं :

जहाँ बानी अता कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़्तारे कुल हैं जिसको जो चाहें अता कर दें

जहाँ में उनकी चलती है वह दम में क्या से क्या कर दें
ज़मीं को आसमां कर दें सुरय्या को सरा कर दें

मुझे क्या फ़िक्र है अख़्तर मेरे यावर हैं वह यावर
बलाओं को जो मेरी ख़ुद गिरफ़्तारे बला कर दें (सफ़ीनए बख़्शिश, स. 15,16)

जहाँ तक एहसाने नबवी का तअल्लुक़ है इस सिलसिले में दीने इस्लाम और क़ुरआने करीम के साथ साथ आपके मन्शूर और उसवए शरीअत जैसे अतियात के साथ आपकी रहमतो शफ़ाअत और महब्बत व शफ़क़त का ज़िक्र भी इन तमाम जुज़इय्यात के साथ हुज़ूर अज़हरी मियाँ की नअत में ख़ूब मिलता है। मुलाहज़ा हो :

आबो गिल में नूर की पहली किरण, जाने आदम जाने हव्वा आप हैं
हुस्ने अव्वल की नुमूदे अव्वलीं, बज़्मे आख़िर का उजाला आप हैं

हुज़ूर नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वालिहाना महब्बत और जिससे आपको निस्बत हो जाए उन तमाम चीज़ों क़ी अक़ीदतो महब्बत आपके अशआर में भी ब ख़ूबी पाई जाती है।

इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है दिखा देना
जहाँ रहमत बरसती है जहाँ रहमत ही रहमत है

मदीना छोड़कर जन्नत की ख़ुश्बू मिल नहीं सकती
मदीना से महब्बत है तो जन्नत की ज़मानत है

और

राहे तैबा में जब ना तवां रह गए, दिल को खींचा कहा बे कली ने चलें
ख़ाके तैबा में अपनी जगह हो गई, ख़ूब मुज़्दा सुनाया ख़ुशी ने चलें

नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से शफ़ाअत तल्बी, मदीना में दफ़्न होने की तमन्ना को कितनी ख़ूबसूरती से अपनी नअ़त का मोज़ू बनाया जिसके पढ़ने से दिल पर वज्द की एक कैफ़ियत तारी होती है और दिल मचलने लगता है।

जी गए वह मदीना में जो गए
आओ हम भी वहाँ मरके जीने चलें

और

मेरा दम निकल जाता है उनके आस्ताने पर
उनके आस्ताने की ख़ाक में मिल जाता
मेरे दिल से धुल जाता दाग़े फ़ुरक़ते तैबा
तैबा में फ़ना होकर तैबा में ही मिल जाता

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में ज़रा सी बेएहतियाती ईमानो आमाल को ग़ारत कर देती है इससे इज्तिनाब ज़रूरी है। हुज़ूर ताजुश्शरीआ के कलाम को पढ़ें तो यह बात रौशन हो जाती है कि हज़रत ने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान, अदबो एहतिराम और शाने अक़दस में बे एहतियाती से अपने कलाम को इस क़दर महफ़ूज़ रखा, मुलाहज़ा हो :

झांक लो आँखों में उनकी हसरते तैबा लिये
ज़ाइरे तैबा ज़ियाए तैबा लाए ख़ैर से

और

तेरे मैख़ाने में जो खींची थी वह मय क्या हुई
बात क्या है आज पीने का मज़ा मिलता नहीं

वहाबी देवबन्दी उलमा ने अपनी किताबों में जो इहानतें (गुस्ताख़ियाँ) बारगाहे रिसालत में की हैं वह इस क़दर शदीद हैं कि एक मोमिन का कलेजा उन्हें पढ़कर कांप उठता है और उनसे नफ़रत के जज़्बात ख़ुद ब ख़ुद उभर आते हैं जिसका इज़हार कभी अलफ़ाज़ में कभी हरकातो सकनात और गुफ़्तुगू में और कभी अशआर में होता है। ताजुश्शरीआ के अशआर में नशतरियत के इस रंग को मुलाहज़ा से क़ब्ल इश्क़ो

वारुफ़्तगी की तपिश का अन्दाज़ा लगाएं कि महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दाग़ सीने में बस जाए तो वह ज़ुल्मतों की तारीकी में रोशनी का हाला बन जाता है। इस रुख़ से हमारे ममदूह क्या दिल लगती बात कहते हैं जो दिल में बस के रह जाती है और फ़िक्र की गहराई में उतर जाती है :

ज़ुलमतों में रोशनी के वास्ते
दाग़े सीना की हिफ़ाज़त कीजिये

वारुफ़्तगी व जां निसारी का दर्स भी ख़ूब दिया है जो दिल में नक़्श कर लेने से तअल्लुक़ रखता है। कैसा ईमान अफ़रोज़ मज़मून बांधा है कि ईमान की खेती सर सब्ज़ो शादाब हो जाती है ज़बान अश अश कर उठती है। इश्क़ो महब्बत के जलवे हुस्न को दो चन्द कर देते हैं। मुलाहज़ा हो :

नबी से जो हो बेगाना उसे दिल से जुदा कर दें
पिदर मादर बिरादर मालो जान उन पर फ़िदा कर दें

जब तौहीने रिसालत आम हो जाए और गुस्ताख़ी मिशन तो उनके लिये ज़िक्रे रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दिल में आग लग जाती है लेकिन ईमान वाले की अलामत है कि वस्फ़े माहे तैबा और ज़िक्रे सरकार से अपने क़ल्बे बेचैन को तस्कीन देते रहता है चाहे किसी की हालत ग़ैर हो जाए या हसद से दिल जल उठें या सीने फटने लगें।

मैं वस्फ़े माहे तैबा कर रहा हूँ
बला से गर कोई चीं बर जबीं है

ज़िक्रे सरकार भी क्या आग है जिससे सुन्नी
बैठे बैठे दिले नज्दी को जला जाते हैं

और

तेज़ कीजिये सीनए नज्दी की आग
ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिये

देवबन्दी पेशवा मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने सही रिवायात के साथ भी मीलाद पढ़ने को नाजाइज़ बताया है **(फ़तावा रशीदिया, स 131 मतबुआ फ़रीद बुक डिपो, देहली)** तो मीलादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से उनकी कैफ़ियत ज़रूर मुज़महिल होगी इसी लिये यह उससे खार खाते हैं और उसके मनाने वालों पर जलते, बरसते और कूढ़ते हैं

वहाबियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी ने लिखा है

जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं ख़्वाह अम्बिया हों, वह सबके सब अल्लाह के बेबस

बन्दे हैं और हमारे भाई हैं मगर अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ाई बख़्शी तो हमारे बड़े भाई की तरह हुए। मआज़ल्लाह!

इन्हीं के एक दूसरे पेशवा मौलवी क़ासिम नानोतवी लिखते हैं :

अंबिया अपनी उम्मत में मुमताज़ होते हैं तो उलूम में मुमताज़ होते हैं, बाक़ी रहा अमल, उसमें बसा औक़ात उम्मती मसावी हो जाते हैं बल्कि बढ़ जाते हैं। मआज़ल्लाह

(तहज़ीरुन्नास मतबुआ दारूल किताब, देवबन्दी, स. 8)

इन दोनों इबारतों में किस जसारत व बे बाकी से रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में तौहीन व बे अदबी की गई है इनमें तौहीन के कई पहलू हैं जो जग ज़ाहिर हैं।

और हम मज़हबे अहले सुन्नत का अक़ीदा क़ुरआनो हदीस के ऐन मुताबिक़ कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शानो अज़मत और दीगर अंबियाए किराम की फ़ज़ीलत, इख़्तियार व अता, नवाज़िश व सख़ावत बे मिसाल होने का हाल यह है कि ब क़ौले ताजुश्शरीआ :

मुस्तफ़ाए ज़ात यकता आप हैं
यक ने जिसको यक बनाया आप हैं
आपके जैसा कोई हो सकता नहीं
अपनी हर ख़ूबी में तन्हा आप हैं

और फ़रमाते हैं :

वही जो रहमतुल लिल आलमीन हैं जाने आलम हैं
बड़ा भाई कहे उनको कोई अन्धा बसीरत का

और

वह रगे जाने दो आलम हैं बड़े भाई नहीं
हैं यह फन्दे सब बुरे तेरे बड़े भाई के
भला दावे हैं उन से हमसरी के
सरे अरशे बरीं जिनका क़दम है
करके दावा हम सरी का कैसे मुंह के बल गिरा
मिट गया वह जिसने की तौहीने सुल्ताने जमाल

अमीरुल मोमिनीन हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नूरे नज़र नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल सय्यिदुना सरकार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से उल्फ़तो महब्बत एक मोमिन के लिये अनमोल नेअ़मत है। इसको हुज़ूर ताजुश्शरीआ, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में ख़राजे अक़ीदत पेश करते हुए कहते हैं :

शुजाअत नाज़ करती है जलालत नाज़ करती है
वह सुल्ताने ज़मां हैं उनपे शौकत नाज़ करती है
शहंशाहे शहीदां हो अनोखी शान वाले हो
हुसैन इब्ने अली तुम पर शहादत नाज़ करती है

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने मुतअद्दिद बार हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर होकर अपने क़ल्बो जिगर को मुनव्वर फ़रमाया है। बारगाहे ग़ौसियत में मक़बूलियत का हाल यह था कि नक़ीबुल अशराफ़ (गद्दी नशीन) ख़ुसूसियत के साथ ख़ाली वक़्तों में आपको हाज़री देने का शरफ़ बख़्शते थे। बारगाहे ग़ौसियत में हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने दस्ते सवाल दराज़ करते हुए यूँ पुकारा :

पीरों के आप पीर हैं या ग़ौस अल मदद
अहले सख़ा के मीर हैं या ग़ौस अल मदद
सदक़ा रसूले पाक का झोली में डाल दो
हम क़ादरी फ़क़ीर हैं या ग़ौस अल मदद

सरकार सय्यदना सय्यद सालार मस्ऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की बारगाह में अपनी अक़ीदत का इज़हार यूँ करते हैं :

हज़रत मस्ऊदे ग़ाज़ी अख़्तरे बुरजे हुदा
बे कसों का हमनवा वह सालिकों का मुक़्तदा
तेरे नूरे फ़ैज़ से ख़ैरात दुनिया को मिली
हम को भी जद्दे मुअज़्ज़म का मिले सदक़ा शहा

शहज़ादए आला हज़रत मोहियुद्दीन अबुल बरकात आले रहमान सय्यदना हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अलैहिर्रहमा मादर ज़ाद वली थे, पीरो मुर्शिद ने बचपन ही में दाख़िले सिलसिला फ़रमा कर आपकी विलायत की पेशेन गोई फ़रमा दी थी, आप हुज़ूर ताजुश्शरीआ के नाना जान हैं। आपके विसाल के बाद उर्से चेहलुम के मौक़े पर हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा ने जा नशीने मुफ़्तिये आज़म की हैसियत से आपके सर पर दस्तार बांधी और दुआओं से नवाज़ा। बारगाहे मुफ़्तिये आज़मे हिन्द में हुज़ूर ताजुश्शरीआ अर्ज़ करते हैं :

मुफ़्तिये आज़म दीने ख़ैरुल वरा
जलवए शाने इरफ़ाने अहमद रज़ा
अहमदे नूरी के हैं यह मज़हर तमाम
यह हैं नूरी मियाँ नूरी हर हर अदा

क्या कहूँ हक़ के हो कैसे तुम मुक़्तदा
मुक़्तदायाने हक़ करते हैं इक़्तिदा

हुज़ूर अहसनुल उलमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन क़ादरी बरकाती अलैहिर्रहमा की आलमगीर शख़्सियत बिला शुबह अपने दौरे हयात में मरजए उलमा व मशाइख़ थी, आपकी ज़िन्दगी सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरवीजो इशाअत में गुज़री, मख़दूम ज़ादा होने के बावुजूद बरैली शरीफ़ को अपना मरकज़े अक़ीदत समझते थे, अपने दोनों शहज़ादे हज़रत अमीने मिल्लत मद्दज़िल्लहुल आली और रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत नजीब मियाँ क़िब्ला मद्दज़िल्लुहुल आली को हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म से मुरीद करवाया और आप हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म और हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म से बे पनाह महब्बत फ़रमाते थे। हुज़ूर ताजुश्शरीआ पर भी बेहद महरबान थे और ताजुश्शरीआ को ख़िलाफ़त व इजाज़त से भी नवाज़ा था। ताजुश्शरीआ ने अपने ख़ानवादए रज़विया के बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपने मुर्शिदे इजाज़त की बारगाह में यूँ गोया होते हैं:

ऐ नक़ीबे आला हज़रत मुस्तफ़ा हैदर हसन
ऐ बहारे बाग़े ज़ेहरा मेरे बरकाती चमन
ऐ तमाशा गाहे आलम चेहरए ताबाने तू
तू कुजा बेहतर तमाशा मी रवी क़ुरबान तू

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमा ने उर्दू ज़बान के अलावा फ़ारसी और अरबी में भी नअत गोई की हैं हम्दे बारी तआला भी लिखी हैं।

कलामे ताजुश्शरीआ पर कमा हक़्क़हु क़लम चलाना इस फ़क़ीरे ना तवां के क़लमे ना तवां के बस की बात नहीं। हुज़ूर अज़हरी मियाँ अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान के कलाम में आक़ा की महब्बत भी है, बुज़ुर्गाने दीन की अक़ीदत भी है, रद्दे फ़िरक़हाए बातिला भी है।

अल्लाह जल्ला जला लुहू की बारगाह में दुआ है कि इस सइये नाक़िस को क़बूल फ़रमाए और हुज़ूर अज़हरी मियाँ के चाहने वाले और अक़ीदत मन्दों में मेरा शुमार फ़रमाए, अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल में इल्मे नाफ़ेअ अता फ़रमाए और हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान का फ़ैज़े रूहानी अहले सुन्नत व जमाअत पर जारी व सारी फ़रमाए। आमीन बिजाहिन्नबिय्यिल करीम अलैहि व आलिही वसहबिही अफ़ज़लुस्सलाति व अकरमुत्तस्लीम।

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ का विसाल नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान

मौलाना सय्यद मोहम्मद नज़ीरुद्दीन मियाँ हाशमी चिश्ती सोहरवर्दी, शाही क़ाज़ी शहर दाहोद, गुजरात

बिछड़ा कुछ इस अदा से कि रुत ही बदल गई
एक शख़्स सारे शहर को वीरान कर गया
ताजदारे सुन्नियत तुम कहाँ चल दिये
आफ़ताबे रज़वियत तुम कहाँ चल दिये

कुदरत का क़ानून है कि हर ज़ी रूह को मौत का मज़ा चखना है। इस दुनियाए फ़ानी में ज़िन्दगी के चन्द अय्याम गुज़ारने के बाद दारुल बक़ा की सम्त रख़ते सफ़र बांधना है, मौत हर एक के लिये यक़ीनी चीज़ है लेकिन इस दुनिया में कुछ हस्तियाँ ऐसी भी होती है जिनकी हयाते मुबारका क़ौमो मिल्लत के लिये बाइसे रहमतो बरकत होती है, साहिबाने दिल व अहले ज़िक्र का विसाल क़ौमो मिल्लत के लिये एक अज़ीम ख़सारा व नुक़सान का सबब होता है और यह किसी फ़र्द पर पोशीदा नहीं है।

उनकी रहलत से मुआशरती, समाजी ज़िन्दगी में एक ख़ला पैदा हो जाता है ऐसे लोगों को ज़माना उनको फ़रामोश नहीं करता बल्कि हमेशा उनकी कमी को महसूस करता रहता है। उन्हीं बर गुज़ीदा सुतूदा सिफ़ात महासिनो कमालात की हामिल और दिल पज़ीर शख़्सियतों में एक ज़ाते गिरामी वारिसे उलूमे आला हज़रत, जानशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, आलमुल उलमा अकमलुल कुमला अफ़ज़लुल फुज़ला आलमी शोहरत याफ़्ता हस्ती हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा व मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी क़ादरी रज़वी नूरी अलैहिर्रहमा की थी।

बतारीख़ 6 ज़ुल क़अदह सन् 1349 हि. मुताबिक़ 20 जुलाई सन् 2018 बरोज़ जुमा बाद नमाज़े मग़रिब मोअतमद ज़राए से यह ग़मनाक ख़बर मोसूल हुई कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी मियाँ इस दारुल फ़ना से दारुल बक़ा की जानिब रहलत फ़रमा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ० जिस शहर और जहां यह ख़बर पहुंची, हर जगह कोहराम बरपा हो गया, सुरअत के साथ यह अन्दोह नाक ख़बर फेली तो हर तरफ़ ग़म की लहर दौड़ गई, जिसने भी यह ख़बर सुनी दम बख़ुद रह गया बे चैनो क़रार हो गया, दिल मुज़तरिब हो गया और आँखें अश्कबार हो गईं

आह ! वह मर्दे क़लन्दर रुख़सत हो गया
आज मुरीद तो ज़िन्दा है लेकिन मुराद नहीं।

आह ! आसमाने रज़वियत का आफ़ताबे आलम ताब जो तक़रीबन निस्फ़ सदी से ज़माने भर में अपना नूर बिखेर रहा था वह आज हमेशा के लिये बरैली में ग़ुरूब हो गया।

आह ! हज़ारों लाखों मुरीदों के सरों से रूहानी बाप का सायए आतिफ़त उठ गया।

जिसके हाथ हमेशा ख़ुदा की बारगाह में इल्तिजा व इस्तिग़ासा के लिये उठते थे,

जिसका वुजूदे मस्ऊद बिला इम्तियाज़े रंगो नस्ल सबके लिये यकसां और मुफ़ीद था, जिसका विसाल सरकार ग़ौसुल आलमीन शहंशाहे पाकिस्तान हज़रत ग़ौस बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी सोहरवर्दी की सातवीं शरीफ़ की निस्बत से 7 ज़ुल क़अ़दह बाद अज़ नमाज़े मग़रिब हुआ। वह दाइये अजल को लब्बैक कहते हुए हमेशा के लिये हम सबको दाग़े मुफ़ारक़त दे गया।

ला रैब ! हुज़ूर ताजुश्शरीआ की रहलत मौतुल आलिमे मौतुल आलम के मिस्दाक़ किसी एक फ़र्द की नहीं बल्कि एक जहान की मौत है। यक़ीनन हुज़ूर ताजुश्शरीआ का वुजूदे बा बरकत अहले सुन्नत के लिये बाइसे इत्मीनानो सुकून था, आपके विसाल से अहले सुन्नत का ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान हुआ है।

आप की ज़ाते गिरामी से न सिर्फ़ हिन्द बल्कि बैरूने हिन्द में भी सुन्नियत मज़बूत व मुस्तहकम हुई। जामिआ अज़हर (मिस्र) ने आपकी इल्मी लियाक़त का एतिराफ़ करते हुए आपको फ़ख़रे अज़हर के मुअज़्ज़ज़ एवार्ड से नवाज़ा था।

बिला शुबह आप मोहसिने अहले सुन्नत थे आपकी ख़िदमाते जलीला क़ौमो मिल्लत के लिये अज़हर मिनश्शम्स हैं, आपने अपनी पूरी ज़िन्दगी इस्लाहे उम्मत और सुन्नते नबविया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरवीजो इशाअत में सर्फ़ कर दी ला तादाद मुरीदीन, मोतक़ेदीन ने आपसे फ़ैज़ हासिल किया और बे शुमार अफ़राद को आपकी ज़ाते गिरामी से हिदायत नसीब हुई।

हम जुमला अहले दाहोद, हुज़ूर ताजुश्शरीआ के जुमला मुरीदीन, मुहिब्बीन, मोअ़तक़ेदीन, मुतवस्सिलीन पसमान्दगान लवाहेक़ीन, वारेसीन, अहले ख़ानदान बिल ख़ुसूस जा नशीने हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा व मौलाना मुफ़्ती असजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी, हुज़ूर मन्नानी मियां, हुज़ूर सुब्हानी मियाँ दामत बरकातुमुल आलिया के ग़म में बराबर के शरीक हैं और उनके साथ हमदर्दी का इज़हार करते हुए दुआ करते हैं कि अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीबे आला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में हुज़ूर ताजुश्शरीआ की मसाइये जमीला को शरफ़े क़ुबूलियत से नवाज़े आपको बलन्दिये दरजात अता फ़रमाए और अहले सुन्नत को आपका नेअ़मुल बदल अता फ़रमाए। आपके तमाम मुरीदीन, ख़ुसूसन जानशीने ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा असजद रज़ा क़ादरी साहब को सदमए अज़ीम बरदाश्त करने का हौसला अता करे, सब्रे जमील जज़ाए जलील और इस पर अज्रे जज़ील अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन या रब्बल आलमीन बिजाहि सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व अस्हाबिही वसल्लिम बिरहमतिका या अरहमर्राहिमीन।

फेली हैं फ़ज़ाओं में इस तरह तेरी यादें
जिस सम्त नज़र उठी आवाज़ तेरी आई

शरीके ग़म : राक़िमुल हुरूफ़, अहले दाहोद व जुमला वाबस्तगाने आस्तानए आलिया ग़ौसिया, सोहरवरदिया दाहोद शरीफ़, गुजरात

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ अपने कलाम के आईने में

जहाँ बानी अता कर दें

जहाँ बानी अता कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़्तारे कुल हैं जिसको जो चाहें अता कर दें

जहाँ में उनकी चलती है वह दम में क्या से क्या कर दें
ज़मीं को आसमां कर दें सुरय्या को सरा कर दें

फ़ज़ा में उड़ने वाले यूँ न इतराएं निदा कर दें
वह जब चाहें जिसे चाहें उसे फ़रमां रवां कर दें

मेरी मुश्किल को यूँ आसां मेरे मुश्किल कुशा कर दें
हर एक मोजे बला को मेरे मौला ना ख़ुदा कर दें

मुनव्वर मेरी आँखों को मेरे शमसुद्दुहा कर दें
ग़मों की धूप में वह सायए ज़ुल्फ़े दोता कर दें

अता हो बे ख़ुदी मुझको ख़ुदी मेरी हवा कर दें
मुझे यूँ अपनी उल्फ़त में मेरे मौला फ़ना कर दें

जहाँ में आम पैग़ामे शहे अहमद रज़ा कर दें
पलट कर पीछे देखें फिर से तज्दीदे वफ़ा कर दें

नबी से जो हो बेगाना उसे दिल से जुदा कर दें
पिदर मादर, बिरादर, मालो जान उन पर फ़िदा कर दें

तबससुम से गुमां गुज़रे शबे तारीक पर दिन का
ज़ियाए रुख़ से दीवारों को रौशन आईना कर दें

किसी को वह हंसाते हैं किसी को वह रुलाते हैं
वह यूँ ही आज़माते हैं वह अब तो फ़ैसला कर दें

गुले तैबा में मिल जाऊँ गुलों में मिलके खिल जाऊँ
हयाते जावेदानी से मुझे यूँ आश्ना कर दें

उन्हें मन्ज़ूर है जब तक यह दौरे आज़माइश है
न चाहें तो अभी वह ख़त्म दौरे इब्तिला कर दें

सगे आवारए सेहरा से उक्ता सी गई दुनिया
बचाओ अब ज़माने का सगाने मुस्तफ़ा कर दें

मुझे क्या फ़िक्र हो अख़्तर मेरे यावर हैं वह यावर
बलाओं को जो मेरी ख़ुद गिरफ़्तारे बला कर दें

मुस्तफ़ाए ज़ाते यक्ता आप हैं

***

मुस्तफ़ाए ज़ाते यक ता आप हैं
यक ने जिसको यक बनाया आप हैं

आप जैसा कोई हो सकता नहीं
अपनी हर ख़ूबी में तन्हा आप हैं

आप आबो गिल में नूर की पहली किरण
जाने आदम जाने हव्वा आप हैं

हुस्ने अव्वल की नुमूदे अव्वलीं
बज़्मे आख़िर का उजाला आप हैं

ला मकां तक जिसकी फैली रौशनी
वह चिराग़े आलम आरा आप हैं

है नमक जिसका ख़मीरे हुस्न में
वह मलीहे हुस्ने आरा आप हैं

ज़ेबो ज़ीने ख़ाक व फ़ख़्रे ख़ाकियाँ
ज़ीनते अर्शे मुअल्ला आप हैं

नाज़िशे अर्शो वक़ारे अर्शियां
साहिबे क़ौसैनो अदना आप हैं

आपकी तलअत ख़ुदा का आईना
जिसमें चमके हक़ का जलवा आप हैं

आपकी रूयत है दीदारे ख़ुदा
जलवा गाहे हक़ तआला आप हैं

आपको रब ने किया अपना हबीब
सारी ख़लक़त का ख़ुलासा आप हैं

आपकी ख़ातिर बनाए दो जहाँ
अपनी ख़ातिर जो बनाया आप हैं

जां तुई जानां क़रारे जां तुई
जाने जां जाने मसीहा आप हैं

पैकर हर शय में जां बनकर निहां
पर्दे पर्दे में हुवैदा आप हैं

आप से ख़ुद आपका साइल हूँ मैं
जाने जां मेरी तमन्ना आप हैं

आपकी तलअत को देखा जान दी
क़ब्र में पहुँचा तो देखा आप हैं

बर दरत आमद गदा बेहरे सवाल
हो भला अख़्तर का दाता आप हैं

सब मदीने चलें

तुम चलो हम चलें सब मदीने चलें
जानिबे तैबा सबके सफ़ीने चलें

मैकशो ! आओ आओ मदीने चलें
बादए ख़ुल्द के जाम पीने चलें

जी गए वह मदीने में जो मर गए
आओ हम भी वहीं मरके जीने चलें

ज़िन्दगी अब सरे ज़िन्दगी आ गई
आख़िरी वक़्त है अब मदीने चलें

शौक़े तैबा ने जिस दम सहारा दिया
चल दिये हम, कहा बेकसी ने चलें

ताइरे जां मदीने को जब उड़ चला
ज़िन्दगी से कहा ज़िन्दगी ने चलें

जाने नो, राहे जानां में यूँ मिल गई
आँख मीची कहा बे ख़ुदी ने चलें

राहे तैबा में जब ना तवां रह गए
दिल को खींचा कहा बे कली ने चलें

ख़ाके तैबा में अपनी जगह हो गई
ख़ूब मुज़्दा सुनाया ख़ुशी ने चलें

बे तकल्लुफ़ शहे दो जहाँ चल दिये
सादगी से कहा जब किसी ने चलें

अगले पिछले सभी ख़ुल्द में चल दिये
रोज़े महशर कहा जब नबी ने चलें

उनके शाने करम की कशिश देखना
कासा लेकर कहा ख़ुसरवी ने चलें

अख़्तरे ख़स्ता भी ख़ुल्द में चल दिया
जब सदा दी उसे मुर्शिदी ने चलें

***

हुज़ूर ताजुश्शरीआ मनाक़िब के आईने में

दर शान अहसनुल उलमा मारेहरवी अलैहिर्रहमा

हक़ पसन्द व हक़ नवा व हक़ नुमां मिलता नहीं
मुस्तफ़ा हैदर हसन का आईना मिलता नहीं

ख़ूबसूरत ख़ूब सीरत वह अमीने मुज्तबा
अशरफ़ो अफ़ज़ल, नजीबे ज़ाहिरा मिलता नहीं

ख़ुश बयानो व ख़ुश नवा व ख़ुश अदा मिलता नहीं
जो मुजस्सम हुस्न था वह क्या हुआ मिलता नहीं

ख़ुश बयानो ख़ुश नवा व ख़ुश अदा मिलता नहीं
दिल नवाज़ी करने वाला दिल रुबा मिलता नहीं

पैकरे सिदक़ो सफ़ा वह शम्ए राहे मुस्तफ़ा
जो मुजस्सम दीन था वह क्या हुआ मिलता नहीं

मर्दे मैदाने रज़ा वह हैदरे दीने ख़ुदा
शेर सीरत शेर दिल हैदर नुमा मिलता नहीं

हाजतें किसको पुकारें किसकी जानिब रुख़ करें
हाजतें मुश्किल में हैं मुश्किल कुशा मिलता नहीं

वह हैं उनमें जो कहें अज्सामुना अरवाहुना
सूरते रूहे रवा है बरमला मिलता नहीं

डूब तो बहरे फ़ना में फिर बक़ा पाएगा तू
जो यह कहकर दे गया अपना पता मिलता नहीं

सुन्नियों की जान था वह सय्यदों की शान था
दुश्मनों के वास्ते पैकरे रज़ा मिलता नहीं

वह अमीने अहले सुन्नत राज़दारे मुरतज़ा
अशरफ़ो अफ़ज़ल नजीबे बा सफ़ा मिलता नहीं

शबले शेरे करबला वह दाफ़ेए करबो बला
वह हमारा ग़म जुदा ग़म आशना मिलता नहीं

एक शाख़े गुल ही क्या ग़मगीन है सारी फ़िज़ा
मुस्तफ़ा का अन्दलीबे ख़ुश नवा मिलता नहीं

याद रखना हमसे सुनकर मिदहते हैदर हसन
फिर कहोगे अख़्तर हैदर नुमा मिलता नहीं

***

गुस्ले काबा में शिरकत हुई आपकी

मुफ़्ती अशफ़ाक़ हुसैन क़ादरी, देहली

नाइबे मुस्तफ़ा शाह अख़तर रज़ा
ज़िल्ले ग़ौसुल वरा शाह अख़्तर रज़ा

जिससे मिलती है हमको बराबर ज़िया
हैं वह रौशन दिया शाह अख़्तर रज़ा

वारिसो आशनाए उलूमे रज़ा
रब ने तुमको किया शाह अख़्तर रज़ा

गुस्ले काबा में शिरकत हुई आपकी
वाह वाह मरहबा शाह अख़्तर रज़ा

देखते ही जिसे भागते हैं अदू
हैं वह शेरे रज़ा शाह अख़्तर रज़ा

शर्क़ में ग़र्ब में जिस तरफ़ देखिये
नाम है आपका शाह अख़्तर रज़ा

खिल उठी सबके दिल की कली खिल उठी
पहुँचे हैं जिस जगह शाह अख़्तर रज़ा

दरमियाने मशाइख़ हैं मिस्ले क़मर
मेरे अख़्तर रज़ा शाह अख़्तर रज़ा

ख़ाली कासा लिये क़ादरी है खड़ा
भीक कर दो अता शाह अख़्तर रज़ा

***

लाखों घर रौशन हुए

मौलाना मोहम्मद ईसा रज़वी क़ादरी नय्यर

परतवे अहमद रज़ा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा
जा नशीने मुस्तफ़ा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

चेहरए ज़ेबा से ज़ाहिर है विलायत का निशां
बिल यक़ीं हक़ की अता हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

जिसके घर से भीक लेते हैं गदा व बादशाह
हां वही गंजे अता हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

तलअते अक़दस पे गोया मुस्कुराता है शफ़क़
नूरी किरणों की ज़िया हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

जिसकी शम्ए ज़िन्दगी से लाखों घर रौशन हुए
वह चिराग़े रहनुमा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

जिसकी ख़ुश्बू से मुअत्तर अहले यूरप ऐशिया
एक ऐसे गुल कदा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

मेहफ़िले इल्मो अदब है आज उनसे पुर ज़िया
बज़्मे सुन्नत के दिया हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

आशिक़े ख़ैरुल वरा के इश्क़ की मीरास से
साहिबे इश्क़ो वफ़ा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

जलवए हामिद रज़ा व मुस्तफ़ा के रंग से
बा ख़ुदा नूरी ज़िया हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

बे निशानों को मिला इनसे सुराग़े ज़िन्दगी
हक़ की मन्ज़िल का पता हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

पासबाने मसलके अहमद रज़ा कहिये इन्हें
सुन्नियों के पेशवा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

कितने भटकों को मिली है मन्ज़िले राहे नजात
हादिये राहे हुदा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

गुलशने अहमद रज़ा है जिसके दम से लाला ज़ार
वह बहारे पुर फ़ज़ा हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

नय्यरे आजिज़ बयां क्या करे वस्फ़े जमील
ख़ुद ख़ुदा जाने कि क्या हैं हज़रते अख़्तर रज़ा

वह है ताजुश्शरीआ हमारा

वह है ताजुश्शरीआ हमारा, अहले सुन्नत का दुलारा
आला हज़रत का है प्यारा, मुफ़्तिये आज़म ने जिसको संवारा

मिस्र में उनकी अज़मत का डंका बजा
फ़ख़्रे अज़हर का एवार्ड उनको मिला,
अहले दानिश ने माना उन्हें पेशवा
ग़ौसे आज़म के सदक़े यह मन्सब मिला

उनके दामन में आ जाओ ग़ौसे आज़म के हो जाओ
ग़ौसो ख़्वाजा रज़ा का है प्यारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

नाम जिनका है अख़्तर रज़ा अज़हरी
देख कर उनको खिलती है दिल की कली
वह शरीअत की करते हैं बस पैरवी
हिन्द में चीफ़ जस्टिस की कुर्सी मिली

उनकी सूरत भी हंसी है उनकी सीरत भी हंसी है
जिसका फ़तवा शरीअत का धारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

जिसने काबे के अन्दर नमाज़ है पढ़ी
गुस्ले काबा की ख़िदमत भी अन्जाम दी
मेरे मुर्शिद की काबे से इज़्ज़त बढ़ी
हासिदों के दिलों में मची खलबली

उनकी अज़मत को पहचानो उनके मन्सब को भी जानो
अहले सुन्नत का है जो सहारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

गुलशने रज़वियत का जो रैहान है
उनपे कुरबान सुन्नी मुसलमान है
मदह ख़्वां अपने मुर्शिद का नोअ़मान है
मेरे मुर्शिद का हासिद परेशान है

उनका कहना दिल से मानो उनको अपना आक़ा जानो
आला हज़रत की आँखों का तारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

दस मुहर्रम के मशहूर वाक़िआत

मुफ़्ती मोहम्मद अनवार अहमद साहब क़ादरी, सरबराहे आला जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, इन्दौर

इस्लाम का पहला महीना मुहर्रम शरीफ़ है इस माह में जंगो जिदाल हराम है और इस माह में आशूरा का दिन बहुत बुज़ुर्ग है यानी 10 वीं मुहर्रम का दिन।

10 *मुहर्रम को यह वाक़िआत रूनुमा हुए।*

* हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह क़ुबूल हुई * हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आए * हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती से सलामती के साथ उतरे * हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम पैदा हुए * हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए **(फ़ैज़ुल क़दीर, शरह जामेअ़ सग़ीर स. 34/3)** * हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम पर आग गुलज़ार हुई * हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने मरज़ से शिफ़ा पाई * हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की बीनाई वापस आई * हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुएं से निकले * हज़रत सुलैमान अलैहिस सलाम को बादशाही मिली * हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी दिन जादूगरों पर ग़ालिब आए **(अजाएबुल मख़लूक़ात, स. 44)** * हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहीद हुए * क़ियामत इसी दिन आएगी * पहली बारिश आसमानों से नाज़िल हुई। **(गुनयतुत तालिबीन, जि. 2, स. 53)**

आशूरा के दिन नेक काम

ऐ ईमान वालो ! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम एक बुज़ुर्ग दिन है उसमें नेक कामों के बड़े अज्रो सवाब हैं, कुछ नेक कामों का ज़िक्र किया जाता है।

हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं :

(1) 10 मुहर्रम शरीफ़ के दिन किसी यतीम के सर पर महब्बत से हाथ फेरना बड़ा अज्रो सवाब है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरेगा तो अल्लाह उसके लिये यतीम के सर के हर बाल के बदले एक दर्जा जन्नत में बलन्द फ़रमाएगा। **(गुनयतुत तालिबीन, स. 53/2)**

ऐ ईमान वालो ! यतीम से महब्बत करना और उसको खिलाना पिलाना बड़ा सवाब है। यतीम की दुआ से बला व मुसीबत दूर हो जाती है और रोज़ी बढ़ा दी जाती है।

(2) हमारे प्यारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं :

यानी जो शख़्स आशूरा के दिन ग़ुस्ल करे तो किसी मरज़ में मुब्तला न होगा सिवाए मर्ज़े मौत के **(गुनयतुत तालिबीन, स. 53/2)**

(3) दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन गुनाहों

और ख़ताओं से तौबह करसरत से करना चाहिये कि तौबह उस दिन जल्दी क़ुबूल होती है । अल्लाह तआला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है, अपनी क़ौम को हुक्म दो कि वह दसवीं मुहर्रम को मेरी बारगाह में तौबह करें और जब दसवीं मुहर्रम का दिन हो तो मेरी तरफ़ रुजूअ करें

मैं उन सब की मग़फ़िरत फ़रमाउँगा। (फ़ैज़ुल क़दीर शरह जामेअ़ सग़ीर, जि. 3, स. 34)

(4) 10 मुहर्रम के दिन आँखों में सुर्मा डालना, आँखों की तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स आशूरा के दिन इस्मिद का सुर्मा लगाए : तो उसकी आँख कभी भी न दुखेगी। (बैहक़ी)

मौज़ूआतुल कबीर में हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं 10 मुहर्रम के दिन आँखों में सुर्मा लगाना ख़ुशी के इज़हार के लिये नहीं होना चाहिये क्योंकि 10 मुहर्रम शरीफ़ की ख़ुशी मनाना ख़ारजियों का फ़ेअ़ल है बल्कि हदीस शरीफ़ पर अमल करने के लिये सुर्मा डालना चाहिये

(5) 10 मुहर्रम के दिन अहलो अयाल के वास्ते घर में वसीअ़ पैमाने पर खाने का इन्तिज़ाम करना चाहिये ताकि अल्लाह तआला 10 मुहर्रम की बरकत से पूरे साल वुसअत व बरकत अता फ़रमाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले आज़म रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स आशूरा के दिन अपने अहलो अयाल पर नफ़क़ा में वुसअत करे यानी ख़ूब ज़्यादा ख़र्च करेगा तो अल्लाह तआला उस पर पूरे साल वुसअत फ़रमाएगा

यानी हज़रत सुफ़ियान सोरी ने फ़रमाया कि हमने इसका तजरबा किया तो ऐसा ही पाया (यानी रोज़ी में ख़ूब बरकत पाया) (बैहक़ी, मिश्कात, स. 170)

मेरे प्यारे पीर, पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि हमने पचास साल इसका तजरबा किया तो वुसअत व बरकत ही देखी (गुनयतुत तालिबीन, स. 54/2)

(6) ऐ ईमान वालो ! इसी तरह अल्लामा मनादी फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 2, स. 236 पर लिखते हैं कि हज़रत जाबिर सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हमने इसका तजरबा किया तो इसको सही पाया और हज़रत इब्ने अैना रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि हमने पचास साठ साल इसका तजरबा किया तो रोज़ी में वुसअत व बरकत ही पाई । लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि दस मुहर्रम शरीफ़ को ख़ूब ज़्यादा खाना पकाना चाहिये और खिलाना चाहिये।

पीरों के पीर हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन लोगों को पानी पिलाना बहुत बड़ा सवाब है। (अब अगर कोई शख़्स दूध पिलाए तो उसका सवाब कितना ज़्यादा होगा) हमारे प्यारे सरकार नबिये मुअज़्ज़म रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

यानी जो आशूरा के दिन पानी पिलाए तो गोया उसने थोड़ी देर के लिये अल्लाह तआला की ना फ़रमानी नहीं की (यानी उसने अल्लाह

तआला की ख़ुश्नोदी का काम किया)

दस मुहर्रम का रोज़ा रखना बड़ा सवाब है

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आशूरा के दिन ख़ुद भी रोज़ा रखा और अपने ग़ुलामों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

यानी आशूरा के दिन रोज़ा रखो, उस दिन अम्बियाए किराम रोज़ा रखते थे।

(जामेअ़ सग़ीर, जि. 4, स. 215)

इस हदीस शरीफ़ के तहत अल्लामा मनादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन यानी दस मुहर्रम शरीफ़ की फ़ज़ीलत बहुत बड़ी है और इसकी हुरमत व बुज़ुर्गी क़दीम ज़माने से चली आ रही है। इब्ने रजब ने फ़रमाया कि दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और दीगर अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने रोज़ा रखा है। **(फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 4, स. 215)**

रमज़ान के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले रहमतो बरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: रमज़ान शरीफ़ के बाद अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह तआला का महीना मुहर्रम शरीफ़ में आशूरा का रोज़ा है और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ यानी तहज्जुद की नमाज़ है। **(मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 171)**

ऐ ईमान वालो ! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम शरीफ़ बड़ा अज़ीम दिन है उस दिन का रोज़ा रमज़ान शरीफ़ के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा है, अल्लाह तआला हमें भी उस अज़ीम और बरकत व रहमत वाले दिन तमाम खेल, तमाशों की ग़लत रस्मों से बचाए और दस मुहर्रम शरीफ़ के बरकत वाले दिन अदब व एहतिराम के साथ रोज़ा रखने की और इबादतों में मशग़ूल रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

शबे आशूरा नफ़्ल नमाज़ें

सुल्तानुल बग़दाद फ़रदुल अफ़राद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि शबे आशूरा में कसरत से नमाज़ों और दुआओं का एहतिमाम करना चाहिये और फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इस रात में चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद पचास मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े तो रहमानो रहीम मौला तआला उस शख़्स के पचास बरस के पिछले और पचास साल के आइन्दा के गुनाहों को बख़्श देता है और उसके लिये जन्नत में एक हज़ार महल तय्यार करता है। **(मा सबत मिनस्सुन्नह, गुनयतुत तालिबीन, स. 54/2)**

और जो शख़्स आशूरा की रात में दो रकअत नमाज़ नफ़्ल क़ब्र की रोशनी के वास्ते पढ़े तो अल्लाह तआला उसकी क़ब्र को रोशनी से भर देगा और क़ियामत तक उसकी क़ब्र रोशन रहेगी। तरकीब यह है कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद तीन मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े। **(जवाहरे ग़ैबी)**

यौमे आशूरा की नफ़्ल नमाज़ें

हमारे प्यारे आक़ा महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स दस मुहर्रम शरीफ़ के

दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद कुल हुवल्लाहु अहद ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े तो अल्लाह तआला उसके पचास साल के गुनाह बख़्श देता है और उस के लये एक नूरानी मिम्बर बनाता है। (नुज़हतुल मजालिस, स. 146/1)

दस मुहर्रम के दिन जो काम सख़्त मना हैं

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब मौज़ूआतुल कबीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम के दिन काले कपड़े पहनना, सीना कूटना, बाल नोचना, नोहा करना, सर पीटना, छुरी, चाक़ू से बदन ज़ख़्मी करना जैसा कि राफ़ज़ी यानी शीओं का तरीक़ा है हराम और गुनाह है ऐसे मलऊन अफ़आल से परहेज़ करना लाज़िम व ज़रूरी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक हदीस रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

यानी वह शख़्स हम में से (यानी हमारी जमाअत में से) नहीं है जो अपने गालों पर मारे और अपने गिरेबान फाड़े और पुकारे जाहिलियत का पुकारना (यानी अपना सीना कूटते हुए चीख़े और चिल्लाए) (बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात, स. 150)

आशूरा की रात और दिन इबादत के लिये हैं

ऐ ईमान वालो! बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व बयानात से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि आशूरा की रात और आशूरा का दिन रहमत व बरकत और अज़मत व बुज़ुर्गी वाले हैं।

जब हज़रत इमामे पाक शहीद हो गए तो ख़ुशी में यज़ीदियों ने बाजे बजाए और जश्न मनाया मगर आज कल इमामे पाक की महब्बत का दावा करने वाले बाजा बजाते हैं। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत अता फ़रमाए और यज़ीदियों के तरीक़ों पर अमल करने से बचाए।

आशूरा की रात में लहवो लअ़ब खेल कूद और तमाम ख़ुराफ़ात से बचा जाए और कसरत से नमाज़ और तिलावते कुरआने करीम का एहतिमाम किया जाए और कलमा शरीफ़ व दुरूदे पाक का विर्द किया जाए।

आशूरा के दिन रोज़ा रखा जाए और ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात किया जाए और सबका सवाब हज़रत इमामे पाक और शोहदाए करबला की पुर नूर बारगाहों में नज़्र किया जाए यही सची अक़ीदतो महब्बत है हज़रत इमामे पाक से

आशिक़े मदीना पेशवाए अहले सुन्नत हुज़ूर आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुहर्रम शरीफ़ में ख़ुराफ़ात व बिदआत का रद अपनी किताब इआलतुल इफ़ादा फ़ी ताज़ियतिल हिन्द व बयानुश्शहादह में तहरीर फ़रमाया है जिसको देखना हो इस किताब का मुतालआ फ़रमाए।

***

52 वीं क़िस्त

चमन चमन की ख़ुश्बू

अज़ – हज़रत अल्लामा मौलाना डॉ. मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल अलीम साहेब रज़वी, इन्दौर

वह बादशाह मर चुका है

किसी आशिक़े रसूल का बयान है कि वह एक ज़ालिम बादशाह के ख़ौफ़ से जंगल चला गया, वहाँ जाकर उसने एक लाइन खींची और उसे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मज़ारे पाक तसव्वुर करके एक हज़ार बार आपकी ख़िदमत में सलातो सलाम पेश किया, फिर इस तरह दुआ मांगी, इलाही! साहिबे मज़ार हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को तेरी बारगाह में वसीला बनाकर अर्ज़ रकता हूँ, मुझे उस ज़ालिम बादशाह से नजात अता फ़रमा तो ग़ैब से आवाज़ आई सैयिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कितनी अच्छी शफ़ाअत फ़रमाने वाले हैं, अगरचेह मसाफ़त (दूरी) तो बहुत है, लेकिन वह अपनी शानो अज़मत और करामतो मन्ज़िलत के सबब बहुत क़रीब हैं, जाओ तुम्हारे दुश्मन को हमने ठिकाने लगा दिया, जब वह शहर वापस आया तो पता चला कि वह बादशाह मर चुका है। (नुज़हतुल मजालिस, स. 398/2)

इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तबारक व तआला से जो जाइज़ दुआ मांगी जाए उसमें आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को वसीला ज़रूर बनाया जाए, क्योंकि अल्लाह तआला अपने महबूबे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से अपने बन्दों की हर जाइज़ दुआ क़बूल फ़रमाता और उन्हें उनके मक़ासिद में कामयाबी अता फ़रमाता है, जैसे इस वाक़िए में देखें कि अल्लाह तआला ने हमारे आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के वसीले से की जाने वाली दुआ को क़बूल फ़रमा लिया और उस शख़्स को एक ज़ालिम बादशाह के ज़ुल्म से नजात अता फ़रा दी। इस तरह किसी मुसीबत के मौक़े पर अगर हम भी दुआ करें तो इन्शाअल्लाह सरकार के सदक़े में हमारी वह दुआ ज़रूर क़बूल होगी

इससे यह भी मालूम हुआ दुरूदो सलाम हर मुसीबत, हर दुख, हर परेशानी और हर सख़्त बीमारी का इलाज है, अगर किसी को कुछ दुख या मुसीबत पहुँचे, या कोई परेशानी या कोई बीमारी लाहिक़ हो तो उसे अपने आक़ा सल्लल्लाहु ताला अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़दस पर कम अज़ कम एक हज़ार बार दुरूदो सलाम का नज़राना पेश करना और

आपके वसीले से रब की बारगाहे करम में दुआ करना चाहिये अगर ऐसा करेगा तो इन्शाअल्लाह वह दुआ ज़रूर क़बूल होगी और उस मुसीबत व परेशानी से यक़ीनन छुटकारा मिल जाएगा।

ख़वातीनो हज़रात ! मुसीबतें और परेशानियाँ तो इन्सान को हमेशा आती रहती हैं, शायद ही कोई शख़्स ऐसा हो जो मुसीबतों का सामना न करता हो तो याद रखें ऐसे मौक़े पर इन्सान को इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि वह अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर दुरूदो सलाम का नज़राना भेजे और आपके वसीले से दुआ करे तो इन्शाअल्लाह तआला वह मुसीबत और परेशानी दूर हो जाएगी अल्लाह हम पर करम फ़रमाए आमीन।

मैं उन पर अमल करूँगा

सैयिदुना हज़रत असमई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक हज के ज़माने में अपने वज़ीरों और मुशीरों (मशवरह करने वालों) के साथ मक्कए मुकर्रमा में बड़ी शानो शौकत के साथ बैठा हुआ था कि अचानक सैयिदुना हज़रत अता बिन रबाह रज़ियल्लाहु ताला अन्हु तशरीफ़ लाए, ख़लीफ़ा उन्हें देखते ही उनके इस्तिक़बाल और उनकी ताज़ीम के लिये खड़ा हो गया और बड़े अदबो एहतिराम से अपने साथ तख़्त पर बिठाया और ख़ुद सामने बैठ गया, फिर आपसे अर्ज़ किया, अगर आपकी कोई हाजत हो तो पेश करें।

सैयिदुना हज़रत अता बिन रबाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़लीफ़ा को नसीहत करते हुए फ़रमाया, ऐ ख़लीफा ! मुहाजिरीनो अन्सार की औलाद के मुतअल्लिक़ अल्लाह से डरो क्योंकि तुम उन्हीं की वजह से इस मजलिस में बैठे हो। ऐ ख़लीफ़ा ! सरहद वालों के बार में अल्लाह से डरो, क्योंकि यह मुसलमानों के मज़बूत क़िलए हैं, उनके मुआमलात हल किया करो, इसलिये कि इन सबके बारे में सिर्फ़ तुम से ही सवाल होगा, जो साइल तुम्हारे दरवाज़े पर आएं उनसे ग़फ़लत मत बरतना, उनके मुआमले में अल्लाह से डरते रहना साइलीन पर अपने दरवाज़े बन्द मत करना यह नसीहतें सुनकर ख़लीफ़ा ने कहा आपने जो फ़रमाया है मैं उन पर ज़रूर अमल करूँगा। (उयूनुल हिकायात, स. 283/2)

इससे मालूम हुआ कि उलमाए किराम और बुज़ुर्गों की ताज़ीमो तकरीम करना चाहिये, आप तारीख़ पर निगाह करें तो आपको मालूम होगा कि पहले के दौर में अपने वक़्त के बादशाह और हाकिम भी उलमा का अदबो एहतिराम किया करते थे, उनसे नसीहतें हासिल करते और उन नसीहतों पर अमल कने को अपनी ज़िन्दगी की मेराज समझते थे, यहाँ देखें कि ख़लीफ़ए वक़्त ने हज़रत अता की

कैसी ताज़ीमो तकरीम की और फिर उनकी नसीहतों पर अमल करने का वादा भी किया कि आपने जो फ़रमाया है, मैं उन बातों पर अमल करूँगा।

जो लोग अल्लाह के इन महबूबों की इज़्ज़तो वक़अत करते थे वह ख़ुद दूसरों की निगाहों में क़ाबिले अज़मतो इज़्ज़त समझे जाते थे, जो लोग उनकी क़द्र करते थे वह दूसरों की निगाह में क़ाबिले क़द्र होते थे, इस वाक़िए पर ग़ौर करें कि वह मुसलमानों का हाकिमे वक़्त हैं, लेकिन एक आलिमे दीन की कैसी क़द्रो मन्ज़िलत कर रहे हैं कि उनके आने पर अदब के साथ खड़े हो गए, फिर उन्हें अपनी जगह बिठाकर ख़ुद अदब के साथ उनके सामने बैठ गए, और उन्होंने यह अमल कहीं और नहीं बल्कि हरमे कअ़बा किया और तन्हाई में नहीं बल्कि सबके सामने किया, ताकि सब लोग देखें और इससे सबक़ हासिल करें, लिहाज़ा आज भी मुसलमानों को अपने उलमा की इज़्ज़तो वक़अत करना चाहिये ताकि इन उलमा की क़द्रो मन्ज़िलत के सदक़े उन्हें भी इज़्ज़त मिले, उन्हें भी क़द्र की निगाह से देखा जाए और दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी संवर जाए

इससे यह भी मालूम हुआ कि किसी दीनी मुअज़्ज़म की ताज़ीमो तकरीम के लिये खड़ा होना यक़ीनन जाइज़ और बुज़ुर्गाने इस्लाम का तरीक़ा है, यहाँ इस बात पर भी ग़ौर करें कि हाकिमे वक़्त अपने वक़्त के एक बुज़ुर्ग आलिमे दीन की ताज़ीम के लिये खड़े हुए तो उन्होंने यह नहीं फ़रमाया कि ताज़ीम के लिये खड़ा नहीं होना चाहिये, अगर उलमा की ताज़ीम के लिये खड़ा होना जाइज़ नहीं होता तो आप ज़रूर मना फ़रमा देते, बस इससे सबक़ हासिल करें।

इससे यह भी मालूम हुआ कि उलमाए किराम और दीनी ज़िम्मेदार हज़रात को हमेशा हक़ बात कहना चाहिये, अगर सामने हाकिमे वक़्त हो तब भी हक़ और सची बात करना चाहिये, सैयिदुना हज़रत अता बिन रबाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दौर के हाकिम को नसीहत करके हमें यही पैग़ाम दिया कि हक़ और सच बात कहने में कभी भी हिचकिचाना नहीं चाहिये, क्योंकि जो लोग सही और हक़ बात करते हैं उन्हें अल्लाहो रसूल की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल होती है। अल्लाह तआला हम सबको हमेशा सच कहने, सच सुनने और सच पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

आपस में महब्बत करते हैं

सैयिदुना हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने सैयिदुना हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा मुझे आपसे अल्लाह के लिये महब्बत है, उन्हों ने फ़रमाया तो ख़ुश ख़बरी सुनें, मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से यह फ़रमाते हुए सुना

है कि मेरी उम्मत में से एक जमाअत के लिये अर्श के चारों तरफ़ कुर्सियाँ बिछाई जाएंगी और वह जमाअत उन पर बैठी होगी, उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते हों गे, वहाँ दूसरे लोगों पर ख़ौफ़ो घबराहट तारी होगी, लेकिन वह बिल्कुल बे ख़ौफ़ होंगे, लोग उनसे घबराएंगे, लेकिन उन्हें कुछ परेशानी नहीं होगी, लोग उनसे ख़ौफ़ खाएंगे, लेकिन वह किसी से ख़ौफ़ नहीं खाएंगे, वह औलिया अल्लाह हैं, जिनके बारे में ख़ुदा का इरशाद है तर्जमा, सुनते हो अल्लाह के वलियों को न कोई ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह ! वह कौन लोग हैं ? आपने फ़रमाया यह वह जमाअत है जो सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये आपस में महब्बत करते हैं।

(नुज़हतुल मजालिस, स. 239/1)

इससे मालूम हुआ कि मुसलमानों को आपस में एक दूसरे से सिर्फ़ इस लिये महब्बत करना चाहिये कि यह हमारा दीनी भाई है, जिस तरह हम अपने आक़ा के नाम लेवा हैं इसी तरह यह भी हमारे आक़ा का गुलाम और नाम लेवा हैं, तो अगर उनकी महब्बत अल्लाह की रज़ा और उसकी ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये होगी तो ऐसे लोगों के लिये, ऊपर बयान की हुई बशारत होगी यानी क़ियामत के दिन वह बिल्कुल बे ख़ौफ़ और मुकम्मल सुकून के साथ होंगे। अल्लाह तौफ़ीक़ दे।

हज़रात ! आज हम दुनिया में रहते हैं और अपनी ज़रूरत के लिये दुनिया वालों से दोस्ती करते और उनसे तअल्लुक़ात रखते हैं, मगर हमारी यह दोस्ती और हमारा यह तअल्लुक़ दुनियावी एतिबार से होता है, लेकिन अगर हमारा यही तअल्लुक़ और हमारी दोस्ती शरीअत के मुताबिक़ यानी अल्लाहो रसूल की रज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये हो जाए तो हमारी ज़िन्दगी में चार चांद लग जाएं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब किसी से दोस्ती करें या किसी से कोई रिश्ता क़ाइम करें तो पहले ग़ौर कर लें कि हमारी इस दोस्ती में अल्लाहो रसूल की रज़ा व ख़ुश्नूदी है या नहीं, अगर अल्लाह की रज़ा है तो दोस्ती करें और अगर उससे दोस्ती करने में उनकी रज़ा नहीं है तो दोस्ती न करें, बल्कि अगर ला इल्मी में उससे दोस्ती हो गई हो तो उससे रिश्ता ख़त्म कर दें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सबको तौफ़ीक़े ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन।

दिल को मुनव्वर रहता है

सैयिदुना इमामे जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अनार का इस्तिमाल दिल को मुनव्वर करता है। (सहाबिये रसूल) सैयिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि मैंने जब भी अनार को खोला तो मुझे जन्नत नज़र आई। हदीस शरीफ़ में है यानी, उसका हर

दाना दिल को मुनव्वर करता है और शैतान के वसवसे से चालीस दिन के लिये ढाल बन जाता है। दूसरी हदीस में है, जो शख़्स मुकम्मल एक अनार खा लेता है उसका दिल चालीस दिन तक मुनव्वर रहता है। (नुज़हतुल मजालिस स. 265/1)

इससे मालूम हुआ अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम, सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन और औलियाए किराम अलैहिमुर्रहमा के मानने वालों और उनकी अज़मतो शान का इक़रार करने वालों को अनार का इस्तेमाल ज़रूर करना चाहिये, हां जो लोग अंबिया और औलिया को अपनी तरह कहते या समझते हैं हमें उनसे बहस नहीं, क्योंकि वह लोग तो उनकी ज़ात को तस्लीम ही नहीं करते तो उनकी बात को क्यों कर मानेंगे, देखिये जब कोई इन्सान बीमार होता है तो उसी डॉक्टर से इलाज कराता है, जो उसे भाता है, जिसकी बात को क़ाबिले अमल समझता है और वह जिसे नहीं मानता उसके पास इलाज के लिये नहीं जाता, बल्कि दोस्तों के कहने के बावुजूद उसे ठुकरा देता है।

इससे यह भी मालूम हुआ कि आक़ाए रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने गुलामों पर बड़ा करम फ़रमाया और उन्हें अपने दिल रौशनो मुनव्वर करने के लिये बेहतरीन नुस्ख़ा अता फ़रमाया है, अब जो लोग चाहते हैं कि उनके दिल बड़ी आसानी के साथ रौशनो मुनव्वर हो जाएं तो अपने आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के बताए हुए नुस्ख़े को ज़रूर इस्तेमाल करना चाहिये ताकि उनका दिल रौशनो मुनव्वर हो जाए।

ख़वातीनो हज़रात! यूं तो अनार के हर दाने में बरकत है मगर बेहतर यह है कि उसे मुकम्मल खाया जाए क्योंकि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फ़रमाने अक़दस के मुताबिक़ मुकम्मल अनार खाने से चालीस दिन तक उसका दिल रौशनो मुनव्वर रहता है, लिहाज़ा इसी पर अमल करना चाहिये, ताकि रब्बे करीम का करम और उसकी रहमतें हमारी जानिब मुनतवज्जेह हों और हमारे दिल रोशनो मुनव्वर रहें। रब्बे करीम अपने महबूबे करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े हम सबको तौफ़ीक़े ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

क़ुर्ब का ज़रीआ है

सैयिदुना हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान सफ़ूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब नुज़हतुल मजालिस में एक हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स किसी बिदअती (यानी बद अक़ीदा व बद मज़हब और बद दीन) से एराज़ (दूरी इख़्तियार) करेगा अल्लाह तआला उसे फ़ज़ए

अकबर (बड़ी घबराहट यानी क़ियामत) के दिन अमनो अमान अता फ़रमाएगा और जो बद अक़ीदा को सलाम करेगा, ख़न्दा रुई से (अच्छी तरह हंसते हुए) मिलेगा और उसका ख़ैर मक़दम करेगा, जिससे उसे ख़ुशी हासिल हो तो अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर जो कुछ नाज़िल किया है उसने उसकी तौहीन और बे अदबी की और सैयिदुना हज़रत फ़ुज़ैल बिन इयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बद अक़ीदा को तकलीफ़ पहुँचाना अल्लाह तआला के क़ुर्ब का ज़रीआ है। **(नुज़हतुल मजालिस, स. 237/1)**

इससे मालूम हुआ कि किसी भी बद अक़ीदा, बद मज़ह और बद दीन से हर गिज़ नहीं मिलना चाहिये, इनसे न मिलने का इन्आम हमारे आक़ाए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम यह अता फ़रमा रहे हैं कि वह क़ियामत के दिन फ़ज़ए अकबर से मामून रहेगा, उसे उस घबराहट और परेशानी के आलम में कोई परेशानी या किसी क़िस्म की घबराहट नहीं होगी, जब कि इन लोगों से मिलने वाले, इनसे तअल्लुक़ात और इनसे सलाम करने वालों की सज़ा यह बयान हुई कि वह अल्लाह के रसूल पर नाज़िल होने वाली बात यानी अहकामे शरीअत की बे अदबी और तौहीन करने वाला कहलाएगा और जो अहकामे शरीअत की तौहीन करे उसका ठिकाना कहां होगा इसे बताने की ज़रूरत नहीं, सब जानते हैं। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस इरशादे पाक को ग़ौर से पढ़ें और अपने रब की तौफ़ीक़ से उस पर अमल करने की कोशिश करें।

फिर यह भी देखें कि सैयिदुना हज़रत फ़ुज़ैल बिन इयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो अज़ीमो जलील रहनुमाए दीनो मिल्लत, रहबरे शरीअतो तरीक़त और अपने ज़माने के मशहूर वलिये कामिल हैं, वह फ़रमा रहे हैं कि बद अक़ीदा को तकलीफ़ पहुँचाना अल्लाह तआला के क़ुर्ब का ज़रीआ है लिहाज़ा मैं उन सभी हज़रात से बड़े अदबो एहतिराम से अर्ज़ कर रहा हूँ, जो बद अक़ीदों और बद मज़हबों से मेल जोल रखते, या उनसे राहो रस्म रखने की वकालत करते हैं कि सरकार का फ़रमाने आलीशान पढ़ें और आक़ाई हज़रत फ़ुज़ैल बिन इयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की बात को समझकर पढ़ें और उस पर अमल करते हुए बद अक़ीदों और बद मज़हबों से रिश्ते नाते तोड़ें ताकि अल्लाह तआला और उसके म हबूबे आला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रहमतें हासिल हों। अल्लाह हमें तौफ़ीक़े ख़ैर अता फ़रमाए। आमीन।

***

رُوحَانِی عَمَلِیَات

रूहानी अमलियात

किसी भी नेक मक़सद के लिये दुआ (14 सज्दे)

कुरआने मजीद में 14 मक़ामात पर ऐसी आयात हैं जिनको पढ़ने और सुनने वाले पर सज्दा करना लाज़िम हो जाता है यह सज्दे की आयतें मुख़्तलिफ़ सिपारों में हैं और इनके बारे में अहादीस में मनक़ूल है कि इन्हें पढ़ने और सुनने वाला अगर सज्दह न करे तो वह गुनहगार कहलाता है

उलमाए दीन और फ़ुक़हाए किराम का इरशाद है कि जो शख़्स किसी भी नेक मक़सद के लिये यह 14 आयतें पढ़कर अल्लाह तआला के हुज़ूर अपने मक़सद हासिल करने के लिये दुआ करेगा तो वह ज़रूर बा मुराद होगा।

सज्दा नं. 1, पारा नं. 9
सूरह अल अअ़राफ़, आयत नं. 206

اِنَّ الَّذِیۡنَ عِنۡدَ رَبِّكَ لَا یَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوۡنَهٗ وَلَهٗ یَسۡجُدُوۡنَ ۝

तर्जमा : बेशक वह जो तेरे रब के पास हैं उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बोलते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

सज्दा नं. 2, पारा नं. 13
सूरह अर्रअद, आयत नं. 15

وَلِلّٰهِ یَسۡجُدُ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّ كَرۡهًا وَّ ظِلٰلُهُمۡ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ۝

तर्जमा : और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से ख़्वाह मजबूरी से और उनकी परछाइयाँ हर सुब्हो शाम।

सज्दा नं. 3, पारा नं. 14
सूरह अन्नहल, आयत नं. 50

یَخَافُوۡنَ رَبَّهُمۡ مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ وَ یَفۡعَلُوۡنَ مَا یُؤۡمَرُوۡنَ ۝

तर्जमा : अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो।

सज्दा नं. 4, पारा नं. 15
सूरह बनी इस्राईल, आयत नं. 109

وَیَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ یَبۡكُوۡنَ وَیَزِیۡدُهُمۡ خُشُوۡعًا ۝

तर्जमा : और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुए और यह कुरआन उनके दिल का झुकना बढ़ाते हैं।

सज्दा नं. 5, पारा नं. 16
सूरह मरयम, आयत नं. 58

اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ عَلَیۡهِمۡ مِّنَ النَّبِیّٖنَ مِنۡ ذُرِّیَّةِ اٰدَمَ وَ مِمَّنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ وَّ مِنۡ ذُرِّیَّةِ

اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْرَآءِیْلَ وَ مِمَّنْ هَدَیْنَا وَ اجْتَبَیْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِیًّا ۩

तर्जमा : यह हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से और उनमें जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद से और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते

सज्दा नं. 6, पारा नं.17

सूरह अल हज्ज, आयत नं.18

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ وَ كَثِیْرٌ حَقَّ عَلَیْهِ الْعَذَابُ وَ مَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ ۩

तर्जमा : क्या तुमने न देखा कि अल्लाह के लिये सज्दा करते हैं वह जो आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ और दरख़्त और चोपाए और बहुत आदमी और बहुत वह हैं जिन पर अज़ाब मुक़र्रर हो चुका और जिसे अल्लाह ज़लील करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहे करे।

सज्दा नं. 7, पारा नं.19

सूरह अल फ़ुरक़ान, आयत नं. 60

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩

तर्जमा : और जब उनसे कहा जाए रहमान को सज्दह करो, कहते हैं रहमान क्या है, क्या हम सज्दह कर लें जिसे तुम कहो और इस हुक्म ने उन्हें और बिदकना बढ़ाया।

सज्दा नं. पारा नं. 19

सूरह अन्नम्ल, आयत नं. 26

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ۩

तर्जमा : अल्लाह है कि उसके सिवा कोई सचा माबूद नहीं वह बड़े अर्श का मालिक।

सज्दा नं. 9, पारा नं. 21

सूरह अस्सज्दह, आयत नं. 15

اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۩

तर्जमा : हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दह में गिर जाते हैं और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलते हैं और तकब्बुर नहीं करते।

सज्दा नं. 10, पारा नं.24

सूरह सॉद, आयत नं. 24

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ قَلِیْلٌ مَّا هُمْ وَ ظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۩

तर्जमा : दाऊद ने फ़रमाया बेशक यह तुझ पर ज़्यादती करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अकसर साझे वाले एक दूसरे

पर ज़्यादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वह बहुत थोड़े हैं अब दाऊद समझा कि हमने यह उसकी जांच की थी तो अपने रब से मुआफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा और रुजूअ लाया।

सज्दा नं. 11, पारा नं.24

हा मीम अस्सज्दह, आयत नं. 38

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۝

तर्जमा : तो अगर यह तकब्बुर करें तो वह जो तुम्हारे रब के पास हैं रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और उकताते नहीं।

सज्दा नं. 12, पारा नं.27

सूरह अन्नज्म, आयत नं. 62

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝

तर्जमा : तो अल्लाह के लिये सज्दा और उसकी बन्दगी करो।

सज्दा नं. 13, पारा नं. 30

सूरह अल इनशिक़ाक़, आयत 21

وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۝

तर्जमा : और जब कुरआन पढ़ा जाए सज्दा नहीं करते।

सज्दा नं. 14, पारा नं.30

सूरह अल अलक़, आयत नं.19

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

तर्जमा : हां हां, उसकी न सुनो और सज्दह करो और हम से क़रीब हो जाओ।

R.N.I.No. 71995/96 M.P./I.D.C/792/ 2018-20
Monthly PAIGHAM-E-RASOOL (Dini, Ilmi, Islahi)
14/1, Bazariya, Badwali Chowki Main Road, INDORE-452 002 (M.P.-INDIA) Ph : 07312450399, Mob : 9300921994

हुज़ूर ताजुश्शरीआ नम्बर निकालने पर हम तहेदिल से मुबारकबाद पेश करते हैं

अल्हम्दु लिल्लाह ! इन्दौर शहर अहले सुन्नत का मरकज़ रहा है और इस शहर पर हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहम की खास तवज्जोह रही है। बल्कि हमने अपने अकाबेरीन से सुना है कि हज़रत इन्दौर को अपना वतने सानी कहते थे यह हम अहले इन्दौर के लिये फ़ख़्र की बात है।

*ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द व हुज़ूर ताजुश्शरीआ अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान के फ़ैज़ान से यहाँ इल्म का दरिया बहता है इसी दरिया का एक चश्मा **जामिआ फ़ातिमा** है जिसमें दर्से निज़ामी मुकम्मल छै साला कोर्स के साथ असरी (दुनियावी) तालीम, ख़वातीने इस्लाम की इस्लामी तर्बियत का माक़ूल इंतिज़ाम है। जामिआ फ़ातिमा की इस कामियाबी के लिये शहर इन्दौर की वह अवाम है जिसने वक़्तन फ़ वक़्तन बिल ख़ुसूस माहे रमज़ान व ईदे क़ुरबाँ पर इस इदारे को अपना तआवुन दिया है जो क़ाबिले मुबारकबाद हैं।*

मदरसे में 120 बच्चियों के रहने, खाने, पीने का मुकम्मल इंतिज़ाम है और यह सब आप जैसे ख़ैर ख़्वाह हज़रात के तआवुन से हो रहा है जिसके लिये हम आपके शुक्र गुज़ार हैं।

फ़िल वक़्त मदरसा ईदगाह बिल्डिंग, सदर बाज़ार मेनरोड पर अपनी ख़िदमात अंजाम दे रहा है अहमद नगर खजराना में तामीरी काम जारी है। इंशाअल्लाह अनक़रीब मदरसा वहाँ मुंतक़िल हो जाएगा। हम उम्मीद करते हैं कि यह तआवुन आप हज़रात बराबर जारी रखें।

AL-JAMIATUL FATIMA الجامعة الفاطمة

कैसे करें मदद	जामिआ फातिमा	मदद के जरिए
मचहना या सालाना मेम्बर बनकर		मरहुमीन के इसाले सवाब के लिए
किसी एक बच्ची का मुकम्मल खर्च देकर		कारोबार में बरकत की नियत से
एक मोअल्लिमा की तनख्वाह देकर	दर्सगाह	कारोबार की हर माह जकात से
बच्चियों के लिए खाने या नाश्ते का सामान देकर		माल की जकात सदकात, फित्रा अतियात से
लाइब्रेरी में दीनी किताब दिलाकर		मेहमाने रसूल की खिदमत के लिए

अपील- मदरसे के तामीरी काम में हिस्सा लेकर सवाबे दारेन हासिल करें। आमीन

39, ईदगाह बिल्डिंग, सदर बाजार, इन्दौर (म.प्र.)
मोबाइल नं. 9826663335, 7828063335, 9826748779

Bank - Bank of India (Malharganj)
Title - Jamia Fatima
A/c No. 880610210000013

RAZVI COMPUTER, INDORE # 9827014799, 9827083720